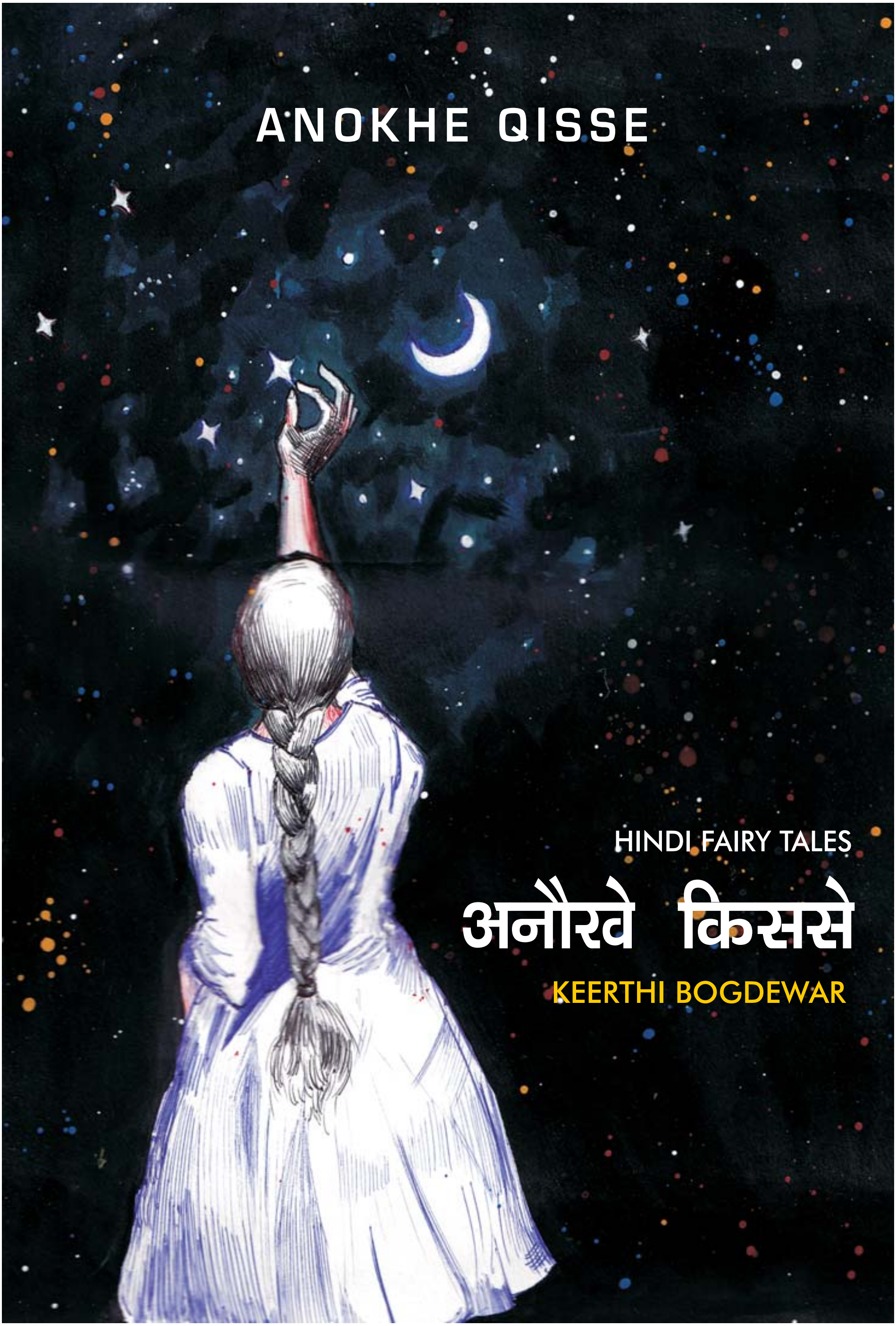

ANOKHE QISSE

HINDI FAIRY TALES

अनौखे किससे

KEERTHI BOGDEWAR

ANOKHE QISSE

Keerthi Bogdewar
ALUMNA
TSWRDC, Nizamabad

School of
Emerging Writers

We sincerely thank

Sri.D. RONALD ROSE

Secretary, TSWREIS

Book Title : **Anokhe Qisse**
Author : Keerthi
Editor : Dr. K. Sandhya Deepthi
ISBN : 9789395944144
First Edition : 2022

Copyright© **Keerthi Bogdewar**
The authors are responsible for the contents of their papers compiled in the publication. The publishers or the printers or the editors are not responsible to any consequences of copyright infringement for the works presented in this volume. In spite of best efforts, there could be some errors in this publication and the reaches are requested to communicate any errors to the editors to avoid any such errors in future.

Paramount Publishing House
Plot No. A-531, H.No. 4-32-521, Phase-1, Allwyn Colony, Kukatpally, Hyderbad.
Ph. 7799000082
Sales Offices:
Hyderabad
Plot No. A-531, H.No. 4-32-521, Phase-1, Allwyn Colony, Kukatpally, Hyderbad.
Ph. 7799000082
New Delhi
C/14, SDIDC Work Centre Jhilmil Colony, New Delhi-100095,
paramountpublishers@gmail.com I alluriasr2005@yahoo.com
Published by Krishna Prasad Alluri for Paramount Publishing House and printed by him at Sai Thirumala Printers.

The 100 A.M. Project
SCHOOL OF
EMERGING WRITERS
TSWRDC, Nizamabad
www.schoolofemergingwriters.com
schoolofemergingwriters@gmail.com/ 98495 47239

Author's Note

AA

Keerthi

CHIEF EDITOR:
Dr. K. Sandhya Deepthi

EDITOR:
Mehroz Sultana

ILLUSTRATIONS BY:
Lingampally Venkatesh

Editor's Acknowledgement

Offering my heartfelt thanks to Mehroz Sultana, MPC I year, TSWRDC, Nizamabad for offering her unceasing support in adeptly editing this work. My sincere thanks to Emmadishetty Gowthami, Graphic Designer, Nizamabad for patiently engaging in type setting and designing process and Alluri Krishna Prasad Garu, Paramount Publishers, Hyderabad for offering timely help with the allotment of ISBN's and also bringing out the printed version of the book. I also thank Lingampally Venkatesh, JNTU College of Fine Arts, for helping the poet improvise her ideas into wonderful sketches in the book. I specially thank Ms. K. Lavanya, Principal, TSWRDC, Nizamabad for her unflinching encouragement towards all the literary activities we undertake to help students discover their creative potential. I thank all my colleagues for extending their support towards all the reading and writing programmes at the college.

I thank the following esteemed officials at the Head Office, TSWREIS, Hyderabad for their warm support, effective feedback and direction at every phase of the book publishing process and making the journey smooth for our young and upcoming authors — Chandrakanth Reddy Sir for patiently listening to us and giving their valuable time and inputs which helped us immensely to kickstart the writing activities, Dr. A. Bhanuprasad, for proficiently guiding us in overcoming lags and to speed up the publishing process, Muhammed Hussain Garu, for taking interest and introducing me to one of the best artists, Lingaraju Sir. My cordial thanks to Mr. Varun Sharma for showing earnest enthusiasm towards understanding the intellectual and creative contexts of student community and Dr. Pavani Ayinampudi for continually sharing and reflecting through her own poetic journeys; reinforcing a worthwhile literary engagement. I owe my sincere thanks to Government of Telangana for supporting literary projects as these which remain a cornerstone of scholarly repertoire and exchange.

My deep gratitude goes to Sri.D. Ronald Rose, Secretary, TSWREIS, for his steadfast encouragement towards literary projects as we look forward to create an extensive creative expression among students — also for the the smooth execution of 100 A.M. project and supporting School of Emerging Writers at TSWRDC, Nizamabad.

Dr. K. Sandhya Deepthi
Coordinator,
School of Emerging Writers
TSWRDC, Nizamabad

S.No.	Title	Page. No.
1.	पहली बात	1-2
2.	सिंड्रेल्ला	3-9
3.	डान्सिंग प्रिन्सेस	10-15
4.	स्लीपिंग ब्यूटी	16-22
5.	मेरी प्यारी राजकुमारी	23-28
6.	शीशे का राज्य	29-35
7.	रहस्यमयी बगीचा	36-38
8.	रपुंजल	39-43
9.	दिव्य राजकुमारी	44-48
10.	मछली राजकुमार	49-52
11.	राजकुमारी डायना	53-59
12.	राजकुमारी क्रिस्टल	60-65
13.	अटूट बंधन	66-70
14.	ब्यटी और बीस्ट	71-76
15.	एहसानमंद राजकुमार	78-83
16.	खोई हुई परी	84-88
17.	नीले पर्वतों की राजकुमारी	89-94
18.	सूर्य की बहन	95-99
19.	चार लडकियां और राजा	100-104
20.	हंसिनी की झील	105-108
21.	शबक का बगीचा	109-111

पहली बात

इस पुस्तक को पढनेवाले सभी लोगों को मैं बताना चाहुंगी की, हमें हर किताब से कुछ ना कुछ संदेश (सीख) मिलती हैं। उसे हम हमारे जिंदगी में भी कभी कभी इस्तमाल करते हैं। इससे हमारी जिंदगी खुबसूरत होती है। इसी तरह इस किताब मे भी मैकुछ ऐसी बातें बताना चाहुँगी की, ये बाते जो हर किसीकी जिंदगी में होती रहती है। इस किताब की कहानियाँ हर किसीकी जिंदगी के हिस्से होते है। जिन्हे हम कभी-कभी महसूस करते है। कुछ लोग तो उन्ही दुःखों में अपनी जिंदगी बिताते रहते हैं। दुःखो के पहाड सभी पर गिरते हैं। पर कुछ लोग उस पहाड के नीचे दब जानेके बजाए उन दुःखों से बाहर आने का प्रयास करते हैं। क्योंकि हमारी जिंदगी अपने हाथों में बनाए गए लकीरों पर निर्भर नही हैं। बल्की हमारी जिंदगी हमारे विचार और हमारे करमा पर निर्भर हैं। इसिलिए

हाथों की लकीरों को देखकर सहम मत जाओ,
गहरे विश्वास के साथ खुले आसमान में उड जाओ।

पहली बात हमें अपने आप पर अटूट विश्वास की जरुरत को दर्शाना हैं। इससे हमारा धय्रय बना रहता हैं। अगर हम उन दुःखों के पहाड के नीचे दब गए तो हमारी जिंदगी का कोई मोल नही हैं। इसिलिए हमें उन में से बाहर निकलकर हमें अपनी जिंदगीकी नयी शुरुवात करनी चाहिए। इससे हमारी जिंदगी सफल होती हैं।

हमें इस किताब में ऐसे ही कुछ किस्से देखने को मिलेंगे जैसे कि जिंदगी में तुफान आये और फिर से कैसे उन तुफानों से ही नई

फसल और नये फूलों की बहारें उगे हैं।

हमें हमारे इश्वर पर विश्वास को तोडना नही चाहिए। क्यों कि यही जो विश्वास हमें कभी भी जिंदा रखता हैं। कुछ लोग भगवान पर विश्वास नही रखते हैं। वे लोग अपनी मेहनत और लगन पर विश्वास करते हैं। इस बात को हम ईनकार नही कर सकते क्यों कि जिसकी जैसा विश्वास। पर इस किताब में कुछ कहानियों में दिखाया गया हैं कि अगर हम किसी का भी बुरा नाही चाहेंगे तो भगनान हमारे साथ हमेशा अच्छा ही करता हैं।

प्रस्तुत अनोखे किस्से में हमें कुछ ऐसी कहानियाँ देखने को मिलेंगी जैसे कि भगवान पर विश्वास और अच्छे विचार और कुछ फैरी की याने परियों की कहानियाँ मौजूद हैं। जो बच्चे और बडों को भी अच्छे लगते है।

मैं आपसे कहना चाहुंगी कि मुझे हमेशा परियों की कहानियाँ सुनना अच्छा लगता हैं। मैं अपने बचपन में अपनी दादी से सुना करती थी। हम सब लोग हमारे बडे बुजुर्गों से कहानियाँ सुनते आये हैं। चांद के नीचे अपने माँ या बडों के गोदी में सोकर अनेक कहानियाँ सुनना हर किसीको अच्छा लगता हैं। मजेदार की बात यह हैं कि मुझे तो अब भी सुनने को अच्छा लगता हैं। हमें इन्ही बचपन की कहानियों से अच्छे मुल्य और अच्छी बातें सीखने को मिलती हैं। जैसे कि प्यार की सच्ची दास्ताने, बुराई का अंत, इमानदारी और सच्चाई की किमत, ईश्वर पर विश्वास ये सभी बातें सिखने को मिलती हैं।

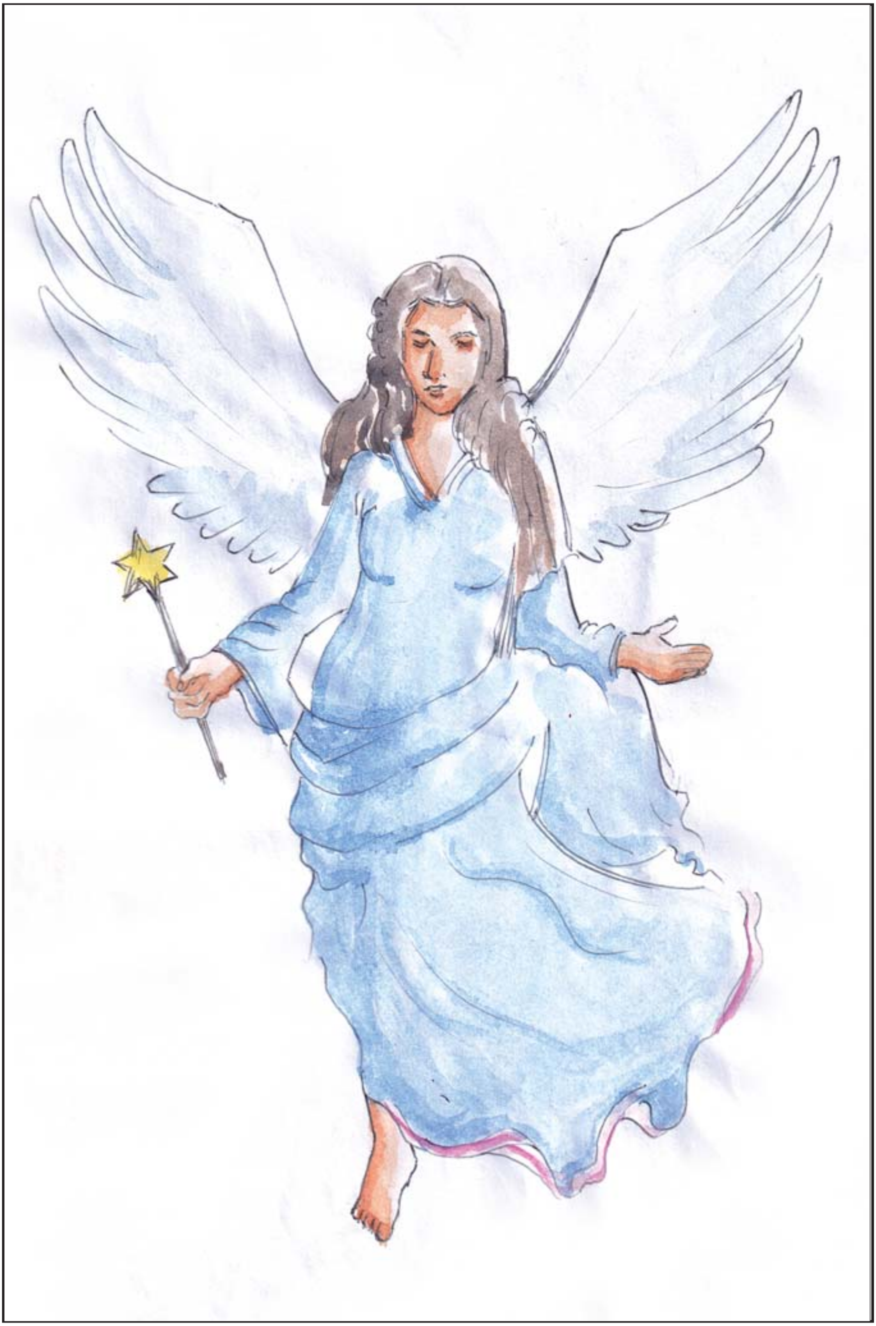

सिंड्रेल्ला

यह कहानी शुरु होती हैएक छोटे से गाँव से, उस गाँव में ''सिंड्रेल्ला'' नाम की एक लडकी रहती थी। वह देखने में बहुत ही खुबसूरत थी और बहुत विनम्र, और दयालू भी थी। उसकी पहली माँ के गुजर जानेसे उसके पिताने दूसरी शादी की और उस लडकी की दूसरी माँ के आनेके बाद उसकी जिंदगी बुहत ही कठिन हो गयी थी। उसकी दूसरी माँ उसे बिलकुल भी पसंद नही करती थी। हमेशा बहुत काम कराती थी और ठीक से खाना भी नही देती थी। उसके पिता दूर शहर में रहते थे। सिंड्रेल्ला की माँ बचपन में ही गुजर गई थी, उसकी दो सौतेली बहनें भी थी। वो दिखने में सिंड्रेल्ला जितनी खुबसूरत नही थी। इसिलिए वे सिंड्रेल्ला को बिल्कुल पसंद नही करते थे। सिंड्रेल्ला अपने ही घर में नौकरानी की तरह रहती थी। और फटे हुई कपडे पहनकर बहुत काम करती थी। सिंड्रेल्ला बहुत दयालु थी। उसकी चूहों के साथ दोस्ती थी। उसे घर में कोई भी पसंद नही करता और चूहे उसके सच्चे मित्र हुआ करते थे। एक दिन गाँव में डिंडोरा पिटा गया कि, इस गाँव के राज्य के राजकुमार अपने स्वयंवर में सारी गाँवकी कुवारी लडकियों को आमंत्रित किया है। वह बात सुनते ही सिंड्रेल्ला की सौतेली माँ और बहने तयारियों मे लग गए। उनकी माँ ने उनके लिए नये- नये कपडे सिलाए और नये जूते, दिलाये उनकी खुबसूरती को बढाने के लिए हर तरिके से तैय्यारीयाँ करने लगी। जब ये बात सिंड्रेल्ला को पता चली तो वो अपने सौतेली माँ से पूछने लगी की क्या वो भी उस स्वयंवर के लिए आ सकती है। पर उन्होंने उसे साफ मना किया और वो अपने लिए जो फ्रॉक

सीलाया था उन्होंने उसे खराब कर दिया। वे उसका मजाक उडाने लगे, कि तुम्हारे जैसे लोगों का वहाँ क्या काम। वो बहुत पुछने के बाद भी उन लोगों ने उसे मना किया, वो बहुत रोने लगी। वो तीनों स्वयंवर के लिए निकल गए। सिंड्रेल्ला को जाते जाते घर का सारा काम करने के लिए कहकर चले गए, वो बहुत रोने लगी ओर सोंचने लगी की अगर उसकी माँ होती तो उसके साथ ऐसा कभी नही होता। तब आसमान से एक परी उसके सामने प्रकट हुई। उस परी को देखके सिंड्रेल्ला हैरान हो गई। तब वो परी कहने लगी की वो उसकी माँ की मित्र थी। इसिलिए वो सिंड्रेल्ला की मदत करने आई है। सिंड्रेल्ला ने उस परी को सारी बातें बताई। परी ने तुरंत ही एक कद्दू से एक सुंदर रथ बनाया और चिपकलियोंसे घोडे बनाए और उसके

दोस्त चूहेसे वो रथ सारथी को बनाया। सिंड्रेल्ला के उपर एक सुंदर फ्रॉक आ गया और पांवमें कांच के सुंदर जूते आ गए। परी ने अपनी जादूई छडीसे सिंड्रेल्ला को बहुत सुंदर बनाया। तब सिंड्रेल्ला रथ में बैठकर स्वयंवर के लिए निकल गई। पर जाते जाते परी ने कुछ बातें भी बताई वो : बारहा बजते ही सिंड्रेल्ला को वापिस आना चाहिए। ऐसा नही हुआ तो जो भी परीने अपने जादूसे बनाए है, वो फिर से अपने रुपमें आ जायेंगे। सिंड्रेल्ला इस बात को मान गई और अपने परी से कहा की : वो इस बात को याद रखेगी। सिंड्रेल्ला का रथ राजभवन के सामने रुका। सारे सैनिक सिंड्रेल्ला की खुबसूरती को देखकर दंग रह गए। उन्हे लगा कि जैसे की कोई राजकुमारी आ रही है। सिंड्रेल्ला स्वयंवर में आ गई उसकी सौतेली माँ और बहने भी उसे पहचान नही पाये, वो लोग भी सब लोगों की तरहा उसे देखते रह गए। जब राजकुमार की नजर सिंड्रेल्ला पर पडी तो वो सिंड्रेल्ला की खुबसूरती पर मोहित हो गय और राजकुमार सिंड्रेल्ला के पास आकर अपने साथ नृत्य करने के लिए पूछने लगे।

सिंड्रेल्ला ने हामी भरी और दोनों मिलके नृत्य करने लगे। सारे राजदरबार में बहुत देरतक नृत्य करते रहे। सिंड्रेल्ला राजकुमार की आँखो में खो गई। राजकुमार भी सिंड्रेल्ला की खुबसूरती पर मोहित हो गये और उन्हे भी समय का पता नही चला, तब सिंड्रेल्ला को परी की बात याद आई, तो वो राजकुमार को छोडकर वहाँसे भागने लगी और तेजी से रथ में बैठकर चली गई। ठीक बारहा बजते ही रथ घरके सामने आकर रुक गया तो सब कुछ पहले की तरहा हो गया। सिंड्रेल्ला के भी अपने पुराने कपडे आ गये। उसने हर एक काम सब जल्दी जल्दी से कर दीये, पर राजकुमार को सिंड्रेल्ला का एक पैर का जूता मिला उसे राजकुमार ने अपने पास संभालकर रखा।

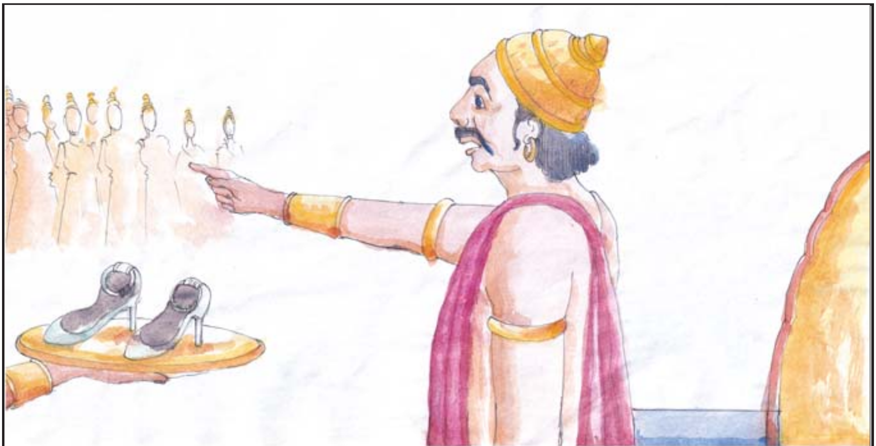

सुबह राजकुमार अपने सैनिकोंसे उस जूते का आसली हकदार को ढूंढने के लिए आदेश दिया। सैनिक सारे घरों में जाकर सारी कुवारी लडकियों को उस जूतेको पहनकर देखनेको कहा। पर किसीकेभी पैर मे जूता अच्छेसे नही आया।

सैनिकों ने बहुत ढुंढा, आखरी में सिंड्रेल्ला के घर आये तो सिंड्रेल्ला को उसकी सौतेली माँ ने एक कमरेमे बंद करवाया और वो कहने लगी की वो जूता तुम्हारा नही हो सकता। इसलिए तुम्हे बाहर निकलने का और जूते को पहनकर देखने की इजाजत नही है। सिंड्रेल्ला बहुत रोई और एक बार वो भी उस जूतेको पहनना चाहती थी। पर उसकी किसी वो नही सुना और उसे कमरेमें बंद किया गया। जब सैनिक आये तो उसकी बहने जूतेको पहननेके लिए बहुत कोशिश करने लगी। एक बहनको वो जूता बहुत ढीली पड गई और दूसरी बहन को वो जुता आया वो छोटा हुआ। फिर भी वो अपने पैरोंको जबरदस्ती से उस जूते में डालनेकी कोशिश की। पर सैनिकोने उन्हे साफ-साफ मना कर दिया। सैनिकों के पुछने पर

उसकी माँ ने बताया की इस घरमें सिर्फ उसकी दो ही बेटियाँ है। और कोई भी नही है। कहकर झूठ कहा। सैनिक निकलने लगे, तभी सिंड्रेल्ला के दोस्त चूहोंने उस कमरेका ताला लाकर उसे खोला और सिंड्रेल्ला बाहर आकर सैनिकों से इजाजत लेकर जूते को पहनली, तो वो जूता सिंड्रेल्ला को अच्छेसे आया। सच बात तो यह हैकि सिंड्रेल्ला ही उस जूते की असली हकदार है। जब राजकुमार को ये बात पता चली तो वो सिंड्रेल्ला को आदरसहित भवन लानेके लिए आदेश दिये। राजकुमार जब सिंड्रेल्ला को देखे तो वो पहचान लिय। सिंड्रेल्ला और राजकुमार की शादी तय हो गई। पर सिंड्रेल्ला दयालू स्वभाव होने के कारण उसने अपनी सौतेली माँ और बहनों को माफ कर दिया।

संदेश :-

भगवान अच्छे लोगों के साथ हमेशा अच्छाही करते हैं। सिंड्रेल्ला को अपने दयालू स्वभाव और सहनशिलता के लिए आखिरमें अच्छा फल मिला।

दुःखों का अंत कभी ना कभी होना ही है।

डान्सिंग प्रिन्सेस

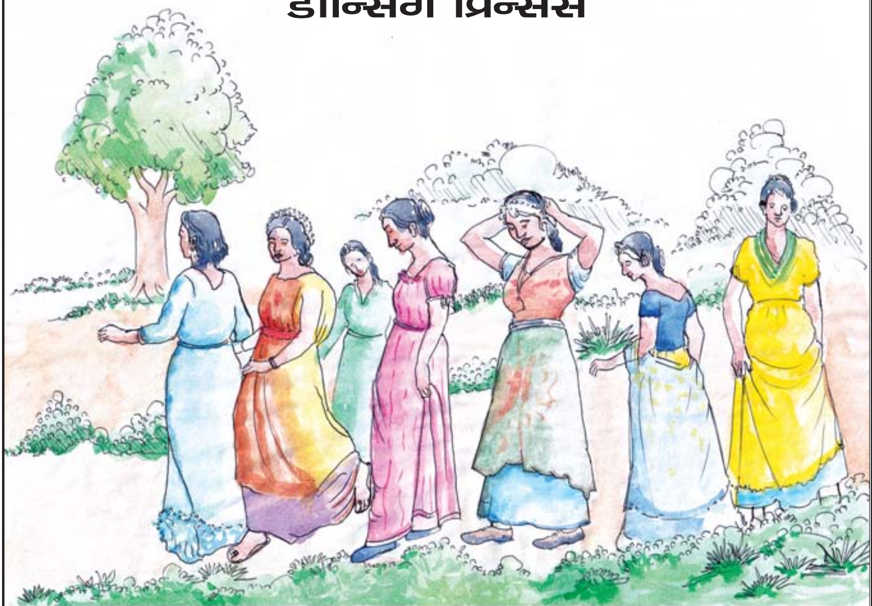

मिथिलानगर राज्य के राजा चंद्रशेखर के सात बेटियाँ थी। राज्य सारी सुविधाओंसे अच्छा था। राजा चंद्रशेखर भी अपनी सात बेटियों से बहुत प्यार करता था। पर उस राज्यमें एक बात किसीको समझमें नही आ रही थी। वो ये थी कि सात युवरानिओं के जूते रातों रात फटे हुए खराब हो जा रहे थे। रातमें ही ये सब कुछ होना सबको हैरान कर रहा था। इसपर युवरानिओंका कोई जवाब नही था। तो उन्हें भी समझमें नही आ रहा था। राजा इस बात के पता लगाना चाहते थे। इसिलिए वो राज्य में ऐलान करवाए के अगर कोई इस बात का पता लगा सके तो राजा उन्हें अपनी सातो बेटियों में से किसी एक के साथ उसकी शादी करेंगे। और कुछ संपत्ती भी उसके नाम करनेका वादा किया। इस बातको सुनतेही सारे राज्यके लोग उत्साहसे इस बात का पता लगाने चले आये, पर कोई भी पता लगा

नही पाया। हर कोई आकर वैसेही खाली हात चला जाता था। राजा बहुत निराश होने लगे। राजा की उम्मीद थोडी थोडीसी टूटने लगी थी। तब एक मामूलीसा आदमी इस बातका पता लगाना चाहता था। बहुत ही विद्वान बडे-बडे लोग पता लगा नही पाये। वह मामूलीसा आदमी मिथिलानगरके राज्य के तरफ आ रहा था। रास्ते में एक बूढी औरत उसे मिली और उससे कहने लगी की उसे बहुत प्यास लगी है। इसिलिए वह उससे पानी पूछ रही थी। उस मामूली आदमी का नाम रामू था। रामूने उसके पास जो भी बचा पानी था उसने उस बूढी औरत को पिलाया और वह प्यासा रह गया। वो बुढी औरत पानी पीके अपनी प्यास बुझाली और रामूको सच्चे मनसे दुवाएँ दी। और उसने एक बात कही जब रामूने बताया था कि उसे मिथिलानगर को जाना हैं। तो वो बूढी औरत कहने लगी की, कोई बी कुछ भी खाने, पीनेको दे तो कुछ भी नही लेना। रामूने इस बात को सुनकर नजरअंदाजकरके चला गया. जब रामू मिथिलानगर पहुँचा तो वह उस राज्यके राजासे मिला शर्त के मुताबिक सिर्फ तीन दिन के अंदर रामू को इस बात का पता लगाना चाहिए। अगर वो इस बात का पता लगा नही पाया तो, उसे जिंदगी भर का कारागार की शिक्षा सुनादी जायेगी। जो भी इस बात का पता लगाने आये वो सब खाली हाथ कारागार में चल गये। रामू को ये बात सुनकर थोडा डर लगा था। पर रामू बहुत ही इमानदार और अच्छा लडका था। तो पहली रातसे ही अपना काम शुरु कर दिया और सात युवा रानीयों के कमरे के पास पहरा देता रहा, जब सबसे बडी वाली युवारानी आकर रामू के शरबत पिलाई और रामूने प्यास की वजहसे बिना कुछ सोचे समझे उस शरबत को पि लिया। थोडे ही देर में रामू सो

गया और गहरी नींद में चला गया। सुबह उठते ही फिर से युव रानियों को जूते घिस गए। राजाने रामू को जूते कि वजहा को पता लगाने को कहा। अगर दो दिन में पता लगा नही पाये तो, जिंदगी भर कारागार में रहना पडेगा। रामू दूसरी रात और भी ध्यान से निगरानी कर रहा था। तब सबसे छोटी रानीने रामू के लिए खीर लेकर आयी और रामूने खीर को खा लिया, रानी चली गई। रामूने बहुत देर तक पहरा दिया पर उसे कुछभी गडबड नही लगा। और वैसे ही रामू सो गया। सुबह हो गई रामू ना चाहते हुए भी रात को सो जा रहा था। ये बात उसे समझ में नही आयी तब उसे उस बूढी औरत की बात याद आई। उसने सोच लिया की तिसरी रात वोह इस बात की जड तक पहुंचकर ही रहेगा। सब लोग जानना चाहते थे कि आखिर ये बात क्या है। राजा भी कुछ असमंजस में थे और वो भी जानना चाहते थे। तीसरी रात .... आखरी रात रामू फिरसे पहरा देना शुरु कर दिया, तब तीसरी रानी खाना लेकर आयी, तब रामूने उस खानेको लेलीया और रानी से कहा की उसे जब भुक लगेगी तो तब खालेगा। रानी चली गई रामू कुछ देरके बाद युवरानियों की

कक्ष में जाकर देखा तो वह सारी युवरानीयाँ सजधजके अपने अपने जूते पहनकर कमरे के पिछे एक गुप्त द्वार था। उस में से युवरानियाँ जा रही थी। रामू भी उनके पिछे-पिछे गया और वो लोग एक सुंदर जहाजपर पहुंचे वह एक नदी थी। नदीमेंसे एक बडे नाव में सात युवराजथे। सात युवराजओर सात युवरानियाँ मिलकर जोडी-जोडी से बहुत देरतक नृत्य किया। रामूने ये सब देखकर सारी बात समझ गया और वह फिर से गुप्त द्वारसे चला गया ताकी वो युवरानीयाँ उसे कही देख ना ले युवरानीयों का नाचना, खाना, पिना बहुत देर तक चलता रहा। खूब नृत्य करनेके बाद सारी युवरानियाँ लौट आयी और वो सात युवराजभी चले गये। सुबह हुई सब लोग यही सोच रहे थे कि रामू कुछ भी पता लगा नही पायेगा। इसिलिए उसे जिंदगी भर कारागार की शिक्षा सुनाई जाएगी।

जब दरबार लगी तो रामू ने राजा से कहा की वो इस बात का पता लगा चुका है. राजा हैरान हुए, वो रामू से पूछने लगे की क्या हैवो बात, तब रामू ने कलकी सारी घटना जो भी देखा वो सारी राजा से कहा। राजा ने रामू से सारी बात को सच साबित करने को कहा। इसिलिए रामूने राजा से ये बात सबके सामने नही बताई, फिर से उस रात को जब राजा रामू के कहने पर युवरानियों का पिछा करके उस गुप्त द्वारकी तरफ जाकर देखा तो उस रात भी सात युवराजफिरसे सात युवरानियों के साथ नाच रहे थे। राजा को भी बात समझ में आ गई। युवरानियों ने झूठ कहा की उनके जूते अपने आप घस गये कह रहे थे। पर सच बात तो ये थी। अगले दिन राजाने दरबार में इस बात को सबके सामने रखी तो सब लोग इस बात से हैरान हुए। राजा ने इस बात के लिए युवरानियों को सजा सुनाए। वो राजा ने कहेकी आजसे युवरानियों का कोई भी मनमानी नही चलेगा, जो राजा चाहेंगे वही करेंगे। युवरानियोंका हर निर्णय राजा ही लेंगे, उन्हे आबड्डुपने हर कार्य के लिए अनुमति की जरुरत पडेगी। अगर राजचंद्रशेखर अनुमति दे तो वह काम होगा। राजा ने रामू की इमानदारी चतुराई को देखकर उसे अपनी किसी बेटी को देने का ... रामूको पहले से ही सबसे छोटी युवरानी पसंद थी। क्योंकि वह बहुत सुंदर थी। रामूने छोटी युवरानिसे शादी की और राजाने बेटी के साथ कुछ धन दौलत, संपत्ती भी दे दी। छोटी युवरानी को भी रामू पसंद था। वो इस शादी के लिए तैयार थी। बाकी के छः युवरानियां अपनी सजा सुनके कुछ नही कह पाये चुपचाप रहि। इस तरहा रातों रात जूते फटने की और घिसजा ने की बात आखिरकार सामने आही गई।

संदेश :

हमे इस कहानी से यहाँ संदेश मिलता हैकी अगर हर किसीकी मदत करे तो हमें कुछ नुकसान नही होगा बल्की भगवान हमेशा अच्छाही करते है। इसि लिए हमेशा मदतगार बनना और इमानदारी से रहना चाहिए।

स्लीपिंग ब्यूटी

एक समय था, जब किसी राज्य मे संतान होने पर खुशियाँ (उत्सव) मनाए जाते थे। क्योकि उस राज्यकी वंश को आगे बढाने का चिराग जो मिल गया। उसी तरह अगर किसी राज्य के राजा को संतान नही हुआ तो निस्संतान होते उस राज्य को आगे की वंश नही रहेगी और राज्य का आगे का भविष्य अंधकार में दिखाई देता हैं। इसी तरह ''जोर्डण'' नामक राजा को अपने निस्संतान होनेका दुःख सताता था। वह अपनी पत्नी क्रिस्तीना के साथ कई धर्म कार्य और कई प्रकार के वैद्य तरिके अपनाया है। फिर भी संतान नही हुआ। बहुत समय के बाद रानी क्रिस्तीना गर्भवति हुई और एक लडकी को जन्म दिया, इससे राजा जोर्डण बहुत खुश था। सारी राज्य की प्रजा भी बहुत खुश थी। राज्य में खुशियां मनाई जा रही थी। राजा अपने

बेटी के नामकरण कार्य में सब को आमंत्रित कर के, बहुत बढीया उत्सव का आयोजन किया था। सारे राज्य के लोग राजा के भवन में मौजूद थे। एक बडा उत्सव का आयोजन किया गया। राजा खुशी से सारी परियोंको निमंत्रण दिया और सारे राज्य के राजाओं को भी सारे बंधू, मित्र लोग, प्रजा इस तरह पंडित, पामर लोगों से भवन भर पडा था। सब लोग छोटीसी, नन्हीसी, सुंदर गुडिया जैसी राजा की बेटी को दुवाएं दे रहे थे। तभी वो कहते हैना खुशियों को कभी ना कभी किसीकी बुरी नजर लग ही जाती है। उस खुशियों की भवनमें एक काली जादूगरनी आ गई और गुस्सेसे आगबबुला होके राजासे कहने लगी की, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई की तूने अपनी बेटीके नामकरण में सबको आमंत्रित किया है। पर मुझे नही बुलाया, इसका परिणाम तुम्हे जरुर भुगतना पडेगा। कह कर वो राजा की बेटीको श्राप देती है। कि वो जब अठराह साल की हो जायेगी तो सुई चुभनेसे हमेशा हमेशा के लिए जिंदगी भर की निद्रावस्था में चली जाएगी। ये अनहोनी होकर रहेगी। इसे किसी परीकी दुवाएं नही रोक पायेगी, कहकर चली जाती है। राजा और रानी सारी प्रजा बहुत दुःखी होते है। परियां भी उस श्राप को हटा नही पाये। राजा और रानी की हालत तो बहुत दुःखमय थी। राजा की हालत देख के परियों ने एक तरिका बताया। जब राजा की बेटी अठराह सालकी हो जाएगी तो उसे सुईसे दूर रखना। अगर काली जादूगरनी की बात सच हुई तो हिमालय के ओर एक आयुर्वेदिक फूलसे राजाकी बेटी ठीक हो सकती है। पर उस फूल को लाना बहुत मुश्किल है। उसे लानेके लिए कोई ऐसा चाहिए जो सर्वगुणसम्पन्न हो और वो महापुरुष से ही राजा

की बेटी का विवाह भी होगा। अगर तकदिरने चाहा तो ये सब मुमकिन होगा। राजाको परियों की बात सुनके थोडी तसल्ली मिली। राजा को उम्मीद थी की अपनी बेटी के लिए उसका जीवन रक्षक जरुर आयेगा और उसके आनेसे राजकुमारी की जिंदगी में फिरसे खुशियाँ लौट आयेंगी। समय बितता गया और राजकुमारी अठराह साल की हो गई। राजा को अब काली जादूगरनी की श्राप का डर सताने लगा। राजा ने राज्य के सारी तलवार और छुरियाँ फेकने को कहा। राजा राजकुमारी को कभी भी अकेला नही छोडते थे। हमेशा अपनी बेटीके साथ अपना ज्यादातर समय बिताते थे। उन्हे डर था,

कहीं वो अपनी बेटी को खो ना दे। पर ऐसेही एक दिन राजा कुछ ही समय के लिए थोडी दूर दूसरे राज्य के लिए निकले। उन्हे जाना बिल्कुल भी पसंद नही था पर अपने कर्तव्य के वजह से प्रजा के खातिर जाने को तयार हुए पर राजकुमारी के देखभाल के लिए बहुतसे लोगों को रखा गया। जब तक राजा लौट कर नही आ जाते, तब तक राजकुमारी की हर काम पर नजर रखा जायेगा। कुछ समय तक सबकुछ ठीक था। राजकुमारी अपनी कक्ष में रहकर थक गई थी। इसिलिए वो जब तक उसके पिताजी नही आ जाते तबतक वो कुछ समय राज्य की बागमें घुमना चाहती थी। वो सब की नजरों से छुप के बाग में चली जाती है। घुमते घुमते वो एक कमरे के पास आती हैं। उसमें एक औरत सिलाई मशिन चलाती दिखाई देती है। उसे देखकर राजकुमारी उस कमरेमें चली जाती है। वो उस मशिनके पास जाती है। और उसे छूकर देखती है। जब वो कमरेमे आती हैतो उसे वो औरत दिखाई नही देती। राजकुमारी उसी औरत को ढूंढते उस सिलाई मशिन के पास जाती है। तो अचानक इसे उस सिलाई मशिन की सुई राजकुमारी के उंगलि को चुभती है। उसी क्षण उसी जगहा राजकुमारी बेहोष पड जाती है। ये बात सारे राज्य में फैल जाती है। और सब लोग बहुत दुःखी होते है। राजा तुरंत लौट कर आते है। राजकुमारी को उस हालत में देखकर टूट जाते है। आखिर काली जादूगरनी की श्राप सच हो गई। इसिलिए होनी को कोई टाल नही सकता जो तकदीर में होना है, वो होकर रहता है। राजा और रानी बहुत रोते है। अब राजकुमारी जीवित रहकर भी निर्जीव की तरहा हैं। ऐसेही बहुत साल बीत जाते है। पर राजकुमारी की हालत

वैसे की वैसे ही है। कुछभी सुधार नही आया। कई वैद्य आये और कई प्रकार के इलाजइन सबका कुछभी असर नही पडा। उधर रानीपरीके पास एक राजकुमार आता है। और वो रानीपरीसे मदत मांगता है। वो बताता हैकि इससे पहले उसका राज्य बहुत अच्छा था। जब काली जादूगरनी की नजर उस राजकुमार के राज्य पर पडी तबसे उस राज्य में लोगों की परेशानियाँ बढ गई और उस काली जादूगरनी की बात ना मानने पर उस ने राजकुमार के माता पिता को बर्फ की मुर्तियां अपने आपसे बनादी। राजकुमार किसी तरह उस काली जादूगरनी को खतम करना चाहता था। परी को सारीबात समझमें आती है। और वो राजकुमार को तरकिब बताती है। परीकी बताई हुई तरकीब के अनुसार राजकुमार हिमालय की ओर चल पडता है। और परीकी कहे गये उस चमत्कारी आयुर्वेदिक फूलकी तलाश मे लग जाता है। बीचके सफर मे कई प्रकार के मुश्किलों का सामना करना पडता हैं। राजकुमार राक्षसों का वध करता है. और हिमालय के पहाड गिरपडते है। इस तरह उस अंजान सफर में राजकुमार अकेले सारी मुश्किलोंका सामना करते किसी न किसी तरह उस फूलके पास पहुँच जाता है। परी ने एक और बात बताई थी। उस दुष्ट काली जादूगरनी की सारी शक्ती, जादू उसी फूलमें है। अगर वो फूल नष्ट हो जाए तो जादूगरनी का भी बिना शक्तियोंका अंत हो जाएगा।

राजकुमार तुरंत उस फुल को रानीपरी के पास लाता हैऔर रानीपरी उस राजकुमार के साथ काली जादूगरनी की श्रापे बेहोश पडी हुई उस राजकुमारी के पास आती है। राजकुमार उस

स्लीपिंग ब्यूटीको (यानेकी राजकुमारी बहुत सालतक निद्रावस्थामें रहने पर उसे सारीप्रजा स्लीपिंग ब्यूटी कहक बुलाने लगे) देखकर उसकी सुंदरता और मासूमियत पर मोहित हो जाता है। उसे मनही मन प्रें करने लगता है। इस बातको रानीपरी समझ जाती है। वो राजकुमार से अपने हाथों से फूल का रस बनाने को कहती है। राजकुमार रानीपरी के बताये जैसे फूल को नष्ट कर देता है। वहा काली जादूगरनी की शक्तियां खतम होने लगती है। वो बिना शक्तियोंके जीवित नह रह सकती है। एक तरफ राजकुमारे मातापिता भी वापिस बर्फकी मूर्तियों की रुपसे अपने रुपमें आ जाते है। यहा उस फूल के रस को राजकुमारी को पिलाते ही वो अपने आँखे खोलती है। और अपने माता पिता के गले लगाकर वो बहुत रो पडती है। रानीपरी राजकुमारी का हाथ राजकुमार को देने के लिए राजासे पूछती है। राजा रानीपरी के आज्ञाके अनुसार

राजकुमारी (स्लीपिंग ब्यूटी) राजकुमार की शादी कर देता है। राजकुमारी को भी पहले नजर में ही राजकुमार से प्यार हो गया था। इस तरह स्लीपिंग ब्यूटी का विवाह उसके सपनों के राजा से हो जाता है।

संदेश :

आखिर जीत अच्छाई की ही होता है। पर इन्सान को अपने कर्तव्य, इमानदारी को भूलना नही चाहिए। यही जीवनका मूल्य है।

मेरी प्यारी राजकुमारी

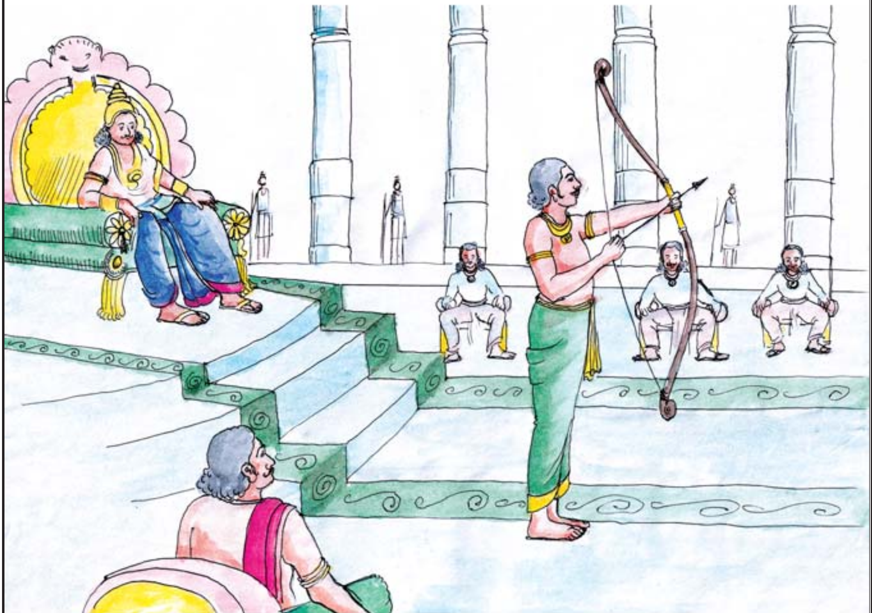

एक दूर के राज्य में एक राजा थे। उनके तीन बेटे थे। वो एलेक्स, एलेन, एंथेनी। वो एक दिन शाही जादूगर को आमंत्रित किया और उनसे पूछा की अब उनकी आयू होती जा रही है। वो अपने जिम्मेदारिया और पद अपने तीन बेटों को सोपना चाहते है। तब शाही जादूगरसे वो अपने बेटों की शादी के लिए अच्छा मुहरत देखने को कहा। तो शाही जादूगर ने गोले पर हाथ रखा तो वो देखने को रंगबिरंग फूल आसमान को छू रहे है। और आकाश मे नीले बादल छा रहे डै। पेड, पौथे हरेभरे दिख रहे है। चारों तरफ हरियाली छायी हुइी है। तो शाही जादूगर ने राजा को ये सब बताया बरसात का मौसम है। बरसात का मौसम शुरु होते ही ''सातवादिन'' राजकुमारों का विवाह का मुहरत होगा। उस तरह

राजा ने सेनाधिपती को आज्ञा दिया कि सारे राज्यके राजाओं को निमंत्रण दिया जाये। उसी तरह बरसात के महिने के सातवादिन जोभी राजकुमारिया (अविवाहित राजकुमारिया) इस स्वयंवर के लिए आमंत्रित किए गए, वो सब इस सभा में मौजूद थे। राजाने भी अपने तीन बेटों को पहले सेही खबर कर दिया। तीन बेटों मेसे एंथनी बहुत दयालू और सबसे छोटा था। वो बहुत ही नर्म दिल का था। बडों का आदर करना सबके साथ घुलमिल जाना उसका स्वभाव था। इस तरह सब लोग कोई भी विचार के लिए एंथनी के पास आते थे। इससे दोनों भाई एंथनी से बहुत जलते थे, उसको किसीना किसी तरह सारे राज्य के लोगों के सामने शर्मिंदा करना चाहते थे। वो दोनों एक जादूगरनी के पास गये और सारी बात बताकर जादूगरनी से मदत मांगने लगे। जादूगरनी ने कहा तुम्हारे जैसे लोगों से ही मुझे निगेटीव एनर्जी मिलती है। इसीलिए मैं अभी तक जिंदा हूँ। जादूग समझ गई कि, एलेक्स, एलेन को उनका छोटा भाई बिलकुल भी पसंद नही है। इसीलिए वो एलेक्स, एलेन को वादा किया की एंथनी कल जरुर लोगों के सामने शर्मिंदा होगा। अगलि सुबह ही बडी सभा लगी, उसमें सारी प्रजा, राजकुमारियां थी। बिलकुल राजाने पुरानी राजवंश की प्रथा की तरह अपने बेटों को बान लगाने को कहा, जब एलेक्स ने बान आकाश में लगाया तो बान दूसरी राजकुमारी के पास जाके गिरा वो राजकुमारी भी एलेक्स से विवाह के लिए मंजूर थी। क्यों कि वहा उपस्थित सारी राजकुमारियाँ अपने मर्जीसे ही उस सभामें आये थे। जब एलेन ने बान लगाया तो बान आकाशके मार्ग से जाकर चौथी राजकुमारीके पास जा गिरा। पर जब एंथनी ने बान लगाया तो बान

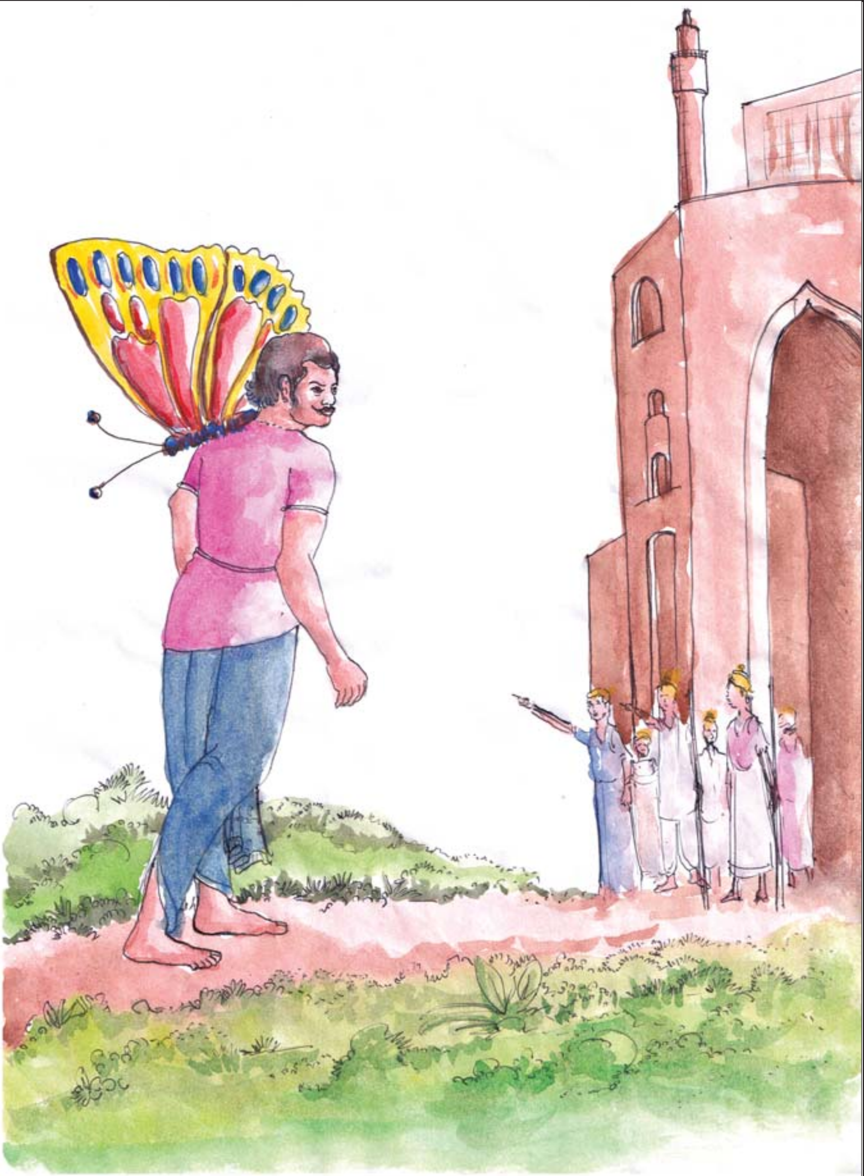

आकाश के मार्गसे जाकर जंगलमे चला गया। ये सब जादूगरनी का किया धरा था। क्योंकि वो उस सभा में उपस्थित होकर ये सब किया

है। वो बान एक तितलीके पास जा गिरा तो सब एंथनी को उसी तितली के साथ शादी करनी चाहिए कहकर कहने लगे। एंथनी ने अपने भाग्य को स्वीकार कर लिया और तितली के साथ शादी करने के लिए तैयार हो गया। पर राजा को ये शादी पसंद नही थी। राजा मना करते रहे। पर एंथनी अपने पिताका अपमान होते हुए नही देखनी चाहता था। इसीलिए वो तितली को बिना शादी किये उसे अपना हमसफर (जीवनसाथी) मान लिया। तबसे एंथनी कही भी जाता उस तितली को साथ ले जाता। इस तरह सारी प्रजा एंथनी पर हसने लगी। उसका मजाक उडाने लगे, पर दूसरी तरफ एलक्स, एलेन अपने नई पत्नायों के साथ खुश थे। एक बार एंथनीने उस तितली को अपने साथ एक आयोजन को नही लेके गया। उस आयोजन में एक सुंदर सी राजकुमारी खडी थी। एंथनीने उसे अपने साथ नृत्य के लिए पूछा तो उसने अपना हाथ बढाया और दोनों नृत्य करते रहे। दूसरे दिन भी सिी तरह दोनों नृत्य करते रहे। एंथनी ने उस लडकी से अपना नाम पूछा तो वो अपना नाम ''निशा'' बतायी , वो एक राजकुमारी है। एंथनी ने कहाकी वो उसे पसंद करता है। वो उसे शादी भी करना चाहता है। तब निशा ने कहा तुम्हारे जिंदगी में और कोई है। तो एंथनीने कहा कि वो एक मेरे साथ बुरा मजाक था। तो नेशा ने कहा कि जाकर उसे फिरसे जंगलमें छोडकर आजाव। एंथनी ने ठीक वैसा ही किया और उसने उस तितली को जंगल में फिरसे उसी स्थान पर, उसी पेड के पास छोड दिया। तब वो तितली एक सुंदर राजकुमारी के रुप में बदल गयी। वो और कोई नही निशा ही थी, वो राजकुमार एंथनी से कहने लगी की तुम भी सब लोगों के

तरह ही हो। खुदगर्ज, मुझे थोडा भरोसा था कि तुम इस तितली को नही छोडोगे, पर तुम्हारा प्रेम स्वार्थी निकला, कहकर वो पेडके अंदर तितली बनकर चली गई। राजकुमार एंथनी क्षमा मांगने लगा। बार-बार कहने लगा की मुझे माफ करदो। मुझसे भूल हो गई। इस तरह एंथनी पूरे सात दिन बिना कुछ खाये पिये उसी पेड के पास बैठकर माफी मांगने लगा तो राजकुमारी निशा तितली के

रुप में बाहर आकर एंथनी को माफ कर दिया। क्योंकि एंथनी का प्यार राजकुमारी निशा के प्रति सच्चा था। राजकुमारी निशा ने एंथनी के भाईयों का सारा किया धरा एंथनी को बता दिया। एंथनी गुस्से से आगबबुला हो गया और कहने लगा मेरे सगे भाईयों ने मेरे साथ इतना बडा धोका किया। राजकुमारी निशा एंथनी से कहा हम ऐसे बुरी दुनिया से दूर चले जायेंगे, जहां अच्छाई और शांती हो। पर यहा तो अपने सगे भाईको धोका देनेवाले इन्सान मौजूद है। एंथनी नेशा के साथ उसकी दुनियां में चला गया। वह दोनों को भी अपने अपने सुंदर पंख निकल आये। वो दोनों उस दुनिया में खुशी खुशी रहने लगे।

संदेश:

प्रस्तुत कहानी से हमे ये संदेश मिलता हैकि हमे कभी भी दयालू, निस्वार्थ, इमानदार होना चाहिए। कभी भी दूसरों के बुराई के बारे में सोचना नही चाहिए।

निस्वार्थ प्रेम का विजकभीना कभी जरुर होता है। क्यों कि प्रेम निस्वार्थ होतो भगवान भी उन प्रेंमियोंको मिलाने मे अपना सहयोग देते हैं।

शीशे का राज्य

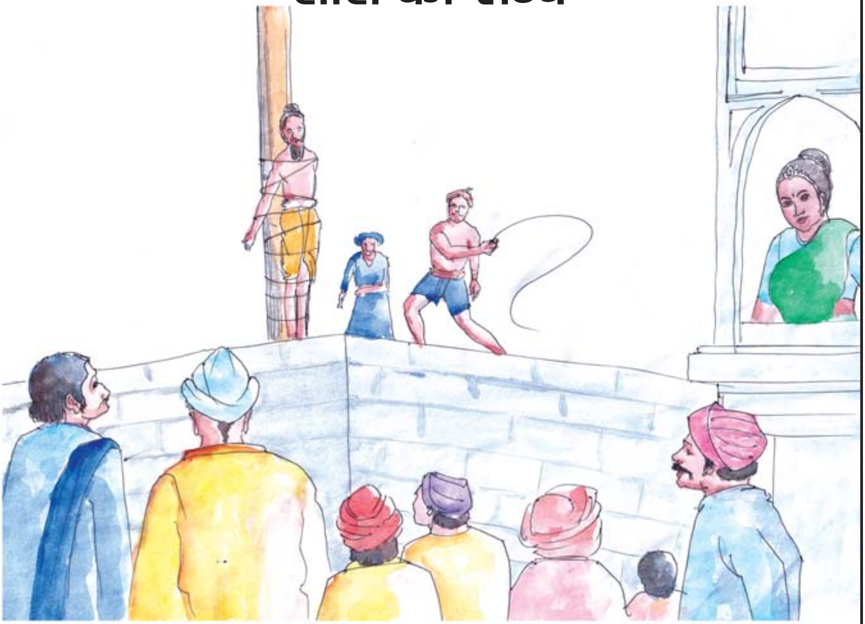

एकसमय की बात थी। एक दूरे के राज्य में शिमर नामकी एक सुंदर राजकुमारी रहती थी। वो बहुत दयालू और अच्छी थी। उसे गलत बिलकुल भी सहन नही होता था। वो अपनी माता पिता की एकलौती बेटी थी। राजा अपनी बेटी से बहुत प्यार करते थे। वो उस राज्य की एकलौती राजकुमारी थी। पर राजकुमारी को दंगे, फसाद, अत्याचार, झगडे बिलकुल भी पसंद नही थे। राजा, रानी जब झगडते थे तो उसे बिलकुल भी पसंद नही आता था। उसके अपनेही उसके पीठ पिछे उसकी बुराई करते थे। उसका मजाक उडाया करते थे। राजकुमारी शिमर अपने राज्य में गरीबों पर होनेवाले अत्याचार और झगडे और लोगों का स्वार्थ से भरा पडा दिल से लब देखकर उसका दिल दिनबदिन कठोर होता गया।

राजा, राजकुमारी शिमर के ये सब विचारों से अंजान थे। राजकुमारी का मन दिनबदिन कठोर होने के साथ-साथ वो अब बिलकुल स्वार्थी और निर्दय इंसानों की तरह विचार करने लगी, हर बातपर गुस्सा होना किसीकी भी बात ना मानना, लोगों के साथ मिलना, जुलना राजकुमारी का खतम हो गया था। राजकुमारी की माँ को राजकुमारी का ये बदला हुआ बर्ताव पसंद नही आया। वो राजासे कई बार कहनी थी की आपकी बेटी आपकी तरह हर बात पर नाराजहोना गुस्सा करता कर रही है। बिलकुल आप की तरह वो दिनबदिन आपकी तरह बनती जा रही है। रानी ने कई बार राजकुमारी शिमर को समझाने की कोशिश किया । पर कुछभी फायदा नही हुआ। शिमर को इन्सानों की इस दुनिया में रहना बिलकुल भी पसंद नही था। वो हमेशा सब लोगों से अलग रहना चाहती थी। वो हमेशा चाहती थी की उसका एक अलग दुनिया हो और उस दुनिया में सिर्फ वो ही रहे। कोई स्वार्थ से भरा पडा इन्सान ना रहे। एक दिन राजकुमारी अपने महलमें घुमरही थी। घूमते घूमते वो अपने माता पिता की कक्षा के तरफ गई तो, वहा राजा रानी आपस में किसी बात पर बहस कर रहे थे। राजकुमारी शिमर ये देखकर नाराजहोकर चली जाती है। और जाते जाते वो देखती हैकि उसके अपने ही उसके पीठ पिछे उसकी बुराई कर रहे थे। (राजकुमारी शिमर बहुत नासमझ है। कभी कभी तो पागलों की तरह बर्ताव करती है। सब लोग उसे इज्ज़त देते है। सिर्फ इसके वजहसे की वो एक राजकुमारी है। नही तो उसका कोई भी सम्मान नही करता।) राजकुमारी शिमर ये सब बाते सुनकर बहुत दुःखी होती है। और

जंगल की तरफ चल पडती है। जंगल में एक जगह बैठ कर वो रोने लगती है। और राजकुमारी सारी बाते उस आत्मा को बता देती है। आत्मा राजकुमारी से कहती हैकि तुम्हे जो भी चाहिए वो मुझसे तुम पुछ सकती हो, मैं तुम्हे एक वर दुंगी, कहकर राजकुमारी से कहती है। राजकुमारी एक शीशे का राज्य मांगती है। उस राज्य में सभी लोग शीशे के ही होने चाहिए। सिवाय राजकुमारी के वो दुनिया इन्सानों की दुनियासे बहुत दूर होना चाहिए। कहकर जंगल की आत्मा से कहती है। जंगल की आत्मा राजकुमारी को एक सुंदर सा शीशे का राज्य बनाकर देती है। पर वो एक बात हमेशा याद रखने को कहती है। वो अगर राजकुमारी को किसी इन्सान से प्रेम हो गया तो वो शीशेका राज्य सर्वनाष हो जाएगा। उसका कोई भी नामोनिशान नही बचेगा। राजकुमारी शिमर इस बात को हमेश याद रखनेका वादा करती है। तब जंगल की आत्मा गायब हो जाती है। राजकुमारी शिमर खुशी से उस शीशे के राज्य में रहने लगती है। वो राज्य देखनें मे बहुत ही सुंदर और सारी सुविधाओंसे भरा पडा था। इधर राजकुमारी शिमर के पिता (राजा) अपनी प्रिय पुत्री को ढूंढने का आदेश देते है। यहा राजा, रानी अपनी बेटी शिमर के लिए बहुत परेशान होते है। उधर शीशे के राज्य में शिमर को बहुत घमंड आता है। वो अपने राज्य में किसी को घुसने नही देती है। सारे सिपाही और उस राज्य में काम करने वालों पर अपना हुकुम चलाती है। एक बार एक राजकुमार घोडे की सैर करते अपने सैन्य से बिछड गया और शिशे के राज्य के पास पहुँचा। उस राजकुमार का नाम ''थियोडार'' था। वो एक रहस्यमय यात्राके लिए निकला था। पर उसके पिछे शत्रू

राज्य के लोग पे और वो शत्रू राज्य के सैनिकों से बचते-बचते वो शिशे के राज्यके पास आ गया। वो उस राज्य की सुंदरता देखकर सोचने लगा की ऐसे सुंदर राज्य में कौन रहता होगा? वो उस राज्य के अंदर चला गया और उसे चारों ओरसे सैनिक पकड लिये और राजकुमारी शिमर के पास लेके गये। राजकुमारी ने उसका नाम पूछा तो वो उसका नाम थियोडार बताया। उसे सब लोग टेंड कहकर पुकारते है। राजकुमारी शिमर उसे पूछती हैकि कही उसे उसके पिताजी तो नही भेजे पर टेड ने कहा मेरा भी एक राज्य है। मैं उस राज्य का राजकुमार हूँ। मुझे किसीने भी नही भेजा है। टेड राजकुमारी शिमरसे पूछता है। कि आप इस शीशे के राज्य में क्यों रह रही है। और कहती हैकि उसे इन्सानों की दुनिया में रहना पसंद नही है। उसे उसी शीशे के राज्य में शांतिमय जीवन मिलता हैपर टेड

कहता हैकि उसे शीशेका राज्य पसंद नही आया है। वो उस शीशे के राज्य में नही है। राजकुमारी शिमर इस बात से गुस्सा होती हैऔर वो राजकुमार टेड को दिखाना चाहती हैकि शीशे का राज्य में सभी तरह के सुख सुविधाएं मौजूद है। वो टेडको भोजनपर बुलाती है। और कई प्रकार के पकवान बनाये जाते है। भोजन के बाद टेड को नाव की सहर कराने ले जाती है। टेड को भोजनके बाद नांव का सहर करना बहुत पसंद आया। इस तरह वो दोनों कुछ दिन तक उस महल में खुशी खुशी रहते है। दोनों में अच्छी दोस्ती होती हैं। राजकुमार टेड एक दिन अचानक अपने राज्य जाने की बात करता है। और वो राजकुमारी से अपने मनकी बात बताता है। कि वो उसे प्रेम करता है। पिछले कुछ दिन राजकुमारी शिमर के साथ रहना उसे पसंद आया। इसी लिए वो राजकुमारी को भी अपने राज्य चलने को कहता है। क्योंकि राजकुमार टेड शिमर को सिक्के का दूसरा पहलू (रुप) जो शिमर ने कभी नही देखा उसे दिखाना चाहता था। सिक्के का दूसरा पहलू याने की दुनिया में छिपी अच्छाई पर राजकुमारी कुछभी नही कहती है। पर वो भी मनही मन टेडसे प्रेम करने लगी थी। पर उसे जंगल की आत्मा की बात याद आयी। उसने उस बात को राजकुमार टेड को बताया। और उस बात को राजकुमार टेड समझ गया। शिमर ने टेड के प्रेम को स्वीकार कर लिया तभी अचानक जंगल की आत्मा उन दोनों के सामने प्रकट होती है। और वो कहती है, मुझे पता था की तुम दोनों का मिलना उस भगवान का लिखा गया तकदीर ही है। जंगल की आत्मा को देखकर शिमर हैरान हो जाती है। आत्मा शिमर से कहती है। इस दुनिया में

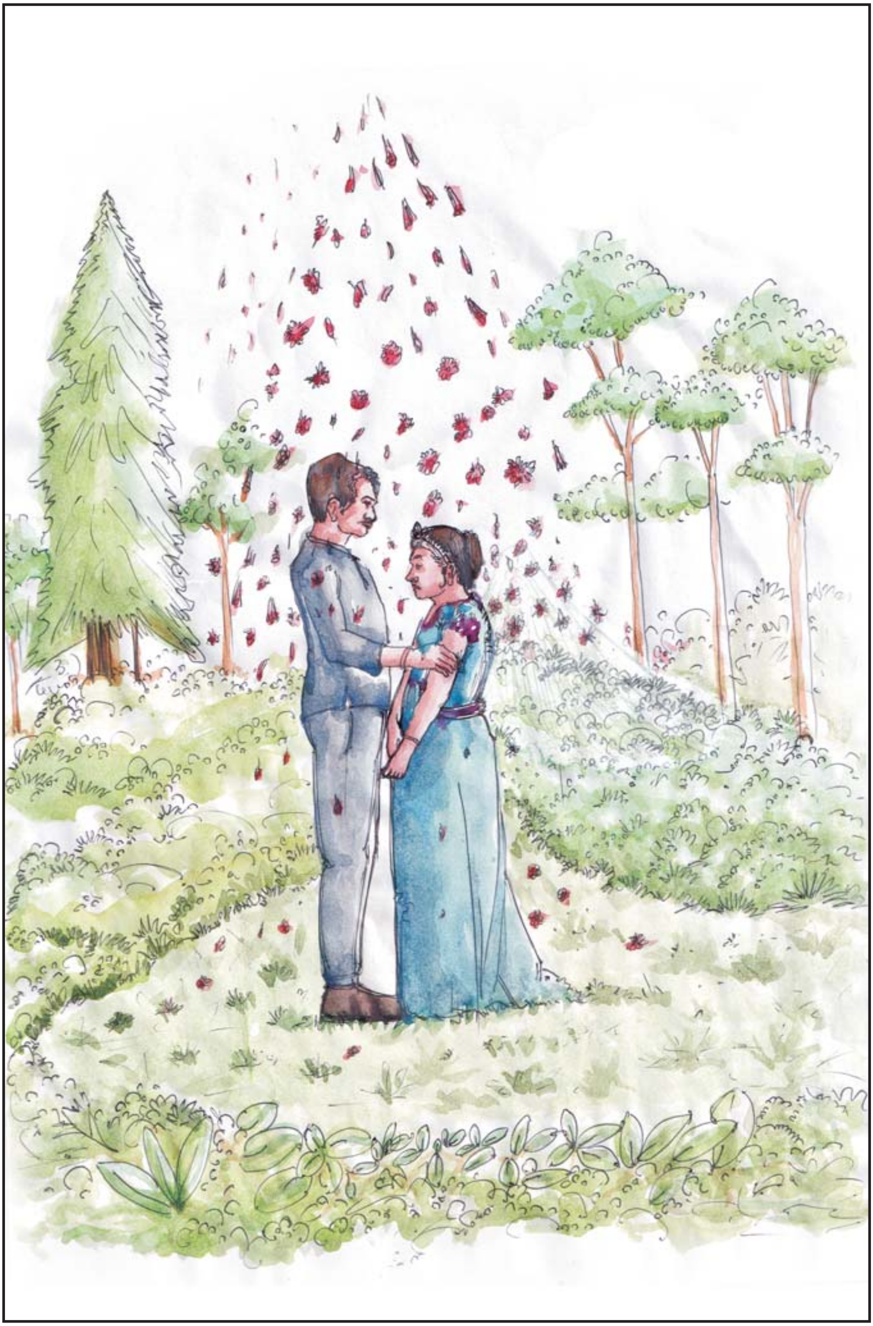

याने की इन्सानो की दुनिया में सुख, दुःख और अच्छाई, बुराई दोनों रहते है। हमें अच्छाई को स्वीकार करके बुराई को मिटाना चाहिए।

राजकुमारी शिमर जंगल की आत्मा की बात को समझ जाती है। अपने राज्य को जाकर माता पिता से मिलती है। और आखिर में टेड और शिमर की शादी होती है। वो दोनों खुशी-खुशी अपने राज्य में रहने लगते है।

संदेश :

मनुष्य को अच्छाई को स्वीकार करना चाहिए और बुराई को मिटाना चाहिए। बल्की सभी इन्सानों से नफरत नही करना चाहिए। इससे हमारे दिल में अच्छाई और दयालू गुनोंके स्थान पर गुस्सा और स्वार्थ, द्वेष गुण आ जाते है।

ये दुनिया बहुत संदर होती है। जैसे की एक सिक्के के दो पहलू होते हैं ठिक उसी तरह दुनिया के भी दो रुप होते है। एक बुराई का तो और एक अच्छाई का पर प्रस्तुत कहानी में शिमर ने दूसरा पहलू नही देखा है। वो हैअच्छाई का रुप । उस में छुपा हुआ सुंदर जीवन ।

रहस्यमयी बगीचा

मिर मैरी लेनक्ष सफर में थी, ये सफर उसे और उसकी जिंदगी को पूरी तरह बदल देगा उस में कई बदलाव आ जाएंगे। पर हमे ये देखना हैकि, वो बदलाव अच्छे होंगे या नही जब मैरी लेनेक्ष का जन्म हुआ था, तो उसके माता, पिता उसे बिलकुल भी पसंद नही करते थे। उसकी मां ने नौकरानी से सक्ती से कहा कि, मैरी लेनेक्ष को उससे दूर रखे। तबसे मैरी का पालन पोषण नौकरानी देखती थी। मैरी १० साल भारत देश मे रही। जब मैरी १० सालकी थी, तब एक भयानक बिमारी भारत में फैल गयी, तो मैरी के माता,पिता के साथ कई लोग उस भयानक बिमारी के शिकार हो गये। मैरी गुस्सेल और चिडचिडी रहती थी। वो कभीभी नही हंसती थी और किसी से बात भी नही करती थी। उस का कोई दोस्त नही था। वो हर बाते के लिए झगडा करती थी। मैरी के माता पिता के देहांत के बाद उसे उस के मामा के घर भेजनेका आयोजन किया गया। मैरी के मामा का महल योकशर में था। वो एक बडा और सुंदर और सौकमरों का

महल था। उस महल की देखभाल करने वाली नौकरानी ''मेडलोक'' के साथ मैरी उसके मामा के महल चली गई। मैरी का सामान अंदर एक कमेरें मे रखा गया। मेडलोक मैरी को सिर्फ दो कमरेमे घूमनेका इजाजत दिया। मैरी के काम ''मासी'' करती थी। जब मासी मैरी के लिए खाना लेकर गई तो मैरी ने खाने से साफ इनकार कर दिया। जब मासी ने कहा की उस के घर में दो भाई और बहन है। उन्हें खाने के लिए बहुत परिश्रम करना पडता है। यहाँ तो मैरी के लिए स्वादिष्ट भोजन है। फिर भी मैरी उसे खाना नही चाहती। मासी और मेडलोक को मैरी का स्वभाव समझ में आगया। मेडलोक ने कहा पता नही इस लडकी का क्या होगा यहा के माहोल में मैरी और भी चिडचिडी सी हो जाएगी, कहकर मेडलोक डरने लगी। पर कुछ ऐसा हुआ कि मैरी एेकशर पूरी तरह से बदल गई। एक दिन मैरी लेनेक्ष बाहर बगीचे में घूमने के लिए निकली बाहर बहुत ठंड था। मैरी ने ठंडसे बचने के लिए दौड लगाने लगी। ताकी उसका शरीर गरम हो जाए। उसे दौड लगाते हुए बहुत मजा आने लगा। उसे बगीचे का रौनक पसंद आने लगा। उस बगीचे में वो एक माली के पास गई और उसे बाते करने लगी, उस ने मैरी से पूछा की ''तुम इतनी चिडचिडी सी क्यों हो?क्या तुम्हे भी महल से निकाला गया है?'' मैरी को माली के बाते सुन के बहुत गुस्सा आया। वो उसपर बरसने ही वाली थी, तो तभी वहा एक पक्षी आया। वो माली से बाते करने लगा, मैरी उस पक्षी को देखकर हैरान हो गई। उसका नाम ''रोबिन'' था। मैरी भी उस पक्षी के साथ बातें करने लगी और उसके साथ अच्छेसे घुलमिल गई। जब मैरी महल वापस लौटी तो

मार्था को वो बहुत खुश नजर आ रही थी। मार्था को मैरी सारी बातें बताई। मार्था समझ गई कि मैरी को यहां का जंगल, जगहाओंको पसंद करने लगी। अब वो इन्सानों के साथ घुलमिल रही है। परिंदों को पसंद करने लगी है। मैरी लेनेक्ष ने कहा मैं पहले ऐसा नही थी। मुझे खेलना, हसना, इन्सानों के साथ घुलमिलना पसंद नही था। पर मुझे अब ये सब अच्छा लग रहा है। मार्था भी इस बात से खुश थी कि मैरी में बदलाव आये हैं।

संदेश :

हमे इस कहानीसे यहा संदेश मिलता हैकि हमे हमारे जिंदगी में हमेशा हसते रहना है। लोगों के साथ घुलमिल के प्यार, स्नेह भावसे रहना है। तभी हम आपने जिंदगी में मजबूत रेहसकते हैं और जिंदगी का असली मजा उठा सकते है।

रपुंजल

एक दूर के देश में एक घर में बुरी चुडैल रहती थी। उस का एक अधूरा सपना था। वो कभी माँ नही बन सकती थी। वो निस्संतान थी। वो एक लडकी को अपना पूरा शक्ती और रहस्य विषयों को देना चाहती थी। उस चुडैल के घर से कुछ ही दूर में एक किसान पती, पत्नी रहते थे। किसान की पत्नी अपने पती को एक खुश खबरी सुनाती हैकि वो माँ बनने वाली है। पर उनकी ये खुशी ज्यादा दिन तक नही टिक पाया। किसान की पत्नी अचानक बिमार पडी। उसका स्वास्थ दिन ब दिन बिगडती जा रहा था। किसान अपनी पत्नी के लिए कई औषधी का उपयोग किया फिर भी स्वास्थ में सुधार नही आया। किसान को उस के आखरी डॉक्टर ने एक उपाय बताया। उस उपाय के अनुसार किसान ने उस बुरी चुडैल के घर जाकर दरवाजा खटखटाया। चुडैल से अपने पत्नी के बारें में बताया तो

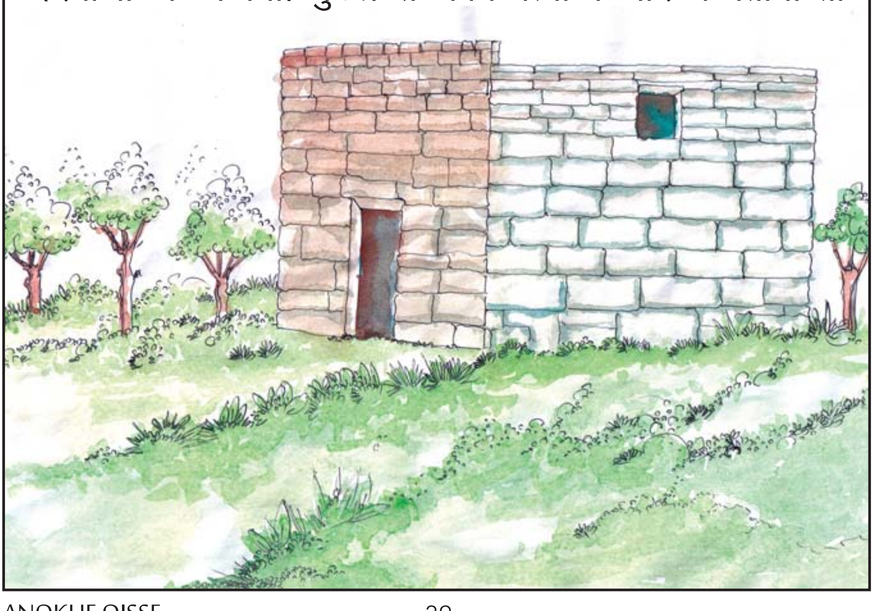

चुडैल कुछ औषध पत्ते दी और उस पत्तों से किसान की पत्नी के स्वास्थ में सुधार आने लगा। पर वो खतम होते ही वो फिर से बिमार पड गई। इस बार वो बहुत ही कम समय में ज्यादा बिमार पड गई।

किसान फिर से चुडैल के पास गया। इस बार चुडैल ने कुछ बीजदिये पर उसने शर्त लगाया की किसान को अगर बेटी होती हैतो उस बच्ची को चुडैल ले जाएगी। ये शर्त सुनकर किसान को ज्यादा गुस्सा आया और वो आपने घर लौट आया। पर बेचारा वो भी क्या करता पत्नी और बच्ची की जान बचाना भी तो जरुरी था। वो सोचा की अगर बेटा हुआ तो उस बेटे को चुडैल को देना नही पडेगा। वो चुडैल के पास जाकर बीजले आया। तब पत्नी ठीक हो गई और एक सुंदर बेटी को जन्म दिया। पर उनकी खुशी ज्यादा देर तक नही टिकी उनके पास चुडैल आकर बच्चीको ले गई। चुडैल उस बच्ची का नाम ''रपुंजल'' रखा उसे एक जादूई जंगल में एक टवर में लेकर चली गई उस टवर में उपर एक छोटा सा कमरा था। रपुंजल बडी हो गई। उसके बाल सुनहरे और बहुत लंबे थे। वो किशोरी बनचुकी थी। वो दिन में टवर के पास खेलती थी। और रात में उपर चली जाती थी। एक दिन चुडैल श्याम को टवर के पास आकर रपुंजल को अपने बाल नीचे फेकने को कहा तो रपुंजल के बाल नीचे तक पहुँच रहे थे। चुडैल सीडियों से उपर जाकर कुछ जादूई शब्द बोलने से वो सारे सीडिया गिर गई। ये देखकर रपुंजल आश्चर्य से सोचने लगी की वो अब बाहर नही जा सकती है। चुडैल रपुंजल के बालों को रोजकंगी करती थी। रपुंजल के पूछने से चुडैल उसे बताती हैकि वो उसे बहुत प्यार करती है। उसे इस बुरी दुनिया से बचाना चाहती है।

उधर रपुंजल के पैदा होने के दिन ही राजदरबार में रानीने एक बेटे को जन्म दिया। वो भी रपुंजल के जैसे बडा हो गया। पर राजा के बिमार पडने से वो अपने बेटे की शादी कर उस राज्यको एक संतान यानेकी पोता चाहता था। युवराजने कई युवरानियों से मिला पर कोई भी उसे अपने पत्नी के रुप में नही भाई, वो अपने सच्ची प्यारकी तलाश में जंगल पहुंच गया। उसे एक जंगल दिखा वो उस में जाना चाहता था। पर सैनिकों ने कहा कि वो एक चुडैल की जंगल है। उस में जाना खतरनाक है, पर युवराजनिडर था। वो चला गया पिछे पिछे सैनिक आने लगे, पर वो डर रहे थे। उन्हें अपने आप पर भरोसा नही था। पर युवराजको अपने आप पर भरोसा था। युवराजको टवर पर सुरीली आवाजमें गाती हुई रपुंजल दिखी। युवराजरपुंजल के पास जाना चाहता था पर तभी एक चुडैल आ गई और वो रपुंजल को पुकारकर उसके बाल नीचे फेकनेको कहा और वो उस बालों को पकड के चडकर उपर पहुंची। चुडैल हर रोजऐसे ही करती थी। वो रोजसुबह बाहर जाती और श्याम को लौट आती।

एत दिन युवराजचुडैल के बाहर जाते ही वो रपुंजल को आवाजदिया। पहली बार रपुंजल किसी दूसरे का आवाजसुन रही थी। वो थोडा संकोच करते हुए, उत्साह के साथ नीचे झाक कर देखती है। तो एक नौजवान युवराजखडा दिखाई पडता है। वो दोनों बात करते है। युवराजउसे नीचे आनेको कहता है। पर रपुंजल कहती है, उसे नीचे आने की अनुमती नही हैऔर सीडिया भी नही है। वो दोनो दोस्त बन जाते है। एक दिन रपुंजल उसे अपने बाल

फेककर उपर आनेकी अनुमती देती है। वो जान गई थी कि राजकुमार के वजह से उसे कोई खतरा नही हैं। वो पूछता हैकि वो यहां क्यों है? रपुंजल जवाब देती है, उसकी माँ ने कहा हैइस दुनिया में बुराई बहुत है। इसीलिए उसे उस टवर से बाहर आने की मनुमति नही है। युवराजकहता है, ये तो बहुत हास्यास्पद की बात है। इस दुनिया में बुराई के साथ अच्छाई भी है। और सुंदरता भी है। कोई मां ऐसे कैसे कर सकती है। वो दोनों उस टवर से भाग जाते है। जब चुडैल आती हैतो बाल निचे फेके हुए होते है। चुडैल सौचती है, शायद रपुंजल ने उसका आना देख लिया होगा। पर रपुंजल अपने बाल काट के बांधकर उस बालों के द्वारा वो युवराजभाग जाते है। चुडैल गुस्से से आग बबोला हो जाती है।

उधर युवराज, रपुंजल राज्य पहुँचते ही राजा ठीक ठाक दिखते है। युवराजने रपुंजल की सारी बात बताता है। राजा को रपुंजल नामकी एक औषधी से ही उनकी बिमारी ठीक हुइ। ये औषध

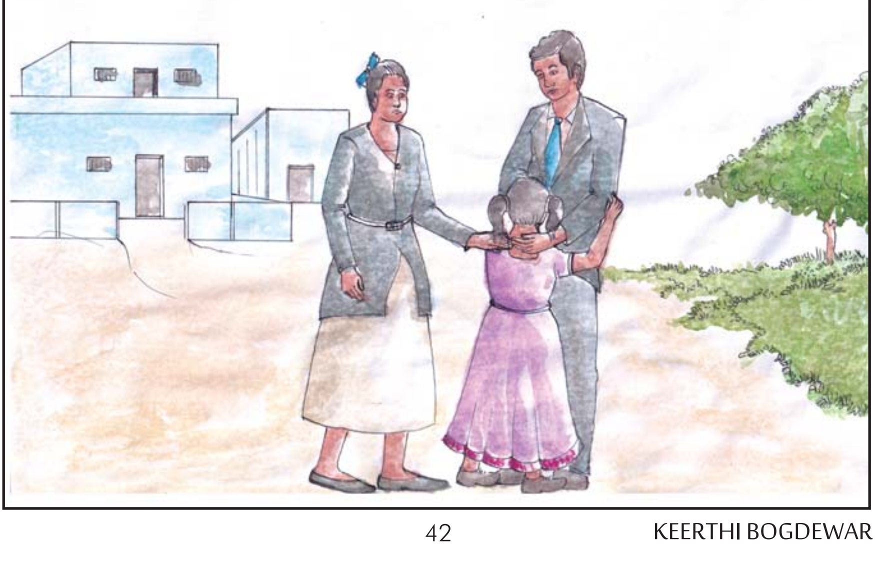

एक किसान पती, पत्नी ने दिया। उनकी दुःख भरी कहानी राजा बताते है। रपुंजल युवराजके साथ उस किसान पती, पत्नी के घर जाती है। तो उसकी माँ उसके सुनहरे बाल देखकर पहचान लेती हैऔर गले लग जाती है। रपुंजल बहुत खुश होती है। सब लोग अच्छे से रहते है। रपुंजल और युवराजका विवाह होता है। युवराजको रपुंजल से पहले नजर में ही प्यार हो गया था। और रपुंजल भी राजकुमार से प्यार करती थी। उधर जंगलमें चुडैल को उसी टवर में राजबंदी बनाकर रखते है। इससे उस चुडैल की शक्तियाँ गायब हो जाती हैऔर वो चुडैल भी नष्ट हो जाती हैं।

संदेश :

भगवान अच्छे लोगों के साथ अच्छा ही करते है। भगवान के घर देर हैपर अंधेर नही।

हमेशा जीत अच्छाई की ही होता हे। बुराई का कभी ना कभी अंत होना ही है।

दिव्य राजकुमारी

क्रिशीकांती के बहुत समय के बाद मानव जाती ने एक ऐसी विकास की छलांग मारी जिस से मानवजाती में बहुत बदलाव आये थे। पहले मानवजाती के लोग स्वर्गदूतोंपर निर्भर थे। पर अब मानव जाती में काफीसारी विकास हो गई है। इसीलिए स्वर्गदूत सारे एक जगहा मिलकर भगवान के बुलावे पर मानवजाती को छोडने का फैसला किया है। स्वर्गदूत की रानी ने कहा अब हमें हमारो लोक में वापस जाना पडेगा क्योंकि हम इतने साल मानवजाती का रक्षा करते रहे। हमने उन्हें खाने के लिए, जीने के लिए जैसे सारी तरिके दिशाओं मे विकास प्राप्त करने के लिए सहायता किया है। पर वो समय आ गया हैकि हमें पृथ्वीलोक को अल्विदा कहना पडेगा। इस बातको सारी स्वर्गदूत मान गये पर एक स्वर्गदूत जो वो है। ''भाल्की'' वो पृथ्वी लोक छोडना नही चाहती थी। सारे स्वर्गदूत

आखरीबार पृथ्वीलोक को निहरने गये। भाल्की का रिश्ता एक नन्ही बच्चीके साथ जुड गया था। उसका नाम ''वर्जीनिया'' था। भाल्की जाते जाते उस बच्ची को एक वरदान दिया। वो बडी होकर सुंदर राजकुमारी बनेगी और उसकी शादी एक राजकुमार के साथ होगी, वो एक बहुत ही सुंदर बच्ची को जन्म देगी जो वो ''दिव्य राजकुमारी'' के नाम से जानी जाएगी। वो एक स्वर्गदूत के नाते जरुरत पडने पर इ स मानव जाती की रक्षा करेगी। भाल्की का एक आंसू का बूंद उस बच्ची वर्जीनियापर पडता है। तो उस का चेहरा चमक उठता है। उस रात सारी स्वर्गदूत पृथ्वीलोक छोडकर अपने लोक वापिस लौट जाते है। तो आसमान में स्वर्गदूत तारों के जैसे चमक उठते है। वर्जीनिया बडी हो गई, उसका विवाह के बाद उसने एक अतिसुंदर बच्ची को जन्म दिया। किसी को नही पता थी कि वो बच्ची बहुत ही ''अनोखी'' है। उसका नाम ''लिसा'' रखा गया। वो बच्ची बडी हो गई। अब वो और भी सुंदर लगने लगी। उसकी माँ जो अपने लडकपन में थी। उससे भी सुंदर। व पंछी बनकर उड सकती है। मछली बनकर तैर सकती, घोडा बनकर दौड भी सकती थी। इस तरह उसके पास कई असाधारण शक्तियां थी। जो उससे वो किसी भी रुप ले सकती थी। वो प्रकृती से बहुत प्यार करती थी। उसे हमेशा प्रकृती के गोदी में खेलना और पशू पक्षियों के साथ रहना अच्छा लगता था। वो इसीलिए विवाह करना नही चाहती थी। एक दिन उसे मिलने ''आम्नेस'' नामका राजकुमार आया।वो अपनी माँ के कहने पर उसे मिली, तो वो उसके उपर कोई भी दबाव नही चाहता था। वो तो दोस्ती करना चाहता था। उसका ये स्वभाव लिसा को बहुत पसदं

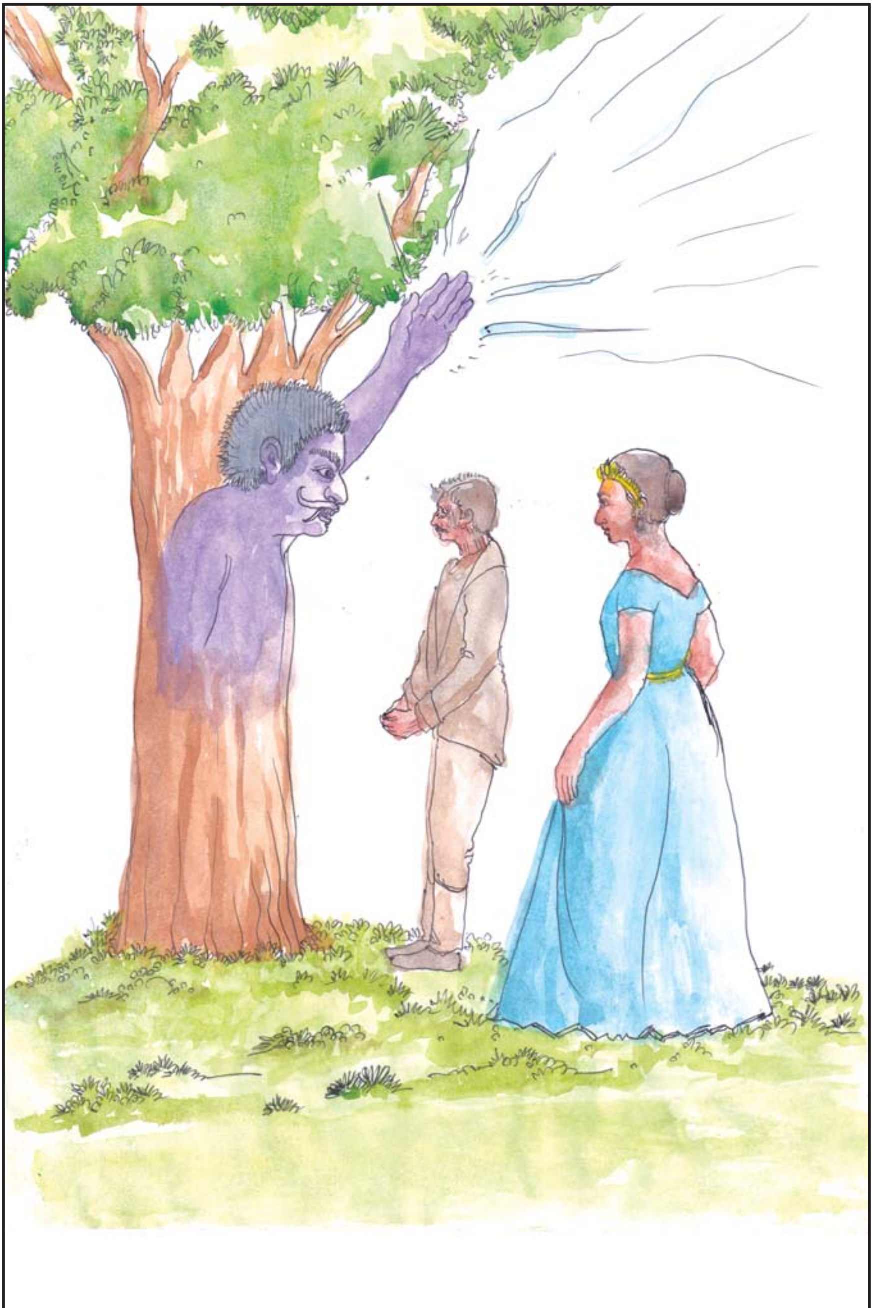

आया, तब वो उसे पसंद किया। वो दोनो काफी समय बिताने लगे लिसा को उसके साथ अच्छा लगने लगा। इसबार वो जंगल में नही जाती थी। और उसे जंगल की याद भी नही आई। पहले लिसा के लिए दूरदूर से राजकुमार अपने रिश्ता लेकर आये थे। लिसा ने किसीको पसंद नही किया। पर इसी समय में जब स्वर्गदूत एक राक्षस को युध्द में हरा कर उसे एक चट्टानके रुप में बना दिया था। पर वो चट्टान को अब दरारे आने लगे थे। तब वो राक्षस चट्टान से बाहर निकल के आ गया। वो अपने हिस्से का विष सारी पृथ्वी में छोडने लगा। जैसे की हवा, पानी, पेड, पौधे इस तरह धरती का सारा हिस्सा दुषित हो गया। सब लोग बिमार पडने लगे। राजदरबार में राजा रानी के साथ राजकुमार ''आग्नेस'' भी बिमार पड गए। सिर्फ एक राजकुमारी पर इस सबका असर नही पडा। वो इस सबका वजह जानने के लिए निकल पडी। उसके साथ आग्रेस भी गया। लिसा को पता था, ये एक राक्षस का काम है। थोडेही दूरमें आग्नेस बेहोश पड गया। लिसा की नजर पेड में छुपे राक्षस पे पडी। राक्षस उसे देखकर चौंक गया कि उसका असर राजकुमारी लिसा पर क्यों नही है। पर वो कहने लगा की ''ज्यादा देर तक नही चलेगा, कुछ देर के बाद राजकुमारी पर भी असर करेगा। दानवने लिसा से कहा कि वो सारी पृथ्वीपर राजकरना चाहता है। लिसाको बहुत गुस्सा आया वो उसके साथ लड पडी। राक्षस को समझ में आ गया कि वो एक स्वर्गदूत है। लिसा उसके साथ लडते लडते पेड में समा गई। कुछ ही देर के बाद सारा संसार उस राक्षस की आतंक से मुक्त हो गया। पेड-पौधे हरेभरे हो गये।

हवा, पानी साधारण रुप में आ गए। आग्नेस को होश आया। लिसा उसके साथ पेडमें से बात करने लगी कि उसका जानेका समय आ गया है। लिसा ने आग्नेस को पूरी कहानी सुनाई और आखरी बार आग्नेस के प्रति अपना प्यार का इजहार करके अपने माता, पिता की जिम्मेदारी सौंपकर चली गई। आग्नेस बहुत रो पडा और वो अपनी जिम्मेदारी निभाने लगा। इस तरहा स्वर्गदूत लिखाने अपने प्राण त्यागकर पृथ्वी की रक्षा की वो अभीभी हमारे बीच में ही है।

वो पेड जो लिसा आखरी बार उस में समा गई वो अब केलीफोस्मिया के सफेद पहाडों में हैं। जो मेनुसेला नामसे प्रसिध्द है। उसका आयू ४,८५२ साल है।

स्वर्गदूत लिसा अभी भी हमारे बीच है। उसका मुस्कान, अच्छाई प्रकृतीमें अभी भी समाया हुआ है।

संदेश :

भगवान बुराई का अंत करने के लिए किसी ना किसी को भेजही देते है।

जैसे की स्वर्गदूत दो बार पृथ्वी का रक्षा किया, मानव जाती को संकटों से बचाया।

मछली राजकुमार

एक दूर के राज्य में एक राजा, रानी रहते थे। उनके पास सब कुछ था। सिवा य एक संतान के वे निस्संतान थे। रानी को हमेशा से एक संतान की अपेक्षा थी। एक दिन शाही बावर्ची के घर में कुछ मछलिया लाये गये। उन मछलियों से राजा, रानी के लिए पक्वान बनाने थे। एक बावर्ची की नजर एक सुंदर मछली पर पडी। वो मछली बोल रहा था। बावर्चीने सोचाकी अगर वो उस मछली को रानी को देगा तो वो खुश होकर उसे बडा इनाम देगी। बावर्ची वैसा ही किया। रानी बहुत खुश हो गई। बावर्चीने जैसा सोचा था। ठीक वैसा ही रानी ने उसे बडा इनाम दिया। रानी हर रोजमछली से बात करती। उसका नाम ''मछली राजकुमार'' रखा गया। उस मछली को ट्टपना बेटा मानने लगी। एक दिन वो मछली शीशेके पात्र में बडा हो गया। रानी ने तुरंत उसे बडे पात्र में डाल दिया। पर दूसरे दिन उस में भी वो बडा हो गया। रानीने उस मछली के लिए एक सुंदर सा पानी का टैंक बनवाया। मछली राजकुमार को उस में डाल दिया गया। मछली राजकुमार उसके नये घर में बहुत खुश था। पर एक दिन पानी के टैंक में बडाही सन्नाटा मचा हुआ था। मछली का मूंह भी उतरा था। उस के पंखेके रंग भी फिके पड गये थे। रानीने मछली राजकुमार से पूछा क्यों इतना उदास है। मछली ने जवाब दिया की उसे एक पत्नी चाहिए वो उस टैक में बहुत अकेला महसूस कर रहा है। रानी हैरान हो गई फिर भी उस ने कहा की जरुर मेरे बच्चे तुमसे मैबहुत प्यार करते हैं मैतुम्हारे खुशी के लिए कुछ भी करुंगी।

रानी ने पूरे राज्य मे ऐलान करवा दिया कि उस के बेटे याने

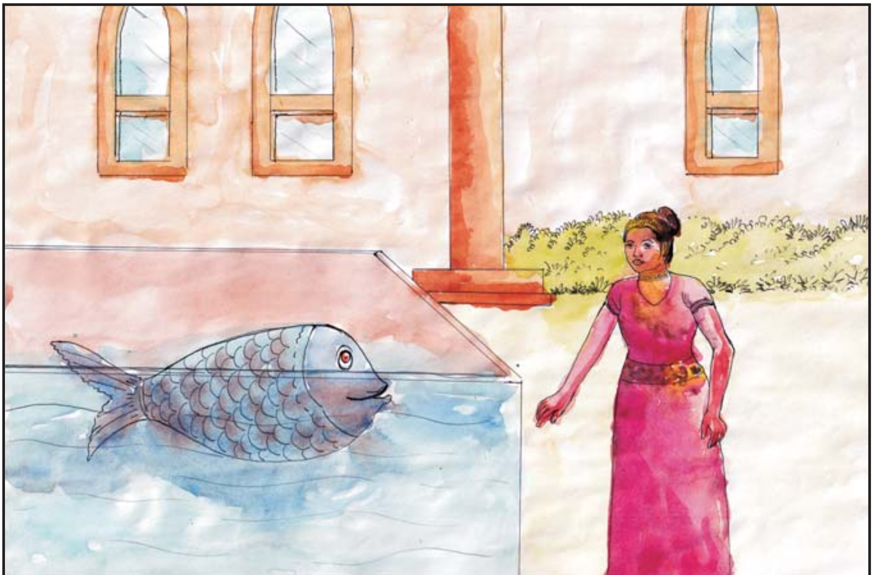

मछली राजकुमार के लिए एक पत्नी चाहिए पर कोई भी अपने बेटी को देने के लिए तैयार नही था। क्यों कि सब लोग डर गये थे। अगर उन्हों ने उनके बेटी को सौंप दिया तो मछली राजकुमार उस लडकी को खा जायेगा। इस तरह सैनिक एक आखरी घर में पहूँच गये। उस घर में एक सौतेली माँ अपनी सौतेली बेटी को देना चाहती थी। उस ने सैनिकोंसे कहा कि उसकी सौतेली बेटी बहुत सुंदर है। उसे अपने साथ ले जाए। उसके सौतेली बेटी का नाम ''आल्या'' था। वो अपने माँ से निवेदन किया को उसे मत भेजो अगर वो गई तो उसे वो बडा सा मछली खा जायेगा। पर उसकी सौतेली माँ को उस की जरा सी भी फिकर नही थी। उसने उसे नदी को जाकर कपडे धोनेके लिए कहा क्यों कि उसे रानी के सामने ठिकठाक दिखना है। आल्या बहुत उदास होकर नदी के पास बैठकर रोने लगी तब ''सात सिरोंवाला'' नाग उसका दोस्त था। उसने उसे तीन पत्थर दियो। और कहा की,

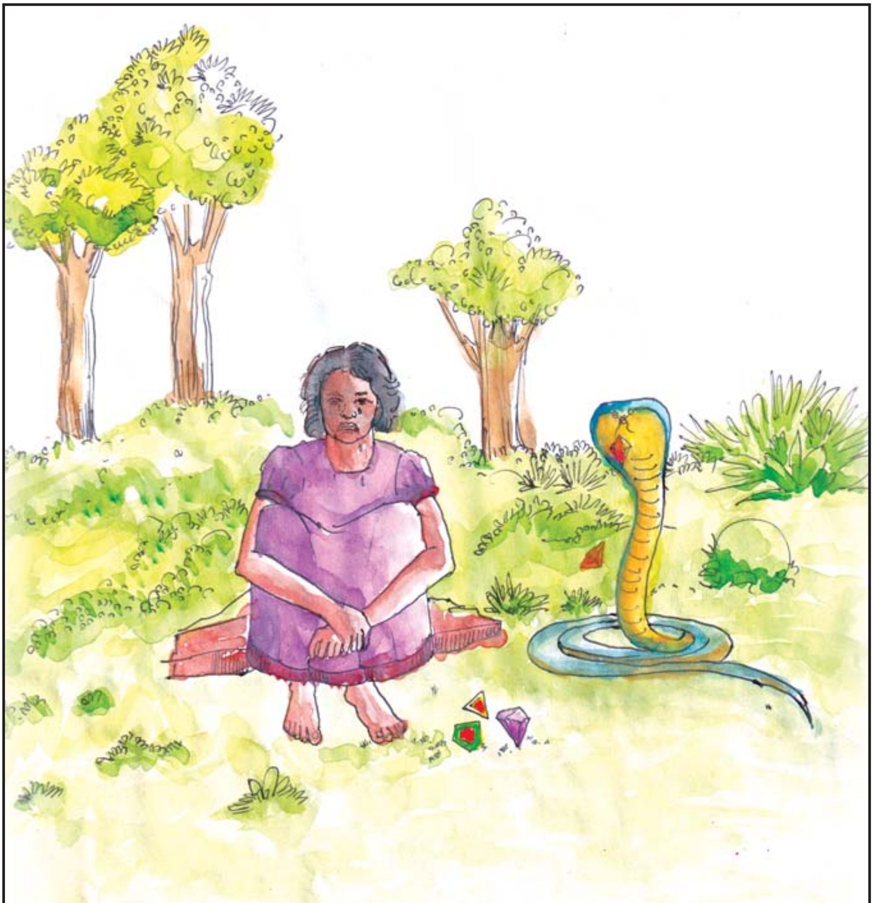

पहला पत्थर वो उस मछली को मारेगी तो वो अंदर चला जाएगा। दूसरा पत्थर मारेगी तो वो डर जाएगा। इसतरह तीसरा पत्थर मारने से वो मछली एक सुंदर राजकुमार के रुप में बदल जाएगा। आल्या ने पूछा की क्या वो असल मे एक राजकुमार है। नाग ने कहा वो एक राजा का बेटा है। उसके भैय्या और भाभी ने उसे सम्मोहित किया था। आल्या अगले दिन राजदरबार पहुँच गई। वो रानी को बहुत पसंद आई। आल्या को उस पानी के टैंक में एक कमरा बनवाया

गया था। उसमें बिठाया गया। आल्या परेशान थी कि वो उस ठंड पानी के टैंक में से कैसे मछली पर पत्थर मारे गी। उस रात सब लोग डर गये थे। कि मछली आकर आल्या को खा जाएगा। पर वैसा कुछ भी नही हुआ। मछली नही आया। सब लोग बहुत देर के बाद चले गये। राजा, रानी भी चले गये। उसी रात को जब सन्नाटा छाया था। हवा धीर`से चलने लगी थी। तब पानी हिलने लगा। मछली राजकुमार तेजीसे आल्या के तरफ बढने लगा। आल्याने एक पत्थर लिया और मछली को मारा तो वो पत्थर सीधे उस मछलीके मूंहमे जाके पडा, दूसरे पत्थर मछलीके मूंहपर लगा। दो, तीन मिनट के बाद मछली गुस्से से आल्या के तरफ बढ रहा था। तो आल्याने तीसरे पत्थर को मारा तो वो पत्थर मछली के पंखको जाकर लगा। तब मछली एक सुंदर, नौजवान राजकुमार में बदल गया। आखिर कार आल्या ने राजकुमार को सम्मोहन से मुक्त कर दिया। दोनों रानी के पास जाकर सारी कहानी बताई। रानी बहुत खुश हो गई। रानी नो कहा तुम तब भी मेरे बेटे थे, आजभी मेरे बेटे हो, कहकर राजकुमार को गले लगाया। राजा, रानी दोनों आल्या, राजकुमार को आशीर्वाद दिया। दोनों का विवाह किया गया। इस तरहा मछली राजकुमार को उस की सपनों की जलपरी मिल गई।

संदेश :

हमे हमेशा भगवान पर विश्वास रखना चाहिए।

जो भी होता है। हमारे भले के लिए होता है। भगवान किसी के साथ अन्याय नही करते।

राजकुमारी डायना

एक दूर के देश में एक राज्य था। वो राज्य लगभग परियों के लोकके पास था। यानेकी वो राज्य बहुत दूर था। उस राज्य की राजा, रानी बहुत खुश थे। क्योंकि उन्हें एक सुंदर सी बच्ची का संतान हुआ था। वे एक बडासा, सुंदरसा उत्सव का आयोजन किया वे परियों को भी आमंत्रित किया। उन्हे आशा थी कि परियां आकर उनकी बच्ची को ढेरसारा आशिश, उपहार, सुंदरता वरदान देंगी। उत्सव शुरु हुआ। परियों ने ढेर सारा उपहार दिए। आखिर में परियों की रानी काफेला आकर बच्ची को चुमते हुए निडर होने का वरदान दिया। पर रानी को लगा कि वो सिर्फ बच्ची को चुमा है। काफेला ने दिया हुआ वरदान रानी को सुनाई नही दिया। इससे वो अगले बगल में खडी मोहतरमा को कहती है, परी काफेला एसा कैसे कर सकती है। मेरी बच्ची को कोई भी वरदान नही दिया। ये बात

परियों की रानी काफेला सुन लेती है। और वो नाराजनही होती है। वो रानी को सबक देना चाहती थी। इसीलिए वो बच्ची को और एक वरदान देते हुए कहा कि उसकी शादी एक पत्थर दिल के राजकुमार के साथ होगी। इस से राजा, रानी समझते हैकि पत्थरर दिल याने की वो इन्सान बहुत बुरा और निर्दयी होगा। वो किसी खुश नही रख पायेगा। रानी रोते हुए परि के बद दुआ के सामने सामने व क्या कर पायेंगे। पर राजाने कहा मैं राजा हूँ मैअपनी बेटी को कुछ नही होने दूँगा। वो ुस राज्य में सुंदर सा बगीचा बनवाता है। और उसमें एक मिनार उस मिनार के इर्दगिर्द बडासा दिवार बनवाता है। उस दिवारों में से सिर्फ सूर्य की रोशनी ही अंदर आ सकती थी। उस बगीचे में सुंदर फूल और रंग बिरंगे फूलके पेड थे। उस बच्ची का नाम ''डायना'' रखा गया। वो बडी हो गयी और बहुत सुंदर भी दिखने लगी। वो हमेशा परियों की कहानिया पढती थी। उन में उसे रपुंजल की कहानी बहुत पसंद थी। क्यों कि वो भी उसी की तरह थी। टवर में बंद जैसेकी डायना मिनार में बंद थी। डायना को बाहर जाने का मन करता था। वो अपने पिता से बाहर जाने के लिए पूछती है। उसके माता, पिता मना करते है। तब वो कहती हैज्याद तर परिया अच्छा वरदान देते है। और वो पहलीयों में भी बात करते है। मेरा जो वरदान हैवो अच्छा ही होगा कौन जाने मुझे ये बुरा इसीलिए लगता है, क्या इसकी वजहसे मैं बाहर कभी भी ना जाऊँ, ये अच्छी बात नही है। पर राजा उसकी बेटी की बात नही सुनता, वो गुस्से में अपने गलती के लिए नौकरों को डाट देता हैं। डायना कहती है, पिताजी ये आपको शोभा नही देता। आपको यहा के परिपालन का अनुसरण

करना पडेगा। वैसे आप खुद की गलती के लिए दूसरों को नही डाट सकते। राजा गुस्से से तुम्हारी इतनी हिम्मत की मुझे बातें सुना रही हो। रानी भी कहती है, डायना तुम अपने पिताजी से ऐसे बात नही कर सकती। डायना बिना कुछ सुने नौकर से अपने पिता के तरफ से माफी मांगती है। नौकर डायनाको कहता है, माफी की जरुरत नही है। युवरानी आप मुझे माफी मांगकर मुझे शर्मिंदा मत किजिए कहता है। डायना बहुत ही दयालू थी। एक राजकुमार जंगल में से सैर करने को निकलता है। उसे एक बुढा आदमी दिखाई पडता है। उस आदमी को अपने घर जाना था। पर वो पहाडके उपर है। और धूपके कारण उस में उतनी शक्ती भी नही बची की वो अपने आप जा सके। राजकुमार ने उस बुढे आदमी को अपने पीठके उपर बिठाकर ले जाता है। बूढा आदमी राजकुमारसे कहता हैकि उसे राजकुमार के जिंदगी में कुछ संकट दिख रहे है। पर एक निडर राजकुमारी उन संकटों में उसका साथ देगी। उस निडर राजकुमारी का रहने का राज्य का पता उस राजकुमार को वो बुढा आदमी देता है। वहा राजमहल में डायना अपने कक्ष में रो रही थी। तब परियों की रानी काफेला उसके पास आती है। काफेला को देखकर डायना पहचान जाती है। काफेला डायनासे पूछती हैकि वो उससे नाराजतो नही है? डायना कहती है, वो काफेला से बिलकुल भी नाराजनही है। वो कहती हैदुवाए और बद्दुवाए अपने अंदर ही रहती है। अपने आप पर निर्भर होते है। काफेला उसे दो जादुई पत्थर देती है। उसे सही इस्तमाल करने को कहती है। और कहती हैकि उसे अब उस राज्य से बाहर निकलने का समय आ गया है। ऐसा कहकर काफेला चली

जाती है। डायना कुछ देर के बाद बगीचें में घूमने जाती है। उसे एक चमकती रोशनी दिखाई देती है। वो उसके पिछे जाती है। इस तरह वो राज्य से बाहर निकल जाती है। वो किसी को नही दिखाई पडती है। डायना जंगल में पहुँच जाती है। वो रोशनी चांद में समा जाती है। डायना चाँद को देखती हुई पहली बार बाहर की जंगल की सुंदरता और महक को अनुभव करती है। तभी कुछ लोग एक शेरका पिछा करते है। उसे मारने के लिए पर राजकुमारी पेड पर बैठी थी। तुरंत उतरकर उन्हें रोकती है। वही राजकुमार भी आता है। वो उन लोगों से कहता हैकि, डायना उनकी राजकुमारी है। वे वहा से भाग जाते है। इस तरह राजकुमार अपना नाम ''एडविन'' बताता है। और अपना परिचय देता है। वो जंगल का सैर करने के लिए और मदतगार लोगों की मदत करने के लिए निकला था। डायना को राजकुमार ''एडविन'' अपने साथ सैर के लिए चलने को कहता है। डायना हाँ करती है। दोनों घोडेपर जाने लगते है। उन दोनों को पता ही नही था कि वो लोग खतरनाक जंगल में जा रहे है। उसी जंगल में एक बुरा जादूगर की गुफा है। जो उसके पास तीन ड्रागन है। वो अपने क्रिस्टल गोले में डायना, एडविन को देख लेता है। वो भेष बदलकर एक बूढे आदमी के रुप में डायना, एडविन के सामने जाता है। उन से यह जंगल बहुत ही खतरनाक है। यहा एक जादूगर है। जिस के पास तीन ड्रागन है। आप लोग मेरे साथ चलो सुबहा होते ही उस जादूगर का शक्ती कम हो जाएगा, आप लोग चले जाना कहता है। वो जादूगर लोगों को खुशी नही देख सकता। डायना, एडविन को अपने गुफां में ले जाता हैं।

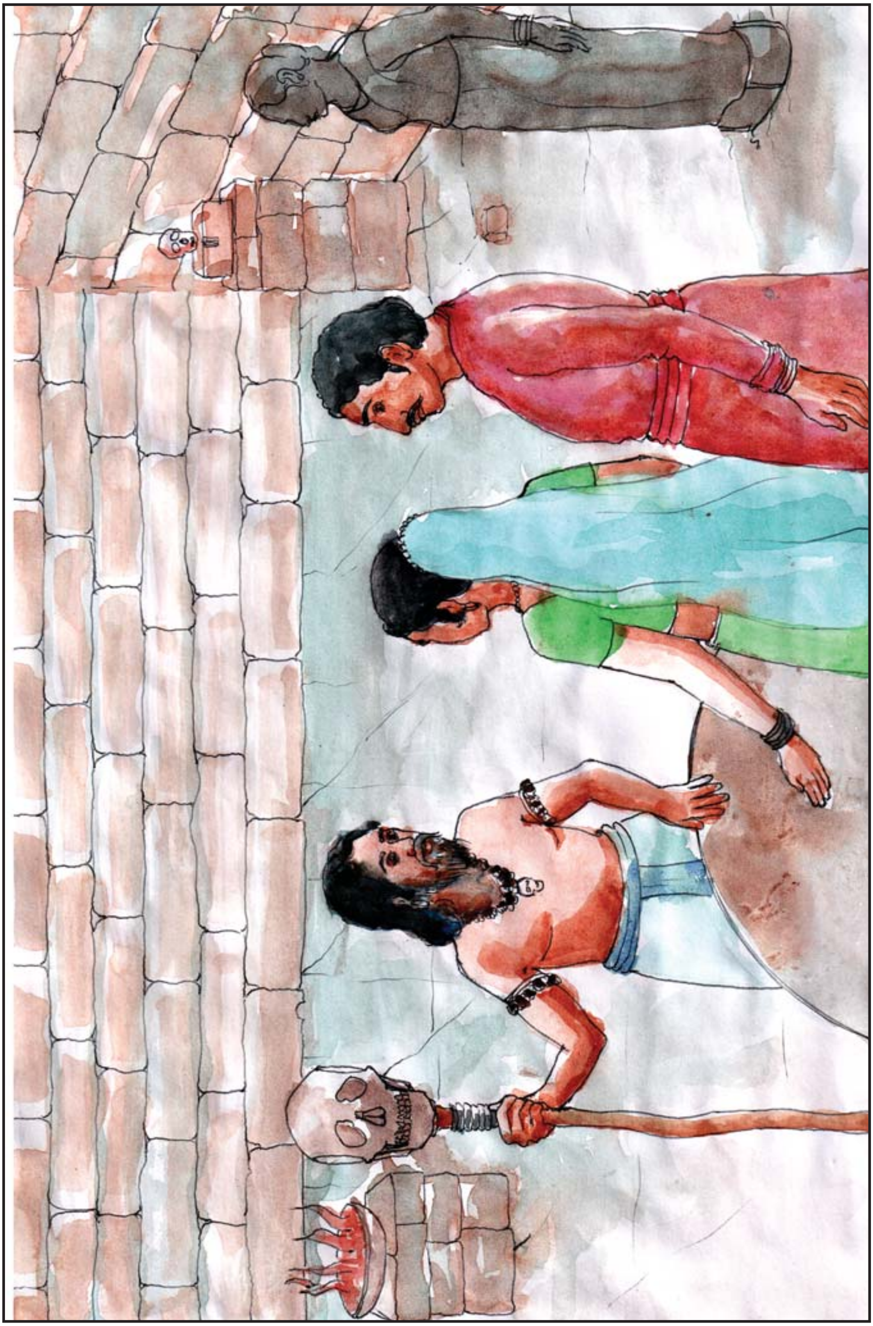

एडविन को बहुत डर लगता है। पर डायना को वो जगह अजीब लगती है। पर डर नही लगता। वो जादूगर अपने रुप में आ जाता है। वो अपना शक्ती से एडविन को पत्थर की मूरत बना देता हैं। पर उस जादूगर की जादू का असर डायना पर नही होता। क्योंकि अस सिर्फ डरने वालों पर ही होता है। पर डायना तो निडर थी। डायना पत्थर बने एडविन को देखकर निराश हो जाती है। तभी उसे काफेला के दिये उ जादूई पत्थरों की याद आती है। वो उनमें से एक पत्थर को पत्थर की मूरत बना एडविन को छूती है। तुरंत एडविन अपने रुप में आ जाता है। ये सब देख जादूगर हैरान हो जाता है। वहा और भी पत्थर बने हुए लोग थे। पर डायना के पासतो एकही पत्थर था। वो तुरंत काफेला को याद करती है। काफेला आती है। वो कहती है, तुम्हें उस पत्थर के साथ क्रिस्टल लोलेको छूना है। पर उसने पहले जादूकर को तीसरे ड्रागन के पास बांध देना है। डायना और एडविन मिल के वैसा ही करते है। जादूगर को बांध देते है। तब गुफा गिरने लगता है। तुरंत डायना उस पत्थर के साथ गोले को छूती हैतो उसमेसे पानी निकलता है। उस से सब लोग ठिक हो जाते है। और डायना, एडविन को सब लोग धन्यवाद कहकर चले जाते है। इस तरह डायना और एडविन राज्य पहूँच जाते है। और एडविन कहता हैकि वो डायना से शादी करना चाहता है। पर रानी उस से डायना के बद्‌दुआ के बारे में कहती है। एडविन कहता हैवो ''पत्थर दिलवाला'' मैं हूँ क्योंकि सबकी मदत करता हूँ। सबकी पत्थर दिलों को पिघलाता हूँ, इसी लिए लोग मुझे लोगों ने मुझे पत्थर दिल का इनाम दिया है। कहकर वो अपने गलेमें पहनी एक

हार को दिखाता है। तभी काफेला आती हैऔर कहती हैं, डायना अगर तुम शेरके सामने और जादूगर के सामने हिम्मत नही दिखाती तो मेरा ये दुआ बद्दुआ ही बन जाता कहकर आशीर्वाद देती हैं। रानी भी परियों की रानी काफेला से माफी मांगती है। काफेला रानी को माफ कर देती है। आखिर में डायना कही हुई बात परिया हमेशा दुवाये ही देती है।

बद्दुआवों में भी कोई ना कोई पहेली छुपी होती है। ये बात सच हो गई। राजा, रानी ने अपने बेटी को गले लगाते है। इस तरह डायना और एडविन का विवाह होता है।

संदेश :

बडे और बुजुर्गों के आशीर्वाद में सिर्फ अच्छाही होता है।

उनके बद्दुआवों में भी भलाई होती है। हमें बडोंकी इज्ज़त करनी चाहिए।

हमेशा निडर रहना चाहिए। हर मुसिबत का डटकर निडरताके साथ सामना करना चाहिए।

राजकुमारी क्रिस्टल

एक बहुत पुरानी बात है। जब राज्यों का नामकरण नही हुआ था। तब एक उंची पहाडी पर एक ड्रागन रहता था। उसके जादूई चश्मे से वो सारी पृथ्वी मे हो रही बातों को देखता था। उस चष्मे से गहरे पानी मे जो भी है, वो और मोटे लकडियों के बीच जो हैवो सबकुछ दिखता था। जब चार देशों के राजा दायित्व में थे। वो थे पूरब का राजा और पश्चिम का राजा और उत्तर का, दक्षिणका राजा। उत्तर के राजा को एक बहुत सुंदर बेटी थी। उस का नाम क्रिस्टल था। वो शीशे जितना साफ दिखनेवाला, बर्फ से बनी महल में रहती थी। एक दिन क्रिस्टल को उस के पिता ने पूछा कि ट्टब तुम्हारी शादी करनी है। अगर कोई पसंद होतो बताओ तब क्रिस्टल कहती हैकि उसे दक्षिण के राजकुमार सनशैण पसंद है।

यहा तीन देश के राजकुमार क्रिस्टल को पसंद करते थे। उससे शादी करना चाहते थे। एक था पूरब का राजकुमार सनरैजवो सबसे पहले उठता और बहुत मेहनत करता। अपने सारे काम करता। दूसरा पश्चिम का राजकुमार सनसेट ये राजकुमार दुनिया में सबसे सुंदर था। और हमेशा अपनी सुंदरता और कपडों को देखते रहता था। तीसरा था दक्षिण का राजकुमार सनशैण ये बहुत उदास स्वभाव का था। क्रिस्टल इसे ही पसंद करती थी। पर क्रिस्टल को राजने कहा मैं जिस किसीको पसंद करुंगा तुम्हे उसीसे ही शादी करनी होगी। दूसरे दिन राजा ने ऐलान किया की जो भी ज्ञानका किताब लेके आयेगा। उसे मैं अपने बेटीको दुंगा। राजकुमार सनरैजबहुत दूर जाते है। और बडे, बडे ऋषिमुनियों से पूछते है। सनसेट भी ढूंढने को निकलते है। पर उन्हे अपने सुंदरता और कपडों की फिक्र था। इसीलिए वो अपने राज्य के इर्दगिर्द जो भी स्थान थे, वहीं जाकर तलाश किया। सनशैण पहले राजा को पूछा राजा ने कहा उस किताब में बहुत रहस्य, जानकारी है। जिस से दुनिया की उध्दार हो सकती है। वो एक ड्रागण के जादूई चष्मेसे देखता है। सनशैण ने कहाकी व उस किताब को जरुर लेके आयेगा। पर राजके मंत्री राजे कहा, राजा अगर राजकुमार उस ड्रागण के पास जायेंगे तो उन्हे वो ड्रागण जिंदा नही छोडेगा। तब राजा हंसकर मंत्री से यह कहता हैकि मैं भी तो यही चाहता हूँ। वो अब वापस लोटकर नही आएगा, यह सब मेरा उपाय का हिस्सा है। क्रिस्टल को सनशैण बात बताता है। तब क्रिस्टल कहती हैये तो बहुत खतरनाक है। वो भी सनशैण के साथ चलनेका जिद करती है। क्योंकि क्रिस्टल

ही उस ड्रागण को सुला सकती है। वो शितलताकी राजकुमारी है। उसे ठंडे स्पर्शसे वो सो जाता है। ड्रागण आग है। तो क्रिस्टल बर्फ की तरह शितल है। दोनों ड्रागण के पास जाकर निवेदन करते है। ड्रागणको पहले से ही पता था। उसने इन्कार कर दिया। तब क्रिस्टल ने अपने जादू से उसे सुला दिया तब सनशैण ने वो चष्मा जो ड्रागण के आंखोपर था। उसे लेकर देखातो किताब ड्रागण के जीबके निचे है। पर वे दोनो उस किताब को नह लिया। ड्रागण जब उठा तो ड्रागण से क्रिस्टल ने कहा, आप सो गयए ते। हमने आपका चष्मा लेकर किताब को देखा। हम उस किताब को ले जा सकते थे। पर हमें आपकी इजाजत चाहिए। हमारा प्यार उतना भी कमजोर नही है। ड्रागण उनकी इमानदारी से खुश हुआ। पर उसने कहा उस किताब में कुछ जानकारी से भला है। उसी किताब से हम कुछ जानकारी से उस किताबका गलत इस्तमाल कर सकते है। अगर वो किताब कुछ ऐसे लोगों के हाथ में चला गया, जो इस जानकारी का गलत फायदा उठा सकते, तब अनर्थ हो जाएगा। ये किताब जिसे चाहिए वो मुझे पता है। उसके इरादे नेक नही है।

सनशैण को ज्ञान की गलत इस्तमाल वाली बात समझ में नही आती है। तब ड्रागण ने बताया अब साप अपने विष का इस्तमाल अपने बचाव के लिए करता है। पर इन्सान को ये पता चल गया तो वो उस विष का गलत इस्तमाल करने लगा। और हर चीजद्रव्य की बनी है। और उसके छोटे अंश को अटम कहते है। जब अटमका न्यूक्लियस टूटकर बहुत सारे न्यूक्लिऐ बन जाते है। तब न्यूक्लियर एनर्जी पैदा होती है। इस प्रक्रियाको फूजन कहते है। बहुत सारे अटम का फूजन

एक भयानक एनर्जी पैदा करता है। दरअसल एक ग्राम यूरेनियम २३५ की फूजन उतना ही एनर्जी पैदा करता है, जितना तीन टन कोयला जलाने से एनर्जी पैदा होती है।

यूरेनियम के फुजन से जो एनर्जी पैदा होती है। उसे बिजली बना ने के लिए इस्तमाल किया जा सकता है। और वो पावर मशिन बनाने के लिए इन्सान की मेहनत बच जाएगी। इसका भयानक हथियार भी बनाया जा सकता है। उस से शहर, राज्य बरबाद हो जाएंगे। इस तरह ड्रागण ने बताया। क्रिस्टल, सनशैण ने वादा किया कि उत्तर के राजा इस किताब को गलत इस्तमाल नही करेंगे। ड्रागण मुस्कुराया और वो भी उन के साथ उत्तर के राजाके पास आया पर वो किसीको नही दिखता। जब राजाने किताब को लिया तो अपने बेटीका विवाह सनशैण के साथ करने को इन्कार कर दिया। व उसका विवाह सनसेट के साथ करना चाहता था। क्योंकि उसके

पिता आधा राज्य देने का वादा किया। और राजउस किताब का गलत इस्तमाल करने जा रहा था। क्रिस्टल हैरन होकर बहुत दुःखी हई। तभी ड्रागण बाहर निकल कर राजा को मार देता है।

ड्रागण वो किताब क्रिस्टल, सनशैण को सोंपता है। जो भी हानीकारक इस्तमाल करनेके पन्ने थे। उन्हे फाड दिया। और हमेशा सही इस्तमाल करने को कहा। क्रिस्टल का ताजपहनन`का वक्त आ गया था। क्रिस्टल का राज्याभिषेक होता है। दोनों का विवाह हो गया। अब ड्रागण का जाने का समय आ गया था। उसने दोनौंको आशीर्वाद देकर फिर से पहाडीपर चला गया और गायब हो गया। जब वो गायब हुआ ते कुछ फूलों के पंख पहाडीपर गिरे जिस से पता चलता हैकि वो एक भगवान के भेजा हुआ दूत था। यहा ड्रागण ने क्रिस्टल, सनशैण को किताब ऐसे ही नही दिया। वो उन्हे पहले से जानता था। देखता था। उनका निर्मल हृदय, इसीलिए ड्रागण ने अपने वंश के रुप में उन्हें चुना था।

क्रिस्टल, सनशैण ने दूर दूर तक ज्ञान बाटा और मानव जाती के विकास के लिए ज्ञान का उपयोग किया। उन्हों ने पहाडोंमे ए सुंदर मंदिर बनवाया और ठीक उसी पहाडी के बीचमें एक मूर्ती बनायी। उसी महान, बुध्दीमान ड्रागण की है। आजभी दूरदूर तक लोग उस मंदिर को और उस मूर्ती को देखने आते है। ठीक उसी दिन जिसदिन ड्रागण गायब हुआ था। एक बडा सा उत्सव मनाया जाता है। ये वही ड्रागण हैजिस ने ज्ञान की किताब के जारियए मानवजातीको ज्ञान बांटा और इन्सानों को अपने आप बेहत्तर बननेका राह दिखाया।

मूर्ती ठीक उसी तरह की चष्मा पहना हुआ है। माना जाता हैकि वो आजभी दुनिया को देख रहा हैऔर बुराईयों को खतम कर रहा है।

संदेश :

हमे हमेशा उदरवादी होना चाहिए। दूसरो की भलाई के लिए हमें हमारा जीवन बिताना है।

बुरे विचार, इरादों वालों की हमेशा बुरा अंत होता है।

अटूट बंधन

एक सुदूर पहाडी तटपर खेतियर गाँव था। उस गाँव में येल्सा नामकी एक हसमुख लडकी रहती था। उसके माता पिता ने उसे गोद लिया था। उसके माता-पिता ये बात येल्सा को कभी नही बताये। वो अपने दो भाईयों के साथ हसीखुशी रहती थी। पर उसके आंदर कुछ सवाल थे। वो अपने माता-पिता से हमेशा पूछती थी उसके बाल उसके माता-पिता जैसे नही है। सुनहरे हैऔर चेहरा भी दोनों के जैसे नही है। पर उसके माता-पिताने कहा तुम जैसे भी हो तुम हमारी बेटी हो। हम तुमसे बहुत प्यार करते है। येल्सा को डोसा और शहद, पनीर बहुत पसंद था। पर उसके भाईयों को पसंद नही था। येल्सा एक दिन जंगल में घूमने चली गई।

वहां के फूलों को देखकर वो मोहित हो गई और सोचने लगी की अगर वो उन फूलों को लेजाकर उसकी मां को देगी तो उसकी मां कुछ पैसे कमा पायेगी। येल्सा सारे फुल इकट्ठे करने लगी और कुछ देर आराम करने पेडके नीचे बैठ गई। पता ही नही चला की उसकी आँख कब लग गई। इस तरह अंधेरा हो गया। येल्सा जब उठी तो वो डर गई, वो अंधेरे में रास्ता ढूंढने लगी। इस तरह ठंडे हवा के कारण वो और भी जंगल में चली गई। एक महल के सामने आ गई। उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया और वो बहुत कांप रही थी। दरवाजा खुलनेपर एक लंबा आदमी का साया दिखाई दिया। तभी येल्सा बेहोश पडी, जब वो उठी तो अपने आपको एक मखमली बिस्तर पर पायी। उसके सामने गरमा गरम खाना रखा हुआ था। वो खाना खाके उस इन्सान को धन्यवाद कहना चाहती थी। जब वो इन्सान को धन्यवाद किया तो वो खासते हुए कहा, तुम अब ठीक लग रही हो तो तुम अपने घर जाओ। तुम्हारे माता-पिता इंतजार कर रहे होंगे। वो चुपचाप वहांसे चली आई। जब व अपने माता-पिता से मिली तो वो सारी बात बताई। पर उसने लंबे आदमी के बारे में नही बताया। उसके माँ ने कहा, हमे उन पैसों की जरुरत नही है। जिससे तुम्हारी जान दावपर लगे।

येल्सा घर में बैठे-बैठे उस आदमी के बारे में सोचने लगी। उसे वो आदमी बहुत दयालू लगा था। येल्सा ने सोचा उसके माता-पिता तो खेत गये है। जब तक वो नही आते तबतक वो उस आदमी से मिल आयेगी। येल्सा फिर से उस जंगल के ठंडी हवाये चलनीवाली उस जगह पर गई। उस आदमी ने कहा, तुम फिर से क्यों आई हो,

येल्सा ने कहा, तुम्हें धन्यवाद कहना था। आदमी ने कहा, तुम तो कल ही कह चुकि हो, फिर आजभी क्यों? कहकर आदमी ने पूछा इस तरह येल्सा आंदर जाकर सुप बनाकर ले आती है। आदमी पहले उस सूप को मना करता है। बादमें ले लेता है। क्योंकि वो सचमुच बिमार था। खास रहा था। उस सूप से उसे अच्छा लगने लगता है। इस तरह आदमी ने येल्सा को अपना नाम आल्फ्रेड बताया। येल्सा रोजआल्फ्रेड से मिलने आती और नई-नई बाते सिखती। आल्फ्रेड उसे कहानिया सुनाता। इस तरह दो साल हो गये। येल्सा अब अठराह साल की हो गयी। एक बार येल्साके गांव में बाढ के कारण सारे फसले डुब गये। येल्सा ने ये बात आल्फ्रेड को बताई और आल्फ्रेड ने आल्फ्रेड सोना और जवारातों से भरा एक बडा सा बैग दिया। येल्सा को उस धन को सारे किसानों को छुपकर देने को कहा। येल्सा ने वैसाही किया। अब सारे किसान खुश हो गये। उन्हें लगाकी स्वयं भगवानजी नेही उनकी मदत की। येल्सा ने आल्फ्रेड को धन्यवाद कहा और दयालू कहा। पर आल्फ्रेड कहा की वो दयालू नही है। और इस तरह वो अपनी सारी कहानी सुनाता है। एक समय में आल्फ्रेड अपने पत्नी के साथ उसी घर में रहता था। वो बहुत लालची और निर्दयी इन्सान था। उसके घर में एक जश्न चल रहा था। तब उसके दरवाजे पर एक बूढी औरत आकर अपने लिए खाना और एक रात की पनाह मांगती है। पर आल्फ्रेड ने उसे मना कर दिया और वो औरत एक परी के रुप में बदल गयी। उंकी पत्नी ने आल्फ्रेड को समझाया की ऐसा मत करो, पर आल्फ्रेड नही सुना। वहां ठंडे हवाये चलने लगी और वो परी आल्फ्रेड को उन सर्दियों में

रहनेका श्राप दिया। उसने कहा कि, उसकी पत्नी ओलिव्या दयालू है। पर आल्फ्रेड ओलिव्या के प्रेम के लिए हकदार नही था। इसीलिए ओलिव्या को परीने गहरी नींदमें जाने का श्राप दिया। इस तरह आल्फ्रेड अब तक श्राप से बंधा है। येल्सा ने कहा, नही आप दयालू इन्सान हो। येल्सा ने आल्फ्रेड से पूछा की क्यो वो उस की पत्नी को देख सकती है। आल्फ्रेड येल्सा को अपनी पत्नी के पास ले गया। वो बर्फ के बक्से में गहरी नींद में थी। जब आल्फ्रेड रोते हुए, अपनी येल्सा को दिखाया तो श्राप टूट गया। ओलिव्या उठ गई, जब ओलिव्या उठी तो उसे सब कुछ याद आ गया। उसे आल्फ्रेड सारी

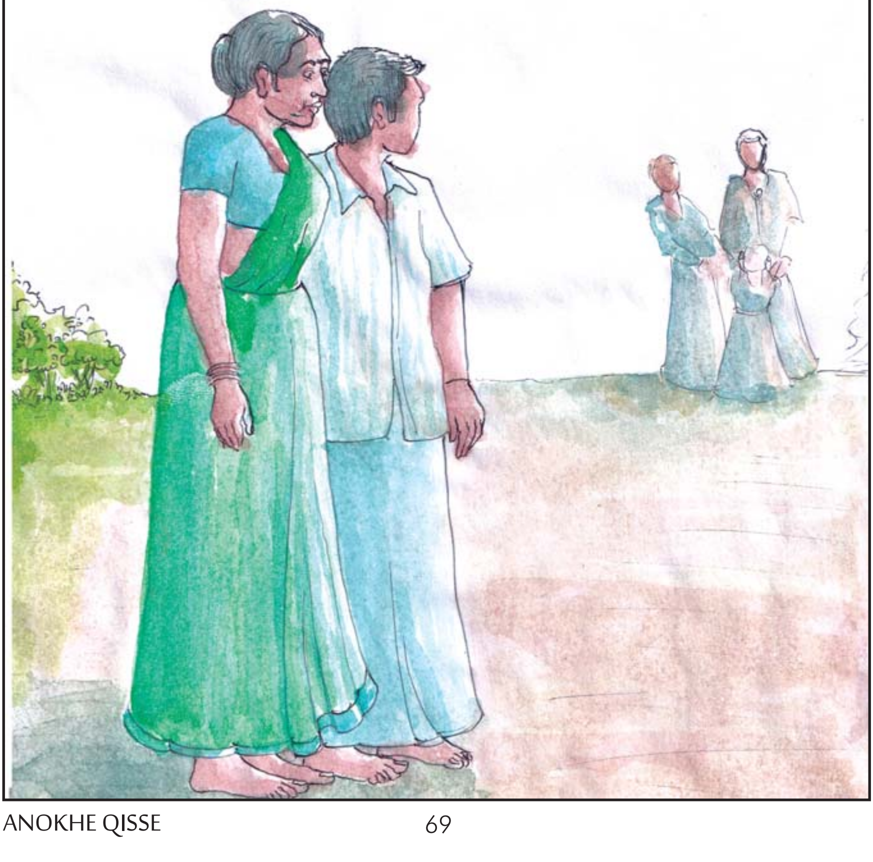

कहानी बताया। ओलिव्या येल्साको अपनी बेटी कह रही था। पर आल्फ्रेड ने कहा की ये येल्सा है। और ये बहुत दयालू है। पिछले दो साल से यहा आया करती है। ओलिव्या और आल्फ्रेड की एक बेटी थी। उन्हों ने श्रापके कारण उसे एक पती-पत्नी को दिया।

तभी बाहरसे येल्सा की माँ की आवाजसुनाई पडती है। तो येल्सा बाहर आती है। तभी ओलिव्या को येल्साकी माँ पहचानकर गले लगाती है। क्यों कि वो पती-पत्नी ये दोनों ही थे, जिस ने ओलिव्या, आल्फ्रेड की बच्ची को गोद लिया था। तब येल्सा हैराण हो जाती है। येल्सा की माँ कहती हैकि ओलिव्या ही उसकी माँ है। तब येल्सा पूछती है, अगर ओलिव्या उसकी माँ हैतो वो कौन है। येल्साकी माँ सच बताती है। हम ने तुम्हे गोद लिया और इतने साल हिफाजत से बडा किया पर बेटी तुम हमारी अपनी औलाद से भी बढकर हो। कहकर येल्सा को गले लगाते है। ओलिव्या, आल्फ्रेड भी अपनी बेटी को पाकर खुश हो जाते है। इस तरह येल्सा अपने असली माता-पिता के साथ खुशी-खुशी रहने लगती है। वो कभी-कभी अपने भाईयों से भी मिलने जाती। पर वो खुश थी कि उसे वो स्थान मिल गया। जो स्थान येल्सा को अपना लगता था। अंतमें आल्फ्रेड को भी दयालुता, उदारता महत्व पता चला।

संदेश :

दयालुता और विनम्रता वो होती है, जो जीवन में सच्ची बहार और आनंद लाती है। इसीलिए हमें ये गुण कभी नही छोडने चाहिए।

ब्यटी और बीस्ट

एक घर में तीन बेटीयों के साथ एक आदमी रहता था। उसकी दो बेटीयां बहुत लालची, खुदगर्ज थी। पर उसकी सबसे छोटी बेटी बहुत सुंदर भी थी और बहुत दयालू और अच्छी थी। वो अपने पिताजी से बहुत प्यार करती थी। वो अपने घर का सारा काम करती, पर उसकी दोनों बहनें सिर्फ अपनी सुंदरता और कपडों को देखते रहते, पर उन दोनों से भी ब्यूटी बहुत सुंदर थी। इसीलिए उसके मांने मरने से पहले अपने छोटी बेटी को ''ब्यूटी'' कहकर नाम रखा। इसीलिए दोनों बहने ब्यूटी से जलती थी। एक दिन ब्यूटी के पिता को समाचार आया कि, उस के सारे जहाजडूब गये है। और अब वो लोग गरीब हो गये है। इसे सुनते ही ब्यूटी के पिता दु:खी थे। पर ब्यूटी की बहने थोडा बहुत परेशान थी।

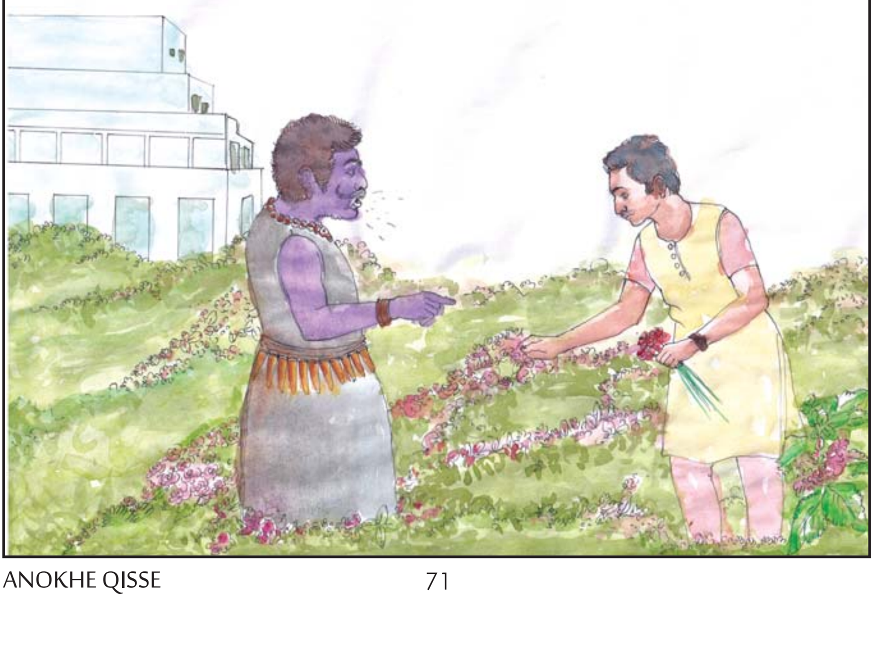

वो लोग अपने पिताजी को बाते सुना रहे थे। भला बुरा कहते रहे कि, अब वो कैसे जिये पर ब्यूटी उस दिन घर का सारा काम किया। पिताजी को और एक खबर मिली की उसकी एक जहाजबच गई है। पिताजी को और उम्मीद जाग गयी। वो जाते, जाते अपने बेटियों से पूछा की उन्हें क्या चाहिए? दोनों बेटियां अपने लिए कपडे, गहने मांगी पर ब्यूटी ने एक गुलाब का फूल मांगा। ब्यूटी के पिता जहाजके पास जाकर देखातो वहा जहाजकिसी काम का नही था। उसमें जो भी सामान था वो चोरी हो गया था। ब्यूटी के पिता निराश होकर लौटे औरे इसी तरह वो एक क्यासेल के पास पहुँचे, वो क्यासेल थोडा अजीब था। उस में जाते ही उन के लिए गरम खाना तैयार था। और सोनेके लिए मखमली बिस्तर भी तैयार था। सुबह हुई उनके लिए नये कपडे रखे हुए थे। उन्हों ने पहनलिया और उनके लिए जोभी नाश्ता रखा था, उन्हो ने खा लिया। ब्यूटी के पिता उसे धन्यवाद कहना चाहते थे। जिसने उन की इस तरह मदत की। वो बाहर गये और सोचने लगे, अपने दो बेटीयों के लिए तो कुछ भी लेके नही जा रहा कम से कम ब्यूटी के लिए एक गुलाब का फूल लेता हूँ कहकर बगीचे मेसे एक फूल तोड लिया। तभी वहां एक भयानक बीस्ट आ गया। उसे देखते ही ब्यूटी के पिता का बहुत बुरा हालत हुआ। उसने उन्हे मारने की धमकी दी, पर वो कहने लगे मैं तो सिर्फ अपनी तीसरी बेटी के लिए एक गुलाब का फूल लेके जा रहा था। वो विनती करने लगे की उन्हें बक्ष दो। बीस्ट ने एक शर्त पर उन्हे छोडा वो था कि वो अपने किसी एक बेटी को बीस्ट के पास रहने के लिए छोड दे। तभी वो उन्हें छोड देगा। नही तो बीस्ट उन्हें मार देगा। वो

आदमी घर आकर सारी बात अपने बेटीयों को बतया। उसकी दोनों बेटीयां इस बात को नजर अंदाजकर दिया, पर ब्यूटी ने कहा कि वो उस बीस्ट के पास चली जायेगी। उस की दोनों बहनें भी खुश हुई और कहने लगी ये सब ब्यूटी के वजह से ही तो हुआ है। इसीलिए ब्यूटी को ही जाना होगा। पिता भारी मन से अपनी बेटी को बीस्ट के पास ले गया। वो दोनों जब पहुंचे तो उन के लिए खाना तैयार था। उन्हो ने खाना खाना शुरु किया, तभी वहा बीस्ट आया। वो ब्यूटी से बहुत विनम्रता के साथ पूछा की वो यहां अपनी मर्जी से आयी है? ब्यूटी ने हां कहा। बीस्ट कहा, तुम्हारे पिताजी कल सुबह यहाँसे चले जाएंगे और कभी नही आयेंगे। ब्यूटी उदास होकर सोने चली गई। जब ब्यूटी सुबह उठी तो उसके पिता जा चुके थे। उसने नाश्ता किया और चुपचाप बगीचें में घूमने लगी। वो गुलाब के फूलों को देख कर उदास हो गयी। जब वो क्यासेल में गई तो उसे एक कमरा दिखा, वो फूलों से सजा हुआ था। उस में किताबें, फूल और म्यूजिकल इन्स्ट्रुमेंटस थे। उसे लगा की, जो कमरे को इतनी अच्छे से सजा सकता है। वो किसीको नुकसान नही पहुँचा सकता। उस के सामने एक आईना था। जब उसमें अपने पिता को याद किया उस आईने में उसे अपने पिता दिखे। इस तरह वो अपने पिता को उस आईनेंमें रोजदेखती थी। बीस्ट उसे रोजशादी के लिए पूछता और वो उसे मना करती। बीस्ट सोचता था, शायद उसकी भयानक शकलकी वजह से वो उसे मना कर रही है। ब्यूटी सोचती हैकी शायद वो थोडा खुबसुरत होता तो, उसे वो शादी करती। ब्यटी को बीस्ट से अब डर नही लग रहा था। उसके साथ वो अच्छे से रहने लगी। बीस्ट ब्यूटी

का बहुत अच्छे से खयाल रखता। अब ब्यूटी बीस्ट को पसंद करने लगी थी। एक दिन ब्यूटी आईने में अपने पिता को बिमार देखा। तो वो बीस्ट से अपने घर जानेको पूछा, उसने कहा की वो एक हप्ते में लौट आयेगी। बीस्ट ने उसे एक अंगूठी दी और कहा, अगर वो एक हप्ते में लोटकर नही आती हैतो उस के याद में अपना दम तोड देगा। ब्यूटी ने कहा की वो एक हप्त`में लौट आयेगी। ब्यूटी ने बीस्ट के दी हुई अंगूठी सोते समय पहन लिया और सुबह अपने घर में थी। उसे देखकर उसके पिताजी की बिमारी दूर हो गई। उसकी दो बहने भी आई हुई थी। जिनकी अब शादी हो चुकी थी। उनकी शादी ब्यूटी के पिता ने बीस्ट के दिये गये धन से किया। बीस्ट ने ब्यूटी के पिता को

जाते जाते बहुत सारा धन दिया था। पर ब्यूटी के बहनों ने ब्यूटी के सामने बहुत रोया और उन्हो ने कहा की अब वो साथ रहेंगे। इस तरह ब्यूटी के बहनों ने उसे एक और हप्ता रोक लिया। ये सोचंके की, अगर ब्यूटी यहाँ रुक गयी तो बीस्ट गुस्से में आकर उसे मार देगा। पर कुछ दिन के बाद ब्यूटी को बीस्ट की याद आयी। वो अपने सपने मे देखा की बीस्ट वहा क्यासेल के गार्डन में बेजान पडा था। ब्यूटी ने तुरंत वो पहनी हुई अंगूठी को निकल दिया और वो क्यासेल पहूंच गयी। ब्यूटी ने बहुत देर तक बीस्ट का इंतजार किया पर बीस्ट नही आया। थोडी देर के बाद ब्यूटी जब गार्डन मे गई तो, उसे बीस्ट नीचे बेजान पडा दिखाई दिया। जैसे वो ब्यूटी के सपनें मे था। ठीक वैसा ही पडा था। ब्यूटी ने बीस्ट के पास जाकर गले लगी और ब्यूटी से बीस्ट ने कहा, मुझे लगा कि तुम अब नही आओगी। इसीलिए वो मर नेका इंतजार कर रहा था। ब्यूटी ने उसे पूछा की क्या वो उस से शादी करेगा? तभी क्यासेल की सुंदरता दुगनी हो गई। ब्यूटी ने जब बीस्ट को देखा तो वहा एक सुंदर युवराजथा। ब्यूटी परेशान हो गई ओर उस ने पूछा की यहा तो बीस्ट था। तो उसने बताया कि वोही बीस्ट है। उसे श्राप दिया गया था। उस ने एक चुडैल को युध्द में हराया और वो चुडैल उसे वो श्राप दे दिया था। उसे पता था। जब उसे उस का सच्चा प्यार मिल जाएगा, वो उस श्राप से मुक्त हो जाएगा। इस तरह ब्यूटी बहुत खुश हुई और दोनों ने ब्यूटी के पिता के पास जाकर आशीर्वाद लिया फिर दोनोंने शादी करली और अच्छे से उस क्यासेल में रहने लगे।

संदेश :

कभी कभी सच्चा और साफ दिल सुंदरता को पीछे छोड देता है।

केवल सुंदर दिख ना ही काफी नही, असली सुंदरता होती है, साफ दिल में, अच्छे विचारों में, अच्छी आत्मा में।

किसी को हम जबर्दस्ती अपना नही बना सकते। किसी से प्यार करने के लिए उनकी मर्जीभी उतनी ही जरुरी है, जितनी की खुदकी।

एहसानमंद राजकुमार

एक राजा अपने राज्य पहुंचते ही जंगल में भटक जाता है। वो बहुत रास्ता ढूंढने की कोशिश करता है। पर उसे जंगल से बाहर निकलने के लिए रास्ता ही नही मिलता। वो बहुत परेशान होता है। तभी उसे एक बूढा आदमी दिखाई देता है। वो आदमी झुका हुआ था। उस के हाथ में एक लकडी थी वो उस लकडी के सहारे चलता था। उस की दाडी नीचे तक पहुंच रहा था। वो राजा से पूछा कि वो यहा क्या कर रहा है। राजा ने कहा मैं एक राजा हूँ। ये जंगल मेरा है। पर मैं इस जंगल में भटक गया हूँ। ये सुन के बूढा आदमी ने कहा ये जंगल मेरा है। मुझे जंगल के हर रस्तो पता है। मैं तुम्हे इस जंगल से निकाल सकता हूँ। पर उसके लिए तुम्हे मेरे एक शर्त मानना पडेगा, जबतुम अपने राज्य पहुँचेगे तो जो भी तुम्हारे राज्य के दरबार में से बाहर निकले गा, उसे तुम मेरे हवाले करोगे।

राजा को उस जंगल से बाहर निकल कर उसके बेटे और पत्नी को मिलना था। इसीलिए राजा ने बिना सोचे समझे बूढे आदमी के हाथ में हाथ दिया। बूढा आदमी राजा को एक ऐसी रास्तेसे लेके गया, जिस में झील, जैसे पार करने थे। राजबूढे आदमी के राफ्तार देखकर हैराण रह गया। बूढा आदमी जैसे कहा था। ठीक वैसा ही राजा को जंगलमे से बाहर निकाला और राज्य को पहूँचा दिया। राजा के लिए सारी प्रजा और रानी अपने बेटे के साथ राजा के स्वागत में खडी थी राजा कुछ कहता उससे पहलेही रानी अपने बेटे के साथ राजदरबार से बाहर आ गई। राजाके हाथ में बेटे को दे दिया। बूढे आदमी दूर खडा था। और उस को पहले राजा के बेटा दिखा। पर बूढे आदमी को पता नही था कि वो एक लडका हैया लडकी और वो वहांसे जंगली तरफ चला गया। राजा उदास था। रानीने राजाकी उदासीका कारण पूछा राजाने सारी कहानी बताई। पर राजा को अपने बेटे को उस बूढे आदमीको देना मंजूर नही था। वो मंत्री को बुलाकर ठीक उसी दिन, जब राजाके बेटे का जन्म हुआ था। तब राज्य में कोई बच्चेका जन्म हुआ था। मंत्री नेकहा एक किसान पती पत्नी को बुलवाया और उन से सारीबात बता कर उनसे अपने बेटे के जिंदगी का भीक मांग ने लगा। किसान पती, पत्नी ने राज्य की भविष्य के लिए राज्य की वंशको आगे बढाने के लिए अपने बेटी को राजा को दे दिया। राजा ने किसान परिवार का देखभाल करने का वादा किया।

राजा ने अपने घोडे पर राजदरबार में से बाहर आकर एक टोकरी में बच्ची को रखा गया था। एक सफेद कपडे में उस टोकरी

को उस बुढे आदमी को दे दिया। वो बूढा आदमी टोकरिको लेकर शैतानी हंसी के साथ जंगल में चला गया। राजा अपने राज्य का अच्छे तरहसे पालन करने लगा। राजा का बेटा बडा हो गया और वो एक होशियार और सुंदर युवक था। उसे अपना राज्य बहुत अच्छा लगता था। वो अपने साथी से हमारा राज्य के प्रजा को अच्छा खाना है, रोजगार है। एक राजाको अपने प्रजा के लिए इससे अच्छा क्या हो सकता है। कहकर कहते हुए जा रहा था। तभी किसान की पत्नी ने क्रोधमें राजकुमार के पास आकर कहने लगी, हाँ तुम्हारे पिता एक अच्छे राजा है। परंतु वो ये सब कुछ हमारे लिए किया है। पर उन्हों ने ये सबकुछ किस के कीमतपर किया है। जाओ जाकर अपने पिता से पूछो की मेरी बेटी कहा है, कहकर रोने लगी। राजकुमार भोजनके मेजपर अपने पिताको पूछा सारा सच इमानदारी से बताने के लिए कहा। राजा ने अपनी जंगल की कहानी बताई तब राजकुमार ने उस किसान पती पत्नीकी बेटीको वापस लानेका फैसला किया। जिस ने उस की जिंदगी बचायी। राजा ने भी अपने बेटे को आशी र्वाद दिया। इस तरह राजकुमार एक मामूली आदमीकी तरह अपना वेश बदलकर एक थैली मं कुछ बीजलिया, क्योंकि अगर वो रास्ता भटक गया तो बीजउसे सही रास्ता दिखायेंगे इस तरह राजकुमार जंगल मे एक पेड के निचे आराम कर रहा था। तभी वहा एक बूढा आदमी आ गया। राजकुमार उसे देखकर पहचान लिया वो ठीक उसी तरह था। जिस तरह उसके पिता ने बताया था। राजकुमार उस बूढे आदमी से काम मांगने लगा और कहने लगा की वो बहुत दिन से भूका है। बूढा आदमी ने उसे

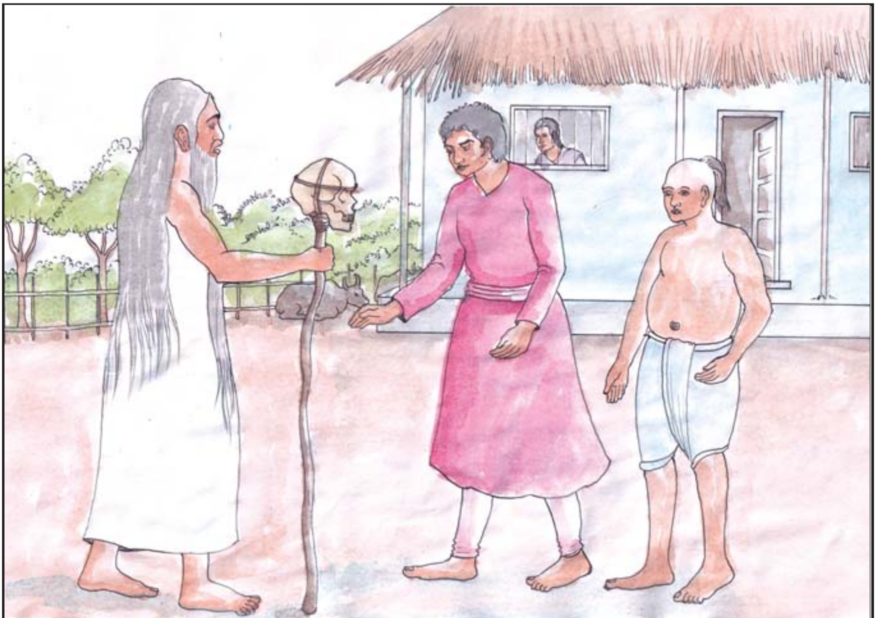

देखकर सोचा कि वो उसके काम आयेगा। राजकुमार को बूढा आदमी अपनी जादू से अंधा कर दिया और उसके साथ पकडकर अपने घर ले गया। बूढा आदमी ने राजकुमार को कहा कि, उसे सारे नियमों के पालन करने होंगे। अगर वो ऐसा नही करेगा तो उसे काम से निकाल दिया जाएगा। राजकुमार परेशान था। कि आगे क्या होगा। इस तरह वो सो गया। जब सुबह हुई तो उसे एक लडकी ने जगाया। वो कहने लगी अगर वो बूढा आदमी यहा आ गया तो उसका खाना मुश्कील हो जाएगा। इसीलिए उसने राजकुमार को खाना दिया। राजकुमार उस लडकी को देखते ही पहचान लिया वो जरुर उन किसान पती- पत्नी की बेटी है। बूढा आदमी ने राजकुमार को कई काम बताये, जैसे कि झील से पानी लाना, उंचे पेड से फल काटना, बूढे आदमीके घर में एक ट्रोल था। उस के पैर धोना, बूढे

आदमी को ब्रश करवाना। इस तरह बहुत सारे काम करनेको कहा। जब खाने का समय हो गया तो, उस लडकी ने सब के लिए मेजपर खाना लेकर आने लगी। राजकुमार अंदर, बाहर आते जाते हुए, उसी लडकी को देखता रहा। खाने के बाद बूढा आदमी राजकुमार को एक हप्ते के लिए गाईका घास एकही दिन में काटने को कहा। राजकुमार परेशानी में पड गया, तब उस लडकी ने उस की मदत की। उस ने एक उपाय बताया। राजकुमार दो घोडों को खेत में ले जाकर, पहले कुछ छोटे छोटे घास के टुकडे काटकर उन्हें बांधकर घोडे पर चडकर एक कुल्हाडी को हाथ में लेकर, उस घास के तुकडे को घोडे के सामने पकड कर कुल्हाडी से घोडे पर सवार करते हुए घास काटने लगा। इस तरह राजकुमार एक ही दिन में सारा घास काटलिया। जब राजकुमार को बूढा आदमी खेत से वापीस लौटते हुए देखा तो गुस्सा हो गया। लडकी मुस्कुराने लगी। दूसरे दिन बूढा आदमी ने दो हप्ते के लिए पिने के लिए दुध गाईसे निकालने को कहा। राजकुमार परेशानी में था। वो एक दिनमें दो हप्ते का दूथ वो भी पूरा का पूरा कैसे निकाल सकेगा। जब राजकुमार दूध निकाल ने गाई के पास गया तो गाईके लाते खाने लगा। राजकुमार फिर से उस लडकी के आने का इंतजार में था। तभी वहा लडकी आती है। वो आग जलाती है। राजकुमार बीच बीच में अपने हाथ सेकते हुए सारा दूध निकाल लिया। इस तरह बीस बाल्टी दूध निकाल लिया। जब बूढा आदमी आके देखा तो उसे बहुत गुस्सा आया। वो कहने लगा, मैने तुम्हें पहले ही कहा था कि किसी की भी मदत नही लेना है। तुम्हें अकेले ही सारे काम करने होंगे। पर

तुमने उस लडकी का मदत लिया। तभी ट्रोल कहता है। अगर तुम्हे सजा देना हैतो मुझ दो। मैने ही इसका मदत किया है। बूढा आदमी अपने असली रुपमें आकर ट्रोल को बंदी बना लेता है। लडकी को भी बंदी बनाता हैऔर राजकुमार को सुबह चले जाने को कहता है। तभी लडकी कहती है। अगर उसकी छडी तोड देतो वो मर जाएगा। राजकुमार कुल्हाडीसे ट्रोल के पिंजरेको तोड देता है। ट्रोल, राजकुमार घर के अंदर खिडकी से जाते है। लडकी को बचाने क्योंकि राजकुमार लडकी से प्रेम करता था। बूढा आदमी लडकी को पकड रखा था। तभी ट्रोल, राजकुमार आगे बढने लगते है। तो बूढा आदमी अपना जादू उन पे इस्तमाल करता है। राजकुमार, बूढा आदमी को धक्का मार के उस जादूई छडी को तोड देता है। तभी वो आदमी फिर से अपने रुप में आ जाता है। तभी राजकुमार कहता है, अब तुम्हारी नियम, काम किसी के भी पालन करने पडें गे अब तुम्हें सुन ना होगा। जैसे मैं कहता हूँ ठीक वैसे ही। मैं तुम्हारा राजकुमार हूँ। अब तुम कही भी नही दिखो गे। कहकर तीनों चलने लगते है। तो राजकुमार ने आते वक्त जो भी बीजफेंके थे। उन के छोटे छोटे गुलाब के पौधे बन गये थे। इस तरह राजकुमार लडकी को अपने माता-पिता से मिलाता है। अपने माता, पिता से कहता हैकि वो उस निडर, हिम्मत वाली, सुंदर, होशीयार लडकी से शादी करना चाहता हूँ। इस तरह दोनों की शादी होती है। सारी प्रजा के मन में प्रेम जाग उठता है। सब लोग उन्हें सच्चे मनसे आशिश देते है।

संदेश :

हमे हर समय होशियार और निडरता से काम करना चाहिए।

हमारी हिम्मत और धैर्य हमारा सदैव रक्षा करता और किसी भी हालात से बाहर निकालता हैं।

भगवान सब की भला करते है। थोडा देरसे ही सही पर अच्छे लोगों का अंत अच्छा ही होता है।

भगवान के घर देर है। पर अंधेर नही।

खोई हुई परी

ये कहानी पवित्र प्रेम और विश्वास की है। गरमी को मौसम के सुंदर सुबह में राजा कोंट एलरिक अपने घोडे पे अपने राज्य के तरफ सवार थे। उन्हें एक खेत में एक सुंदर युवती दिखाई दी। उन्हों ने उसे पूछा, आप ठीक है? आप यहां क्यों है? और आप को कोई चोट तो नही लगी? क्या आप बोल सकती है? युवती ने बोला मुझ कुछ नही हुआ है। मैं ठीक हूँ। राजा ने पूछा, आपका नाम क्या है? आप कहांसे आई है? युवती ने कहा कि उसे कुछ नही पता, उसे उसका नाम तक याद नही। बस वो सुबह की सुंदर दिखने वला महान सूरजको देखते रह गई और एलरिक उसे निहारते रह गया। ऐसा हुआ कि राजा को उस से प्रेम हो गया था। राजा ने उस की मदत करने को सोचा और उस ने युवतीसे पूछा, आप मेरे साथ चलो, मैं आप के माता-पिता, घर परिवार के बारे में पता लगाउंगा। तब तक आप हमारे राज्य में रह सकती है। युवतीने राजा के साथ चली गयी। राज्य में राजा अपने नौकरों से उस युवती का अच्छे से देखभाल करने को कहा। उस ने उस का नाम क्यातरिन रखा।

राजा ने क्यातरिन के बारे में पता लगाने की बहुत कोशिश की पर कुछ फायदा नही रहा। उस के बारे में कुछ भी पता नही चला। ऐसे ही कुछ महिने बीत गये। राजा ने सोचा की वो क्यातरिन से शादी करेगा। और इस से पहले वो अपने प्यार का इजहार करेगा। क्यातरिन भी राजा के उदार स्वभाव, दयालू गुण को देखकर शादी का प्रस्ताव के लिए मान गई। शादी बहुत धुम धाम से हुई। वैसी शादी उस राज्य में कही नही हुआ था। आखिर राजा की

शादी अपने प्रेमिका के साथ हो रही थी। सब लोग बहुत खुश थे, कि उन्हें एक अच्छी कैंटिस (राजकैट एलरिक की पत्नी कैंटिस होती है) जो मिल गई। पर क्यातरिन हमेशा किसी बात को लेकर चिंतीत रहती थी। और वो खोई उदास रहती थी। राजा को रानी की ये बात, ऐसी हालत देखकर बहुत बुरा लगता था। वो अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता था। इस तरह उनकी शादी का सालगिराह आ गया। राजा अपने प्रेमिका को कुछ ऐसा तोफा देना चाहते ते कि उसे देखकर रानी क्यातरिन खुश हो जाए। राजा को पता था। क्यातरिन अभी भी पूरी तरह से उनकी नही है। इसीलिए वो क्यातरिन को खुश देखना चाहता था। शादी के सालगिराह के दिन बडा उत्सव मनाया गया। किंतू क्यातरिन बहुत उदास थी। जब भी राजा क्यातरिन को उसकी उदासी के बारेंमे पूछता तो वो राजा का हाथ पकडकर

कहती, मैखुश हूँ प्रिय। मैं आपके साथ बहुत खुश हूँ। पर राजा को पता था की, वो किसी बात के बारे में हमेश सोचती थी। एक दिन राजा अपने कक्ष में आया तो क्यातरिन को नाचते हुए देखा और उसने क्यातरिनसे पूछा कि, अगर तुम्हें नृत्य आता हैतो तुम ने मेरे साथ क्यो नही किया। क्यातरिन को कुछ भी याद नही था। वो कहने लगी, मुझे एक मधुर धुन सुनाई देती हैऔर वो मुझे बुलाती है। एक दिन राजा जंगल में सवारी में था। उसे एक हैराण होनेवाला दृष्य दिखा। मधुर संगीत पर कुछ परियाँ नृत्य कर रही थी। उसमें उसकी पत्नी क्यातरिन भी थी। वो चौंक गया। तभी उसका घोडा दूर दौडने लगा, उस ने अपने घोडे को काबू में करके फिर से उस जगह पर आकर देखा तो वहा परियाँ गायब थी। उस ने तुरंत अपने राज्य पहुंचकर कक्ष में क्यातरिन को देखा तो वो सो रही थी। पर उस गुलाबी रंग का फ्रोक दिखाई दिया। वही फ्रोक जो क्यातरिन ने परियों के साथ नाचते समय पहना था। राजा आपने सवालों की जवाब के लिए ''माम्डा के'' पास गया। क्योंकि कौंट को माम्डा पर भरोसा था। कौंट ने माम्डा को सारी बात बताई। माम्डा इस ब्रम्हांड मे सारी रहस्य जानती थी। पता लगाती थी। माम्डा कौंट की बाते सुनकर कहा की, उसकी पत्नी एक परी है। जो अपन साथीया ेसे बिछड गयी थी और पिछे रह गई थी। इसीलिए वो हमेशा उदासी में रहती है। उस के साथी अब भी उसे बुलाते हैं। वो हर रात उन के साथ नृत्य करने चली जाती है। जब वो अपने साथीयों के साथ रहती हैतो बहुत खुश होती है। पर एक दिन ऐसा भी आयेगा कि वो रात को लौटकर नही आयेगी। इसका मतलब वो अपने लोक मं जा चुकी

होगी। राजा ने ये सब सुनकर दुःखी हो गया। वो माम्डा से इस का उपाय पूछा। माम्डा ने कहा, इस के लिए तुम्हारा सच्चा प्रेम और विश्वास ही काफी है। उसने कहा की कौंट को अपने प्यार को संपूर्ण बनाना होगा। ये सब वक्त के साथ होगा। राजा हर रात परेशान होता। इस तरह एक रात कौंट ने फैसला कर लिया कि वो क्यातरिन के पिछे जायेगा। उस ने वैसाही किया। जब क्यातरिन नृत्य कर रही थी तो कौंटने उस का हाथ पकड लिया। क्यातरिन कौंट से अपने हाथ को छुडाने की बहुत कोशिश की पर उस की शक्ती कम पड गई। क्यातरिन ने कह कि, वो नृत्य कर के चली जाएगी। पर राजा ने उसका हाथ नही छोडा। क्यातरिन ने अपने बहनों से शक्ति देने को कहा। क्यातरिन बडा सा पेड बन गई और शैतान बनी। पानी बनकर बहने की कोशिश की, आग बनकर राजा को जलाने की कोशिश की, फिर भी राजा ने पूरी विश्वास के साथ क्यातरिन का हाथ नही

छोडा। वो इस तरह सुबह तक हाथ को नही छोडा। तब क्यातरिन हार मानकर अपने लोक को जाने की कामना की, कौंट ने क्यातरिन को खुश देखना चाहता था। उस ने सोचा, क्यातरिन की खुशी उस के साथ नही, वो अपने लोक में ही ज्यादा खुश रहे गी। इस तरह कौंट दुःखी होकर क्यातरिन का हाथ छोड दिया और बिना पीछे देखे वो अपने घोडे पर सवार होकर, अपने राज्य पहुँचा, तो राजा के दरबारपे क्यातरिन खडी थी। राजा कौंट क्यातरिन को देखकर बहुत खुश हुआ। उसे अपने अतीत के बारे में कुछ भी याद नही था। वो अब बहुत खुश नजर आ रही थी। उस के आँखो में कौंट के प्रति अटूट प्रेम दिखा। इस तरह माम्डाने जैसे कहा था। वैसाही सच्चा प्रेम और विश्वासका ही जीत हुआ। अब राजा कौंट एलरिक और क्यातरिन बहुत खुश रहने लगे।

संदेश :

संपूर्ण प्रेम वो होता है। जब आप किसी की खुशी से अपनी खुशी से भी ज्यादा प्रेम करे।

नीले पर्वतों की राजकुमारी

एक घने और अंधेरे, गहरे जंगल में एक जादूई महल था। उस जंगलमें दो आदमी भटक गये और रास्ता ढूंढ ने लगे इसी तरह रात हो गई। वो दोनो थक गये थे। उन्हें बहुत भूक और प्यास भी लगी थी। वो लोग भयानक जंगल के जंगली जानवरों से डरकर एक बडे से पेड पर अपनी रात गुजारी। सुबह होते ही उन्हें जादूई महल दिखा और वो लोग महल के पास चले गये। बाहर से घंटी बजाते ही दरवा जे अपने आप खुल गये। अंदर एक औरत थी। उसने उन दो आदमीयों से कहा, तुम लोग बहुत भूके होंगे, वो औरत उनके लिए अपने जादू से पकवान तैयार किया। वो लोग खाते ही बेहोश हो गए। उन दोनोंको एक कमरेमें हमेशा के लिए गहरी निंद मे सुलाया गया। ये सिलसिला ऐसा ही चलता रहा। एक दिन एक राजकुमार उसी अंधेरे, घने जंगल में भटक गया। और उस ने भी उसी पेडपर अपनी

रात बितायी। सुबह होते ही जादूई महल में गया। वो औरत उसे भी खाना दि और खाने को कहा। पर राजकुमार औरत से सवाल पूछने लगा, कि वो वहा क्यों है। क्या उसे कोई समस्या है। वो औरत उसे सिर्फ खाना खाने को कहा। पर राजकुमार ने कहा, जब तक वो अपने बारे में नही बताय`गी, तब तक वो कुछ भी नही खाये गा और पिये गा। तभी वहा का माहोल बदल गया। वो औरत राजकुमारी में बदल गई और कहने लगी, आजतक यहां बहुत से लोग आये और उन्हो ने खाना और पन्हा के लिए मांग किया पर तुमने एक सीधेसाधे करुणामय कार्य से मेरा सम्मोहन को नष्ट किया है। राजकुमार अपना नाम ''डार्विन'' बतायी और राजकुमारी अपना नाम ''हिना'' बताया। राजकुमारी जो भी लोग महल में नींद में जा चुके थे। उन्हे अपनी शक्ती से जगा कर भेजदिया और वो भी चली गई। जाते जाते राजकुमार से कल सुबह उस का इंतजार करने को कहा। राजकुमार पूरी रात नही सोया और वो राजुकमारी से बेपनाह, गहरा प्यार करने लगा था। पर सुबह होते ही वहा के नौकर ने राजकुमार के कपडे में एक सुई लगाया। उस सुई के चुभने से राजकुमार सुबह उठ नही पाया और गहरी निंद में चला गया। जब राजकुमारी ने आकर राजकुमार डार्विन के बारे में पूछा तो नौकर ने कहा कि, वो अभीभी सो रहा है। राजकुमारी हैराण रह गई और उसने नौकर से कहा, तुम राजकुमार को मेरा संदेश भेजदो कि वो कल आखरी सुबह आयेगी और तबा भी राजकुमार नही उठा तो वो उसे कभी नही मिल पायेगा। राजकुमार फिर से दूसरी रात सो नही पाया और उसने सोच लिया कि किसीभी तरह वो राजकुमारी से

मिलेगा। एक सुबह हुआ। नौकर ने फिर से राजकुमार को सुई चुभा दी। राजकुमार फिर से गहरी नींद में चला गया। राजकुमारी दूसरी सुबह राजकुमारसे मिलने आयी तो, नौकर ने कहा राजकुमार आजभी गहरी नींद में है। राजकुमारी बहुत निराश हुई क्योंकि वो अब राजकुमार से नही मिल पायेगी। राजकुमारी हीना ने जाते-जाते राजकुमार के लिए एक तलवार छोडकर चली गई। राजकुमार जब उठा तो वो बहुत दुःखी हुआ और वो उस तलवार को लेकर कई सालों तक जंगल में राजकुमारी के खोजमें भटकता रहा। तभी उसका कोट एक काटे से लगा। उसने उसे छुडाने के लिए काटेको काट दिया। तभी उस तलवार पे सूर्य की रोशनी पडने पर उसपे लिखी गई अक्षर दिखाई पडे और वो ये थे।

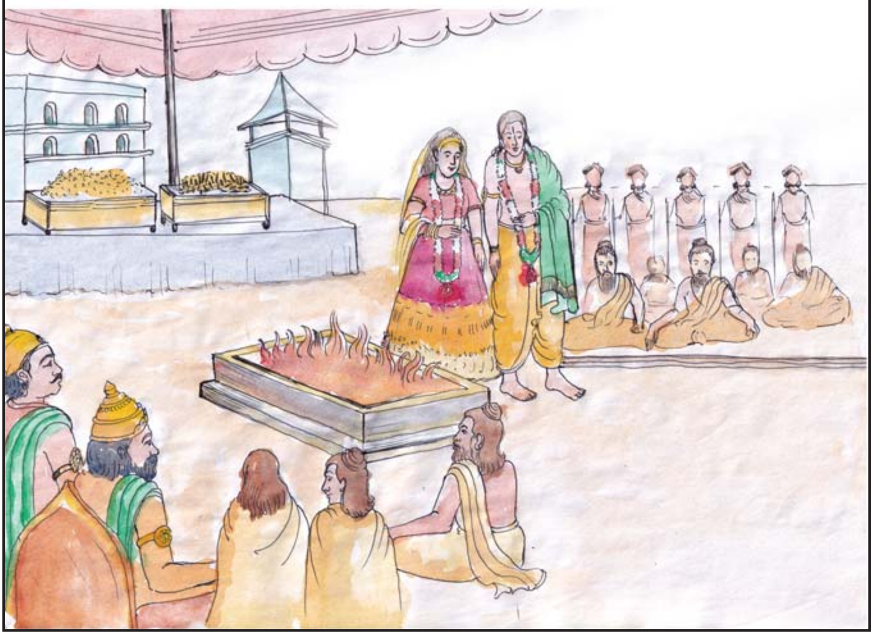

नीले पर्वतों की राजकुमारी। राजकुमार नीले पर्वतों का खोजकरते एक भिक्षुक के द्वार पर पहुँचा असने उस भिक्षुक के घर एक रात बिताई। सुबह होते ही भिक्षुक को नीले पर्वतों के बारे में पूछा तो उसे नीले पर्वतों के बारे में कुछ पता नही था। भिक्षुक ने सारे परियों को अपने मंत्रो से बुलाया। उसमे से कोई भी पक्षी नीले पर्वतों से नही था। एक पक्षी आखिरमें आयी भिक्षुक ने पूछा की उस पक्षी को देर कैसे हुआ। तो वो पक्षी बोली, नीले पर्वतों पर इतना मधुर संगीत बजरहा था। उस में भिक्षुक का बुलावा ठीक से सुनाई नही दिया। राजकुमारने पक्षी से राजकुमारी हिना के बारे में पूछा। पक्षी ने सारी कहानी बताते हुए कहा, राजकुमारी को एक जादूगर ने श्राप दिया था। वो राजकुमारी की शादी उसके बेटे से करना चाहती थी। पर राजकुमारी जादूगर के बेटे से प्रेम नही करती थी। जादूगर ने राजकुमारी को श्राप दिया की वो ''सोला साल'' तक सम्मोहण में रहेगी उस सोला साल में उसे अगर उस का सच्चा प्यार मिल गया तो वो जादूगर उस राजकुमारी के राज्य को छोडकर चला जाएगा। अगर उसे उस का सच्चा प्यार नही मिलातो, राजकुमारी को जादूगर के बेटे से शादी करनी होगी। राजकुमारी ने जादूगर से पूछा की उसे उसका सच्चा प्यार कैसे पता चलेगा। तब जादूगर ने बताया, उस महल में हरकोई खाना, पन्हा के लिए आयेगा परएक ही होगा जो बिना खाये पिये वो राजकुमारी के बारें मे पूछेगा। और राजकुमारी दो दिन सुबह उसे मिलने आयेगी। वो राजकुमारी के प्यार में सो नही पायेग। और राजकुमारी के लिए इंतजार करते रहेगा। वो ही उसका सच्चा प्यार होगा, कहकर जादूगर ने बतया।

पर जादूगर ने अपने बेटे को नौकर के रुप में राजकुमारी के पास भेजदिया। वो अगर राजकुमारी को उस का सच्चा प्यार मिल जाए तो जब राजकुमारी उसे दो दिन सुबह मिलनेआयेगी तो वो नौकर राजकुमारी के सच्चे प्रेंमी को सुई चुभाकर सुला देगा। इस तरह जादूगर ने राजकुमारी हिना के साथ छल किया। क्योंकि वो उस का राज्य हासिल करना चाहता था। जब राजकुमार ने पक्षी की बाते सुना तो उस ने कहा कि वही उस का सच्चा प्रेमी हैं। राजकुमार ने पक्षी को तलवार दिखाया। पक्षी ने कहा कि, वो एक जादूई तलवार है। उस से राजकुमार एक उडता हुआ रथ बनाया और भिक्षुकने राजकुमार को एक थैली दी। भिक्षुक ने कहा अगर राजकुमार थैली में जो भी चीजहै, उसे किसीके भी उपर छिडकेगा तो अपने आप सच बोलने लगेगा।

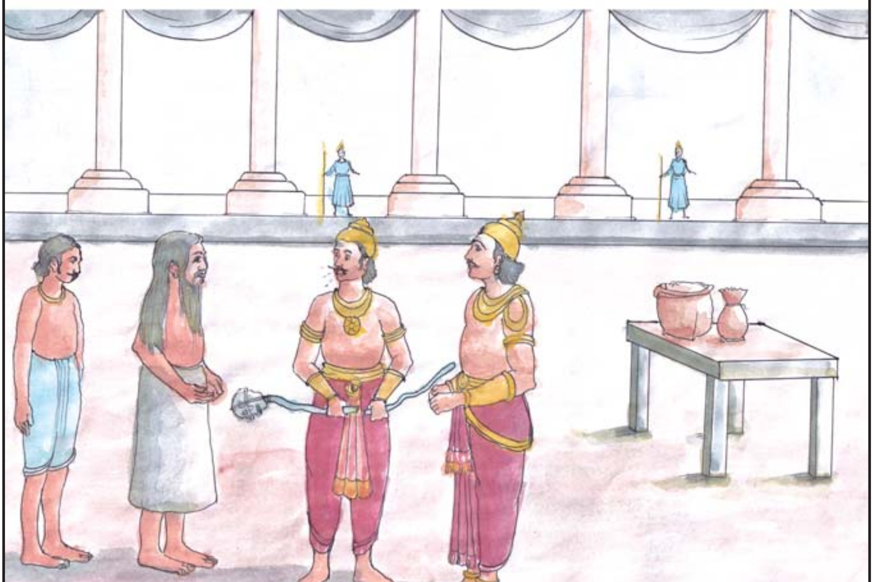

राजकुमार रथ पर सव र हुआ। जादूगर राजकुमारी को शादी के लिए जबरदस्ती कर रहा था। तभी राजकुमार आया और उस ने भिक्षुक के दिये हुए उस थैली के चीजसे जादूगर पे छिडकाया। जादूगर ने सारा सच बोल दिया। तभी जादूगर ने अपनी शक्ति के रहस्य के बारे में भी बता दिया। राजकुमार जादूगर के छडी छिन लिया। क्योंकि उसकी सारी शक्ति उसी छडी में था। जादूगर को काले कोठरी में डाल दिया गया। इस तरह राजकुमार, राजकुमारी हीना को बचा लिया। राजकुमकारी को नौकर के बात सुनकर संदेह हुआ था कि, राजकुमार उस के लिए इंतजार नही किया। इसीलिए वो अपनी एक निशानी राजकुमार के पास छोडकर चली गई। अगर वो तलवार राजकुमार के पास नही होता तो शायद वो राजकुमारी को कभी ढूंढ नही पाता। पर सच्चा प्यार कहा भी हो, वो कभीना कभी मिलही जाता है।

संदेश :

सच्चा प्रेम चाहे कही भी हो वो किसीना किसी दिन मिल ही जाता है।

हमें मन में विश्वास छोडना नही चाहिए। मन में चाह हो तो राहे अपने आप बन जति है।

सूर्य की बहन

एक समय था। जब शादियाँ दान वोंसे युध्द करके, जादूसे होती थी। तब राजा, रानियों का पालन था। सूर्य, चंद्र परिवारों से मिला जा सकता था। उस समय एक बलवान राजा था। उसका बेटा था। जो बहुत सुंदर था। वो हमेशा अपने मालीक के बेटे के साथ खेलता था। वो साथ खेलते, खाते, कुदते थे। पर ये सब राजा को पसंद नही था। कहानी शुरु होती है। एक बुरे दिन से राजा का बेटा अपने दोस्त के साथ खेल रहा था। तभी उन मे से मालीक के बेटे को एक सोने का पंक मिला और उन दोनों में झगडा हुआ। वो दोनो सोने के पंख के लिए लड रहे थे। तभी राजा वहा आया उस से दोनो बच्चों ने सारी बात बतायी। वो राजमालीक के बेटे को अपने बेटे से आगे नही जाने देता। इसीलिए उस ने मालीक के बेटे ''रेनेक'' को उस सोने की पंख वाली मुर्गी को ढूंढने को कहा जो वो असंभव था। रेनेक

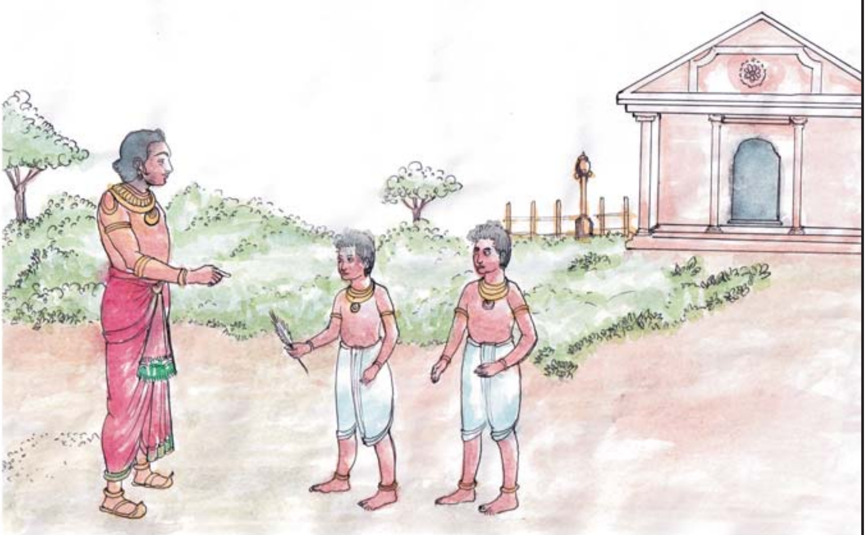

और राजा का बेटा बगीचे में ढूंढे और वो मुर्गी कही नही मिली। रेनेक ने राज्य के बाहर जाके ढूंढने का फैसला किया। पर राजा का बेटा मना करने लगा। वो भी उस के साथ जाना चाहता था। पर रेनेक ने राजा के आज्ञा के अनुसार वो अकेला ही चला गया। जब वो जंगल में जाने लगा तो उसे एक बोलने वाली लोमडी आवाजलगाई, वो उसकी सहयता करना चाहती थी। उस लोमडी ने कहा पूरब की दिशा के ओर सूर्य की बहन रहती है। उन के पास छः सोने की मुर्गीयां है। ये पंख उन्ही मुर्गीयों मे से किसी एक की होगी। लोमडी ने रेनेक को लेके गया। रेनेक को छः मुर्गीयों मे से एक मुर्गी का सोने का पंख दिखाई नही दिया। वे दोनों महल के अंदर गये। महल सोने का था। सूर्य की एक बहन नीचे आयी। उसे पता था कि रेनेक किसलिए आया है। क्योंकि उसकी छोटी बहन की भविष्यवाणी में लिखा गया था कि जो भी सोने की पंख के लिए सोने की मुर्गी को ढूंढता हुआ आयेगा। वो नन्ही सूर्य की बहन से भविष्य में शादी करेगा। पर सूर्य की बडी बहन उसे बताती हैकि उसकी छोटी बहन को दानवों ने उठाकर ले गये है। इसीलिए रेनेक को पहले उसे छुडाना होगा। रेनेक ने कहा ''मेरी सूर्य की नन्ही बहन के साथ शादी होगी या नही मुझे नही पता पर मैं जरुर उसे दानवों से बचाउंगा'' कहकर लोमडी के साथ दानवों की गुफा के पास जाता है। बडी खिडकी मे से सूर्य की बहन को देखता है। दानव सब नाच रहे थे। पर सूर्य की बहन गुस्सेमे और दुःखी बैठी हुई थी। रेनेक ने लोमडी को एक उपाय बताया। उसके अनुसार रेनेक सूर्य की बहन के साथ नृत्य करता है। तभी लोमडी उस गुफा के सारे बत्तीयाँ बुझा देता है।

तभी सूर्य की बहन के माथे पर एक चमकता तारा होता है। उसी के उजाले से वो तीनों वहां से भाग जाते है। सूर्य की बडी बहन कहती है। आजसे दस साल बाद मेरी बहन तुम्हारे घर आयेगी। तुम से विवाह के लिए वो यहां तुम्हे लेके आयेगी। रेनेक सूर्य की बडी बहन कि बाते सुनकर सोने की मुर्गी को लेकर अपने राज्य चला जाता है। वो सारी बात अपने दोस्त और राजा को बताता है। राजा सोचता है। सूर्य की नन्ही बहन के लिए अगर कोई लडका उचित होगा तो वो है। उस का बेटा इसीलिए वो जब सूर्य की बहन दस साल के बाद आयेगी, तो उस के सामने वो असंभव शर्त लगाके वो उस शादी को बर्बाद कर देगा। दस साल बीत गये राजा के बेटा और रेनेक सुंदर, बुध्दीमान, युवक में बदल गया। वो एक राजा के बेटे के साथ बगीचे में धनुषबाण चला रहा था। तभी आसमान में उजाला छा गयी। सूर्य की नन्ही बहन सोने के रथ पर आ गयी।

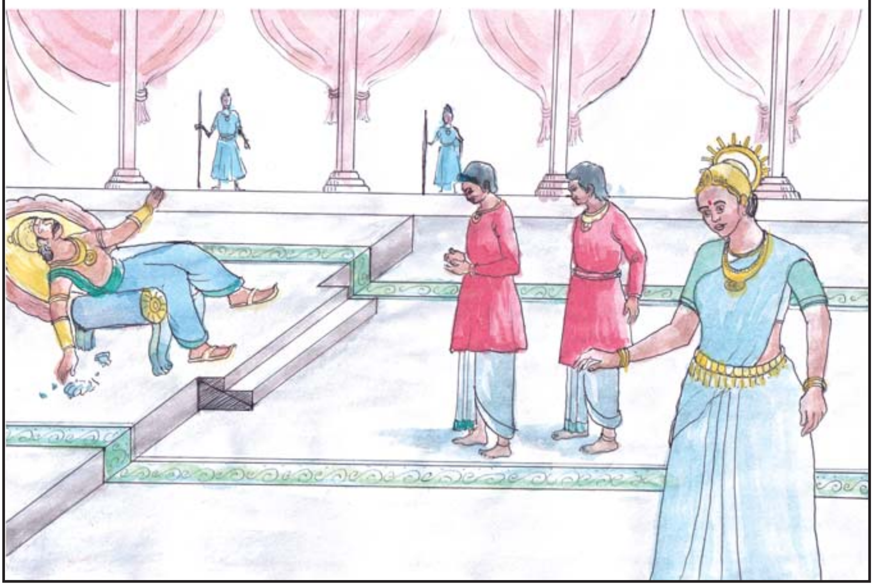

राजा के बेटे ने उसे स्वागत किया। पर राजा ने उसे पूछा तुम्हारी जैसी शक्तिशाली लडकी अपने जान बचाने के लिए इस लाचार लडकेकी सहायता क्यों पडी। वो कहनेला की वो इस भविष्यवाणी को नही मानता। इसीलिए वो सूर्य की बहन के सामने तीन शर्ते रखा वो है, राजाके सारे जंगलों को एक ही रात में जलाकर फिर से जंगल बनाने होंगे। दूसरी उस राज्य के सारे झील और तालाबों को सुखाकर फिर से भरने होंगे। तीसरी असमान के सारे पक्षीयों को नष्ट कर के उन्हें फिर से जीवित करना होगा। इन शर्तों को सुनकर राजकुमार ने कहा, यो तो निर्दयता होगीना पिताजी। पर राजा ने कहा मैं फिर से सबकुछ ठीक करने की मांग कर रहा हूँ। तब सूर्य की बहन ने कहा, तुम कैसे राजा हो, एक पल के लिए ही ना सही तुम किसीको भी कष्ट क्यों देना चाहते हो। मैं तुम्हारे शर्तों को पूरा करुंगी। पर मेरे हिसाब से कहकर उसने उस राज्य की सारी लकडियों की सामान को टूट जाने को कहा।

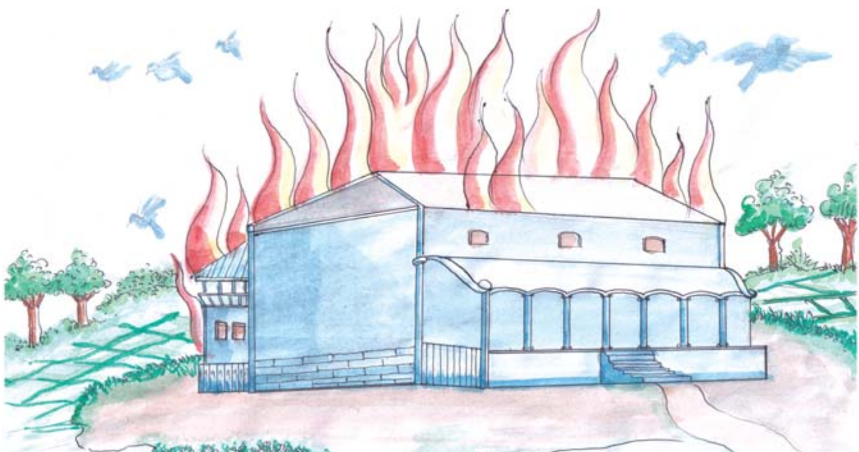

तब राजाका सिंघासन भी टूट गया। राजा नीचे गिर गया। सारेबेजान पक्षियों को जीवित कर दिया और महल को जला ने लगी, ये सब देखकर राजकुमार अपने पिता के तरफसे माफी मांगा। पिता भी आपने किये के लिए शर्मिंदा होकर माफी मांगा। उस तरह सूर्य की बहन से रेनेक ने कहा, क्या हमें इसीलिए शादी करनी होगी की भविष्य में लिखा हुआ है? तब सूर्य की नन्ही बहन ने बताया, नही तुम हमारे राज्य चलो अगर हम एक दूसरे को पसंद करने लगे तो हमारी भविष्य की बात सच हो जाएगी। तभी हम शादी करें गे। तब तक हम शादी नही करेंगे। कहकर रेनेक को अपने साथ ले गई।

राजकुमारी उनके लिए सच्चे मन से काम ना किया की वो दोनो अपने जिंदगी में खुश रहें। हमे नही पता की उन दोनों की शादी हुई या नही। पर वो लोग राजा को अच्छी सबक सिखाकर चले गये। राजा भी अपने बेटे के नेक विचारोंसे बदल गया।

संदेश :

एर राजा को अपने राज्य की हित में सोचना चाहिए। ना की राज्य की बुराई के बारे में तभी प्रजा सुखशांती से रह पायेगी। इसीलिए कहते है। यथा राजा तथा प्रजा।

चार लडकियां और राजा

एक राज्य का राजा वो छोटी सी उम्र में बहुत सफल कार्य कर चुका था। वो एक समझदार और अच्छा राजा था। उस के शासन में उस की प्रजा बहुत खुश थी। वो अपने दरबार में सभा लगाता है। अपने मंत्रियों के साथ शासन के बारे में बातचित करता। पर उसे अपने राज्य में मन नही लगता। वो अपने घोडे पे बाहर के जंगलों में कई प्रकार के स्थानों पर सवारी करता। वो हमेशा बाहर कोई ना कोई उत्साह पूर्वक कार्य करता रहता। एक दिन वो अपने राज्य के पास बगीचे में सवारी करने लगा। वो एक बगी चे में चार लडकियों को देखता है। वो आपस में बाते करते रहते है। राजा उन के बातें सुन ने लगता है। उनमें से एक लडकी मिठाई खाते कहती है। कि मीठा कितना स्वादिष्ट होता है। उस के जैसा स्वादिष्ट कुच भी नही है। तभी दूसरी लडकी कहती है। दूध सब से स्वादिष्ट होता है।

तीसरी लडकी कहती है। सबसे स्वादिष्ट तो प्रेम होता है। उस के सामने सबकुछ व्यर्थ है। तब आखरी और चौथी लडकी कहती है। सबसे श्रेष्ठ और स्वदिष्ठ तो बुध्दी होती है। इस संसार में उससे बढकर कुछ भी नही है। इस तरह वे लोग आपस में बाते करते रहते है, तो उनके पिता आकर उन्हें ले जाते है। राजा उन चार लडकियों के घर जाकर उन के दरवाजों पर निशान लगा देता है। अगले दिन अपने सैनिकों को भेजकर निशान लगी हुई घरों के मालिकों को बुलाने को कहता है। उन चार लडकि यों के पिताजी राजदरबार में पहुंचते है। राजा उन से उन की बेटियों को राज्य बुलाने को कहता है। वे घबराकर कहते है, अविवाहित लडकियोंको इस तरह राज्य आना अच्छा नही होगा। उन लडकियोंको चार रथों मे छुपाकर लाया जाता है। याने की रथों को परदा लगाकर लाया जाता है। वो लडकियां एक कमरे में बैठती है। उनमे से पहली लडकी को बुलाया जाता है। उस से राजा पूछते हैकि वो बगीचे में अपने दोस्तों के साथ क्या बात कर रही थी। तो वो कहती हैकि उस ने राजा के बारे में कुछ भी उल्टे सीधे बाते नही बोली। तब राजा कहता है। मुझे पता है, तुम मेरे बारे में नही बात कर रही थी। पर मीठा के बारे में बात कर रही थी। तब लडकी बताती है। मीठा सब से स्वादिष्ट होता है। मंत्री कहता है। वो तो शाकाहारी परिवार से है। तुम तो मीट के स्वाद को चखी नही हो। पर तुम्हें उसका स्वाद कैसे पता? कहकर पूछता है। तब लडकी बताती है। हर कोई मीठा को बडे चाँव से खाता है। कुछ भी बच जाता है। पर मीट नही बचता। कुत्ता भी एक हड्डी को पूरी तरहे से खाता है। इस तरह देखा जाए तो सारे प्राणी मीटको पसंद

करते है। राजा भी उस को जवाब से सन्तुष्ट होकर उसे एक तोफा देता है। दूसरी लडकी को बुलाया जाता है। वो दूध के बारे में बताती हैकि दूध से बनी हर एक चीजअच्छा रहता है। कुछ लोग ही दूध को पसंद नही करते, पर ज्यादातर लोग दूध को पसंद करते है. वो लडकी कहती है। उसे दूध से एलर्जी है। पर वो इन सब बातों को देखकर अच्छे से समझकर बता रही है। इस से राजा उस लडकी को भी तोफा दे देता है। तीसरी लडकी प्रेम के बारे में बताती है। वो कहती है। उस के माता पिता एक दूसरे के प्रेम में खुश है। उस ने देखा था। एक हिरण अपने बच्चे को प्रेम करते वक्त इस तरह प्रेम से हर एक रिश्ता मजबूत बनता है। उसे भी राजा तोफा देते है। चौथी लडकी जिसका नाम था डोर्ला । वो बुध्दी के बारे में बताती है। बुध्दी से झूट के रास्ते को हम पहचान सकते है। वे कहती है, हर कोई एकना एक दिन झूठ बोलता है। पर उस झूठ को हम बुध्दी से ही पहचान सकते है। तब राजा कहता है। मे तो अब तक किसी से झूठ नही कहा। मुझे कोई भी झूठ बोलते वक्त अपने बुध्दी से नही पकडा। तब लडकी कहती है। आप भी झूठ जरुर बोलेंगा। तब राजा को गुस्सा आता है। वो उस लडकी को साबित करने को कहता है। वो लडकी उसे हजार सोने के सिक्के देने को कहती है। और छः महिने का समय राजा ऐसा ही करता है। जब छः महिने बीत जाते है। राजा उस लडकी को बुलवाता है। वो लडकी राजा को उन सोने के सिक्कों से बनाई एक घर को ले जाती है। राजा और उस के दो मंत्री डोर्ला के घर आते है। डार्ला कहती है, उस घर में एक कमरा है। जिस में परी है। वो परी सिर्फ दयालू, समझदार, अच्छे इन्सानकोही

दिखती है। पहले उस कमरे में एक मंत्री जाता है। उसे वो परी नही दिखती है। जब वो बाहर आता हैतो अपने इज्ज़त को बचाने के लिए वो झूठ बोलता हैकि उसे परी दिखाई दी। दूसरा मंत्री भी ऐसा ही करता है। उसे भी परी दिखाई नही देती है। पर वो भी झूठ बोलता है। आखरी में राजा उस कमरे मे जाते है। उन्हें भी वो परी दिखाई नही देती है। राजा भी अपने इज्ज़त को, शान को बचाने के लिए झूठ बोलता हैकि उसने परी से बात भी की। डोर्ला ने राजा को पूछती हैकि राजा ने सच में परी से बात की। राजा कहता है, उस ने सच में परी से बात की। वो झूठ नही बोल रहा है। डोर्ला ने कहा, राजा आप अभी अभी मुझ से झूठ बोले है। उस कमरे में कोई भी परी नही है। राजा को उस लडकी की शर्त याद आती है। तभी राजा मान लेता हैकि वो झूठ कहता था। और उस लडकी की बुध्दी की प्रशंसा करता है। और उसे अपनी रानी बनाता हैं। कि राज्य चलाने में उस की मदत करे गी। इस तरह डोर्ला भी राजा को पसंद करती है। उन

दोनों की शादी हो जाती है। वे दोनों अपने राज्य की पूरी तरहा से शासन करते है। राजाभी कभी भी झूठ ना बोलने का फैसला करता है।

संदेश :

हर कोई कठिन परिस्थिती यों में झूठ का सहारा लेता है। पर किसीना किसी दिन बुध्दी झूठ पर हावी होती है। इसीलिए मनुष्य को कभीभी झूठ बोलना नही चाहिए।

झूठ का सहारा ज्यादा दिनतक नही टिकता है। क्योंकि सचका कोई मुकाबला नही हैं।

हंसिनी की झील

एक दूर घने जंगल में एक झील था। उसे हंसिनी की झील कहते थे। उस झील में एकही हंस रहता था। पर उस झील की एक रहस्य था। उस झील में रहने वाली हंसिनी एक राजकुमारी थी। उसकी दयालुता, करुणामय व्यवहार एक दुष्ट जादूगर को पसंद नही था। उस ने उसे हंस बनने का श्राप दिया। जब उस राजकुमारी को उसका सच्चा प्यार मिल जायेगा। उसका श्राप टूट जायेगा। वो हंस दिन में हंस के रुप में झील में रहता था। रात होने पर सूर्यास्त के बाद वो हंस राजकुमारी के रुप में बदल जाता। उस जंगल के पास एक राज्य था। उस राज्य का एक राजकुमार था। वो निर्दय और कठिन था। उसकी माँ ने उसे एक घोडा दिया और उसका नाम रखा गया स्टाम्पर। राजकुमार से मिलने तीन राजकुमारीयां आयी। तो राजकुमार अपने माँ से कहा, मुझे पता है, आप चाहते हैकि मुझे इनमे

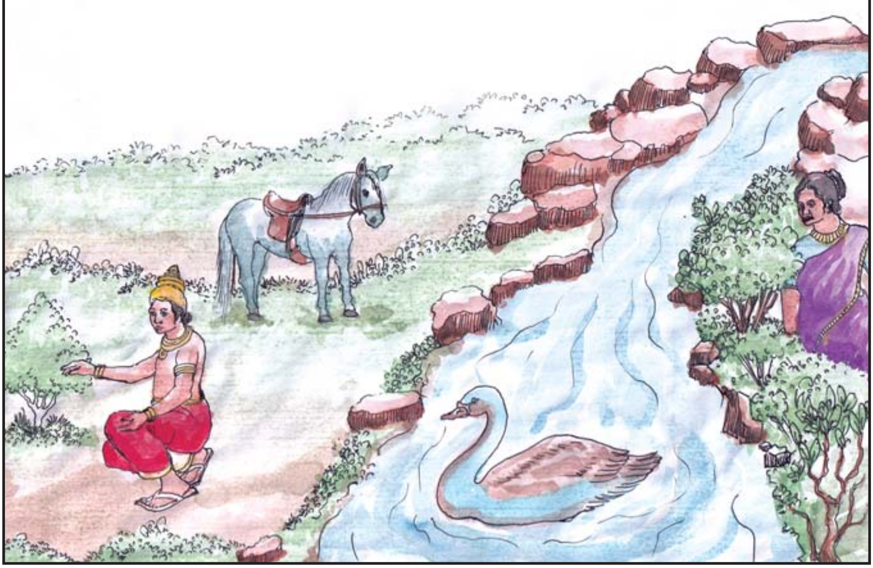

से किसी एक से शादी करनी होगी। पर ये मेरा पर्वा नही करते। ये मुझसे इसीलिए शादी करना चाहते हैकि मैं एक राजा हूँ। राजकुमारीयों ने सोचा की राजकुमार कितने बत्तमीजहै। राजकुमार ऐसा कहकर अपने घोडे को लेकर जंगल में चला गया। घोडा थोडे दूर जाकर राजकुमार को नीचे गिरा दिया। राजकुमार झाडीयों मे जाके गिरा। उसे घोडे पर बहुत गुस्सा आया। उसने घोडे से कहा, तुम्हें इस के लिए जरुर सजा मिलेगी। तभी राजकुमार को हंसिनी की झील दिखाई दी। वो झील के पास गया और गुस्स`में फूल तोडने लगा। वो क्रोध में था।

एक पेड को पीछे से उसे राजकुमारी देख रही थी। उसने राजकुमार को फूल तोडते हुए देख लिया था। वो गुस्से से राजकुमार के पास आकर उसे फूल तोडने के लिए मना करता और वो उस फूलपर हाथ फिराई। तो वो पहले जैसे होगये राजकुमार ये सब देखकर हैराण था।

राजकुमारी ने अपना नाम ओडिट बताया और राजकुमार ने अपना नाम सिगफ्रेड बताया। राजकुमारी ने कहा फूलोंमें भी जान होती है। उस के भी भावनाएं होती है। उस ने राजकुमार से कहा अगर तुम दूसरों की मदत करोगे तो तुम्हें अच्छा लगेगा। तुम्हारे चेहरे पर हंसी आयेगी। (राजकुमार को ये सब बकवास लगा) और वो वहा से चला गया। जब वो लौट रहा था। उसे एक बूढा आदमी दिखा और वो बूढा राजकुमार से पानी मांगा। राजकुमार को, राजकुमारी के बाते याद आयी और वो पानी दे दिया। तब बूढे आदमी ने उसे धन्यवाद किया तब राजकुमार को अच्छा लगा और

वो मुस्कुराया। इस तरह वो अपने राज्य में आयी हुए राजकुमारीयों का अभिनंदन किया। उसे अच्छा लगा। वो अब दयालू हो गया था। वो फिर से रात को उस झील की राजकुमारी से मिलना चाहता था। वो अपने घोडे पर झील के पास आया और राजकुमारी को धन्यवाद कहा। राजकुमारी ने उसे जंगल के सारी खूबसूरत जगह दिखाई और इस तरह दोनों दोस्त बन गये। राजकुमार, राजकुमारी की सुंदरता, दयालू गुण को देखता रह गया। इसी तरह राजकुमार रोज, झील की राजकुमारी से मिलने जाते है। एक दिन राजकुमार के माँ ने कहा कि राजकुमार को आजरात सारी राजकुमारीयों के साथ नृत्य करना होगा और किसी एक को चुन कर शादी करना होगा। और राज्य के सिंघासन को संभाल ना होगा। राजा ने रातको राजकुमारियों के साथ नृत्य किया। और नृत्य का आयोजन होते ही राजकुमार जंगल में जाकर राजकुमारी से मिलने उसे अपना प्यार का इजहार किया। तभी सूर्योदय हुआ। राजकुमारी हंस के रुप में

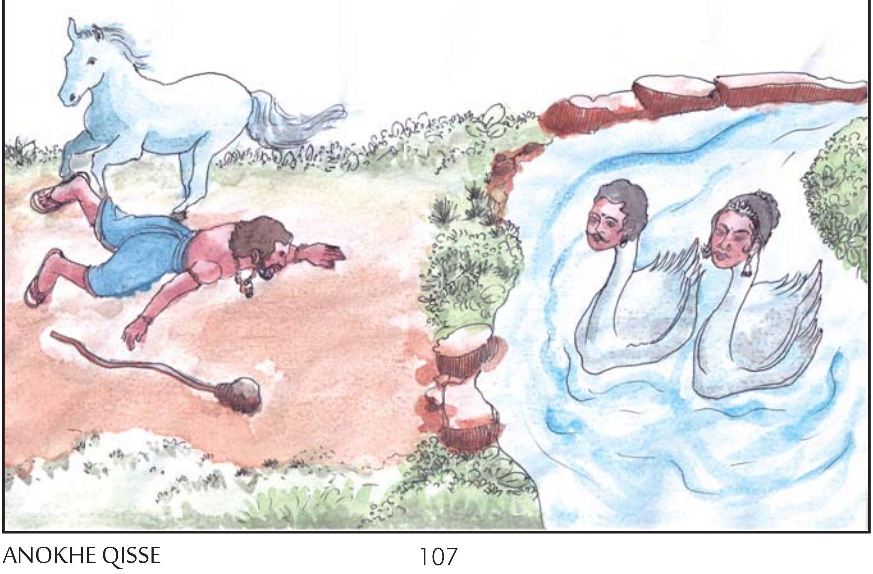

बदल गयी। राजकुमारी ने, राजकुमार को सारी कहानी बताई, तभी जादूगर रोबर्ट आया। वो राजकुमार को चेतावनी देने लगा।

राजकुमार ने कहा की वो राजकुमारी के लिए कुछभी कर सकता है। तभी रोबर्ट ने राजकुमार को भी हंस में बदल दिया। राजकुमारी रोतबर्ट पर गुस्सा हुई तभी रोतबर्ट राजकुमारीको अपनी शक्ति से घायल किया। राजकुमार रोने लगा। अपने प्यारी राजकुमारी के लिए। तभी रोतबर्ट को घोडे ने पिछे से लात मारा तो उसकी छडी नीचे गिर गया। स्टाम्पर ने उस की छडीको तोड डाला तभी जादूगर रोतबर्ट भी गायब हो गया। राजकुमार, राजकुमारी अपने रुप में आ गये। वो दोनों अपने राज्य पहुंचे उनकी शादी के लिए राजकुमार की मां राजमाता भी मान गई क्योंकि उसे राजकुमारी की सुंदरता, दयालुता के गुण पसंद आये थे।

उन दोनों की शादी हो गई और राजकुमार सिगफ्रेड अपने सिंघासन को संभालने लगा। और घोडा स्टाम्पर को उस राज्य की सेनाधिपती बनाया गया।

संदेशः

बुरे निर्दय, कठोर शैतान लोगों का अंत कभीभी बुराही होता है। करुणा, दयालुता से हम किसीभी चीजको बदल सकते है। इसीलिए इन्सान को दयालुता, करुणामय स्वभावों को छोडना नही चाहिए। बल्की अपनाना चाहिए।

शबक का बगीचा

गौण पात्र : राजी परिया : फ्लोरेन्स, हेजल

एक शहर में एक प्यारा सा ''राजी'' नामका लडका था। वो बहुत आलसी और हमेशा सपनों की दुनिया में खोये रहता था। एक दिन राजी को माँ सुबह, सुबह आने के लिए आवाजदेती है। राजी बहुत ही मुश्किल से उठता है। और जब नाश्ते के लिए बैठता हैतो, तबभी सपने देखता है। उस की माँ जल्दी से नाश्ता खतम करने को कहती है। क्यों कि वो स्कूल के लिए लेट हो रहा था। राजी स्कूल बस में भी अपने सपने देखना शुरु कर देता है। क्लास में जब टीचर पढाती हैतो राजी को क्लास में से बाहर जाने का मन करता है।

पर टीचर कहती है। सब लोग मैं जो भी पढाती हूँ, उसे मन लगाकर सुनना और वो राजी को प्रत्येक रुप से कहती है। राजी अपने पुस्तकके पन्ने निकालता हैतो, उसे एक रंग बिरंगी पन्ना दिखता है। तब राजी के साथ एक चमत्कार होता है। वो उस पन्नेके अंदर चला जाता है। वो खुबसुरत दुनिया में पहुँच जाता है। वहा उसे दो परिया मिलती है। राजी अपने आँखोंपे विश्वास ही नही करता तब परी कहती है। राजी तुम्हारा परिलोक में स्वागत है। परी कहती है, सिर्फ खुशनसीब बच्चे ही इस परीलोक में आ सकते है। दो परियों मे से ''फ्लोरेन्स'' परी कहती है, इस लोक में दो हिस्से है। एक मेरावाला जो उस में सिर्फ खाना और आराम करना होता है। ''हेजल'' परी कहती है, मेरा वाला हिस्सेमें कसरत, खेल, प्रकृती के बारे में पढना है। तभी खाना मिलता है।

तब राजी को तो आराम जिंदगी पसंद है। तो वो फ्लोरेन्स के साथ जाता है। उस दुनिया में बहुत खाना था। कई प्रकारके खाने के पदार्थ थे। चोकलेट की नदी, केक के पेड, फल इस तरह सब कुछ किसी ना किसी खाने के पदार्थ से बनाया गया था। वहा जेल्ली के बेड होते है। पर राजी को परी सोने से इनकार करते हुए कहती है। यहाँ खाना और सिर्फ आराम करना होता है। सोना मना है। राजी उसे आपका कस्टड देती है. जीसे वो जगा रहेगा। राजी डर जाता है। और वहां से भाग जाता हैऔर हेजल के हिस्से में पहुँच जाता है। वो घर जाना चाहता था, पर जा नही सकता। वो धीरे, धीरे खेलने लगता है। वहां कई प्रकार के खेल होते है। इस तरह वो कसरत भी करता है। खेलते खेलते पडता भी है। जब राजी अपने दुनिया में (क्लास में) लौट आता है। तो टीचर जो भी प्रश्न पूछती है। उसका

सही उत्तर देता है।

टीचर हैराण रहती है। पर राजी के उत्तर से खुशी होती है। इस तरह राजी शबक के बगीचे के वजाह से आलसी से, होशियार और अच्छा बच्चा बन जाता है।

संदेश :

हमे आलसी बनना नही चाहिए। बल्की कसरत करना है। और अच्छे से पढते हुए हमें हमारी जिंदगी में आगे बढना है।

About the Author

assort

SCHOOL OF
EMERGING WRITERS

www.schoolofemergingwriters.com

ISBN 978-93-95944-14-4